

उपन्यास और किन्नर जीवन
(विशेष संदर्भ: पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ के हिन्दी विषय में मास्टर
ऑफ फिलॉसफी की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबन्ध



शोध-निर्देशक
प्रो० सर्वेश कुमार सिंह
विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष
हिन्दी विभाग

शोध छात्रा
रजनी रानी
पंजीयन क्रमांक : 873/20
हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

2022



**माता-पिता
एवं
शिक्षकगण को समर्पित**



घोषणा पत्र

मैं, रजनी रानी यह घोषणा करती हूँ कि उपन्यास और किन्नर जीवन (विशेष संदर्भ: पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा) प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह शोध कार्य मैंने प्रो० सर्वेश कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूरा किया है।

मैं घोषणा करती हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित सभी नियमों का पालन किया है। मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह लघु शोध-प्रबन्ध पूर्णतः साहित्यिक चोरी से मुक्त है।

दिनांक : 28.04.2022

Rajni
शोध छात्रा

रजनी रानी
पंजीयन क्रमांक : 873/20
हिन्दी विभाग
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ

CERTIFICATE

This is to certify that the M.Phil. Dissertation titled “उपन्यास और किन्नर जीवन (विशेष संदर्भ: पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा)” submitted by **Ms. Rajni Rani** is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other university.

The M.Phil. Dissertation submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow satisfies all the requirements as stipulated in the Master of Philosophy (M.Phil.) Regulations (2016) as amended in 2019 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Master of Philosophy of the University.

Date: 28.04.2022



Supervisor

आचार्य सार्वेश सिंह / Prof. Sarvesh Singh
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
Head, Department of Hindi
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ- 226025
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow- 226025



Head of the Department

हिन्दी विभागाध्यक्ष, Head of Hindi
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Lucknow

आभार

किसी भी नवीन कार्य को करने के लिए हमें सहयोग तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जिसके सहारे हम अपने कार्य को मूर्त रूप देने में सफल हो पाते हैं। मेरे इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में जिन लोगों का सहयोग तथा मार्गदर्शन रहा है उन सबके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने माता-पिता के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ। मेरी इस शैक्षिक सफलता के पीछे मेरी जन्मदात्री माँ श्रीमती राजदुलारी और पिता श्री मुकेश जी की प्रेरणा थी उनका आशीर्वाद और वात्सल्य की छाया मुझे सदैव मिलती रहे और मैं जीवन में प्रगति पथ पर इसी प्रकार आगे बढ़ती रहूँ। उनकी असीम कृपा और आशीर्वाद से आज मेरा यह लघु शोध कार्य संपन्न हो पाया है।

तत्पश्चात मैं अपने एम.फिल लघु शोध-प्रबंध के शोध निर्देशक आदरणीय गुरुवर प्रो. सर्वेश कुमार सिंह (विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष) के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर विषय चयन से लेकर संपूर्णता तक सरलता तथा आत्मीयता का परिचय देकर मेरे विषय को सफल बनाने में सहायता की। वे सदैव मुझे सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते रहे और उनका सहयोग मेरे शोध कार्य को आसान बनाता रहा। उनके आत्मीय स्नेह, आशीर्वाद, निर्देशन एवं प्रोत्साहन के प्रति मैं आजीवन ऋणी रहूँगी।

मैं अपने हिन्दी विभाग के अन्य गुरुजनों प्रो. रामपाल गंगवार, डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव, डॉ. शिवशंकर यादव, डॉ. नमिता जैसल, डॉ. प्रीति राय के प्रति आभारी हूँ इनसे प्राप्त सुझाव मेरे शोध कार्य के लिए लाभप्रद रहे। अपने संपूर्ण शोध कार्य के दौरान मुझे अपने गुरु सुनील कुमार सुमन और जय कौशल का स्नेह और सहयोग भरा प्रोत्साहन समय-समय पर मिलता रहा, जिसके लिए मैं हृदय से उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरे इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण योगदान मेरे मित्र डॉ० अनीश कुमार का है जिन्होंने मेरी सबसे अधिक मदद की तथा मेरे इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में शोध कार्य के प्रारम्भ से लेकर अंत तक असीम सहायता की। उनके इस बहुमूल्य योगदान की मैं सदैव आभारी रहूँगी। इसी क्रम में मैं अपने प्रिय मित्र विजय जी का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध कार्य के दौरान मेरे मानसिक तनाव को कम कर मुझे आगे बढ़ने का हौसला दिया जिससे मैं इस लघु शोध कार्य को सफलातापूर्वक पूर्ण कर सकी। इसके साथ ही मैं अपने हिन्दी विभाग के पीएच.डी. शोधार्थियों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरे इस शोध कार्य में पूर्ण सहयोग दिया। मैं उन मित्रों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने मेरी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायता की।

मैं अपने दोनों भाइयों मोहित और मनीष के साथ-साथ मैं अपनी भाभी भावना, भतीजी सृष्टि को शोध कार्य पूर्ण करने में उत्साहवर्धन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ।

मैं अपने विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने इस कार्य में मेरी सहायता की। मैं अपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के प्रति भी विशेष आभारी हूँ जिनमें उपलब्ध पुस्तकों तथा ग्रंथों से मुझे सहयोग मिला। मैं विभिन्न विद्वानों की पुस्तक-पुस्तिकाओं और लेखों से प्राप्त सहयोग से उनका धन्यवाद करती हूँ।



भूमिका



भूमिका

‘उपन्यास’ हिन्दी साहित्य की आधुनिक एवं चर्चित विधा है। यह विधा लोगों को सुग्राह्य बन पड़ी है। उपन्यास की परिभाषा तो पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने बहुत गढ़ी लेकिन अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं स्वीकार की जा सकी है। इसलिए उपन्यास के स्वरूप पर विचार बराबर होता आ रहा है। उपन्यास साहित्य में आज के आधुनिक विषयों को बहुत ही बारीकी और आसानी से अभिव्यक्त किया जा रहा है। दलित, आदिवासी, स्त्री, वृद्ध, अल्पसंख्यक, किसान और किन्नर जैसे हाशिए के विषय उपन्यास साहित्य में ही इस प्रश्न का जोर-शोर से उठाए जा रहे हैं। चित्रा मुद्गल जी ने भी अपने उपन्यास साहित्य में मुख्यतः स्त्री, वृद्ध और किन्नर जीवन को अभिव्यक्त किया है। स्त्री जीवन से संबंधित इनका उपन्यास ‘एक जमीन अपनी’ और ‘आवां’ है, वृद्ध जीवन से संबंधित उपन्यास ‘गिलिगडु’ और किन्नर जीवन से संबंधित ‘पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा’ है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय— **“उपन्यास और किन्नर जीवन (विशेष संदर्भ : पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा)”** है जिसको मैंने पाँच अध्यायों और उपसंहार के अंतर्गत विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय उपन्यास का स्वरूप है जिसमें मैंने उपन्यास का अर्थ एवं उसकी अवधारणा पर सर्वप्रथम लेखन कार्य किया है। तत्पश्चात् उपन्यास का भारतीय एवं पाश्चात्य स्वरूप क्या है? उसके अंतर्संबंध क्या हैं? और उस पर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण क्या है इस पर बात की है। इतना ही नहीं उपन्यास और अन्य गद्य विधाओं पर बात करते हुए उपन्यास और अन्य गद्य विद्या के अंतर्संबंध पर भी बात की हूँ। अंत में समकालीन हिन्दी उपन्यास पर विचार करना समीचीन समझी हूँ।

द्वितीय अध्याय ‘समाज एवं किन्नर जीवन’ से संबंधित है। समाज की संरचना को बताते हुए उस संरचना में किन्नरों का जीवन कैसा है? यह बताने का प्रयास किया है। किन्नरों के कितने प्रकार होते हैं और समाज द्वारा बहिष्कृत वर्ग

कौन-कौन हैं यह भी बताने का प्रयास किया है। अंत में हिन्दी उपन्यासों में किन्नरों के जीवन का कैसा चित्रण हुआ है उसका लेखन मैंने किया है।

तृतीय अध्याय 'चित्रा मुद्गल का रचना संसार' है। इस अध्याय के अंतर्गत मैंने चित्रा मुद्गल जी के कथा-साहित्य (उपन्यास, कहानी, बाल उपन्यास और बाल कहानी) पर विस्तार और बारीकी से अध्ययन कर लेखन कार्य किया है। साथ ही उनके अन्य लेखन कार्य नाटक, अनुवाद, आलेख, संपादन का भी उल्लेख किया है।

चतुर्थ अध्याय 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा' में अभिव्यक्त किन्नर जीवन' है। इस अध्याय के अंतर्गत मैंने पाया है कि किन्नर समाज द्वारा बहिष्कृत और तिरस्कृत हैं। शिक्षा ग्रहण करने के लिए किन्नर उत्सुक हैं। समाज में अपनी पहचान चाहते हैं। घर वापसी के लिए किन्नर की माँ का अपने बेटे के लिए माफीनामा और किन्नरों के साथ भी वहशीपन के साथ हो रहे बलात्कार का मैंने इस अध्याय में अध्ययन किया है।

पाँचवा और अंतिम अध्याय नाला सोपारा: एक आलोचनात्मक अध्ययन है। इसके अंतर्गत नाला सोपारा उपन्यास और अन्य किन्नर जीवन केन्द्रित उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन किया है। नाला सोपारा उपन्यास पर अब तक हुए आलोचनात्मक अध्ययन नाला सोपारा उपन्यास में किन्नरों के जीवन की विशिष्टता और नाला सोपारा उपन्यास की भाषा एवं शिल्प विधान का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में मैंने किया है।

अंत में उपसंहार है, जिसके अंतर्गत मैंने यह बताने का प्रयास किया है कि मेरा शोध कितना मौलिक और मेरे शोध का उद्देश्य क्या है। मैंने शोध में क्या अंतिम तत्व पाया है यह उपसंहार के अंतर्गत बताया है।

किसी भी प्रामाणिक शोध की प्रामाणिकता उसके संदर्भ में निहित होती है। अतः अपने शोध विषय की प्रामाणिकता के लिए मैंने अंत में अध्याय के दौरान जिन-जिन पुस्तकों का अध्ययन किया है उसको नियमानुसार संदर्भ ग्रंथ सूची के अंतर्गत रखा है।



અનુક્રમણિકા



अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पेज न.
प्रथम अध्याय	उपन्यास का स्वरूप	
1.1	उपन्यास: अर्थ एवं अवधारणा	
1.2	उपन्यास: भारतीय एवं पाश्चात्य	
1.3	उपन्यास एवं अन्य गद्य विधाएँ	
1.4	समकालीन उपन्यास	
द्वितीय अध्याय	अध्याय 2— समाज एवं किन्नर जीवन	
2.1	सामाजिक संरचना एवं किन्नर जीवन	
2.3	सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्ग	
2.4	उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर जीवन	
तृतीय अध्याय	अध्याय 3—चित्रा मुद्गल का रचना संसार	
3.1	उपन्यास	
3.2	कहानी	
3.3	बाल उपन्यास	
3.4	बाल कहानी	
चतुर्थ अध्याय	अध्याय 4— पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर जीवन	
4.1	समाज द्वारा बहिष्कृत और तिरस्कृत जीवन	
4.2	शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्सुक किन्नर	
4.3	सामाजिक पहचान के लिए संघर्षरत किन्नर	
4.4	किन्नरों का यौन शोषण	
4.5	एक स्वर्गवासी माँ का अपने किन्नर बेटे के लिए माफीनामा	

पंचम अध्याय	अध्याय 5— पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा : एक आलोचनात्मक अध्ययन	
5.1	नाला सोपारा एवं अन्य किन्नर जीवन केंद्रित उपन्यास	
5.2	आलोचना एवं नाला सोपारा	
5.3	नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर जीवन का वैशिष्ट्य	
5.4	भाषा एवं शिल्प विधान	
	उपसंहार	
	संदर्भ ग्रंथ सूची	
	शोध आलेख	
	परिशिष्ट	



प्रथम अध्याय उपन्यास का स्वरूप



प्रथम अध्याय

उपन्यास का स्वरूप

उपन्यास साहित्य जगत् की एक ऐसी विधा है जो कविता, नाटक के बाद सबसे लोकप्रिय और लोकग्राह्य हुआ है। यह विधा आधुनिक काल में साहित्य संसार में उभरकर सामने आई हैं। इसके आगमन पर साहित्य जगत् में ऐसी हलचल पैदा हुई कि साहित्य प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी। अर्थात् उपन्यास आधुनिक मनुष्य के मन और मस्तिष्क पर राज करने लगा।

‘उपन्यास’ विधा कथा साहित्य के अंतर्गत आती है। कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी, उपन्यास और नाटक आते हैं। कहानी का स्वरूप छोटा होता है जबकि उपन्यास का स्वरूप बृहद् होता है, कथा मानव की आदिम प्रवृत्ति है। हालाँकि पहले यह सिर्फ मौखिक होती थी फिर धीरे-धीरे लिखित होने लगी तो इसके स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा और फिर यह दो रूपों में बँट गया— कहानी और उपन्यास।

‘उपन्यास’ कथा साहित्य की बृहद् विधा है। यह विधा जीवन के समग्र रूप को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। जीवन की इस समग्रता में अतिमानवीयता और चमत्कारपूर्णता का कोई स्थान नहीं है। यहाँ सिर्फ यथार्थ जीवन की प्रधानता है। अगर कोई प्राचीन मिथक आता भी है तो उसका यथार्थ जीवन के रूप में चित्रण होता है। अर्थात् उसका आशय यथार्थ समाज से जुड़ा रहता है। वह यथार्थ चाहे व्यक्तिगत हो या समष्टिगत। जिस प्रकार से महाकाव्य जीवन का संश्लिष्ट चित्रण करते हैं उसी तरह उपन्यास भी करता है लेकिन वो पद्य में और यह गद्य में। उपन्यास आधुनिक जीवन का महाकाव्य है। उपन्यास का स्वरूप प्रारंभ में भले ही एक बनी बनाई परिपाटी पर चला है लेकिन यह धीरे-धीरे समय के साथ परिवर्तित होता आया है। अर्थात् उपन्यास का स्वरूप लचीला है। वह जन चेतना का संवाहक हैं संवेदना के अनुसार अपनी भाषा-शैली और भावाभिव्यक्ति करता आया है। आज के उपन्यास की अपनी यह खास विशेषता है। किन्नर जीवन से संबंधित उपन्यासों में यह देखा जा सकता है। उपन्यास की बनी-बनाई परिपाटी

के बंधनों को तोड़कर किन्नर समाज के जीवन संदर्भ में एक नये स्वरूप का निर्माण करता हुआ नज़र आ रहा है आगे हम उपन्यास के अर्थ और अवधारणा के माध्यम से उपन्यास के स्वरूप का विश्लेषण करेंगे।

1.1 उपन्यास : अर्थ एवं अवधारणा

‘उपन्यास’ शब्द को व्याकरणिक दृष्टि से देखें तो यह ‘अस्’ धातु में ‘उप’ तथा ‘नि’ उपसर्ग और ‘अच्’ प्रत्यय के संयोग से बना हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ है— ‘पास रखना’ अर्थात् किसी बात या विचार को किसी के सन्निकट अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति। ‘उपन्यास’ अंग्रेजी भाषा साहित्य से हमारे यहाँ आया है इसलिए हम अंग्रेजी में भी इसकी भाषा वैज्ञानिक चीड़-फाड़ कर लेते हैं। अंग्रेजी भाषा में उपन्यास को 'Novel' कहते हैं। 'Novel' का अर्थ ‘नवीन’ है। यह नवीनता साहित्य में पथ की प्राचीनता की परिपाटी को स्थानान्तरित करती है। गुजराती भाषा साहित्य में अंग्रेजी की नकल करते हुए इसे ‘नवलकथा’ के नाम से अभिभूत कर दिया। इन विभिन्न भाषा में उपन्यास के नामकरण हुए लेकिन जो नाम सर्वग्राह्य और प्रचलित है वह है उपन्यास। इसी शब्द को विद्वानों ने ग्रहण कर लिया है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने ‘उपन्यास’ शब्द की सार्थकता को सिद्ध करते हुए हिन्दी साहित्य में 'Novel' का सबसे उत्कृष्ट पर्याय बताया है उनके शब्दों में— “उपन्यास वस्तुतः ‘नवल’ अर्थात् नया और ताजा साहित्यांग है परन्तु फिर भी जिस मेधावी ने कथा, आख्यायिका आदि शब्दों को छोड़कर अंग्रेजी ‘नॉवेल’ का प्रतिशब्द उपन्यास माना था, उसकी सूझ की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता, जहाँ उसने इस नए शब्द के प्रयोग से यह सूचित किया कि इस विशेष साहित्यांग के द्वारा ग्रन्थकार अपने मन की कोई विशेष बात, कोई अभिनव मत रखना चाहता है। इसलिए यद्यपि यह शब्द पुरानी परम्परा के अनुकूल नहीं पड़ता। तथापि उसका प्रयोग उपन्यास की विशिष्ट प्रकृति के साथ बेमेल नहीं कहा जा सकता।”¹

उपन्यास शब्द की अवधारणा का उद्भव कहाँ से हुआ यह विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कोई भारतीय परम्परा से जोड़ता है तो कोई पाश्चात्य परम्परा से। हम

दोनों परम्पराओं पर विचार करते हुए उपन्यास की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे। सर्वप्रथम, हम भारतीय परंपरा के अंतर्गत मानने वाले विद्वानों को देखते हैं। पं. किशोरीलाल गोस्वामी लिखते हैं— “जिस प्रकार साहित्य के प्रधान अंगों में ‘नाटक’ का प्रचार प्रथम यहाँ ही हुआ था, उसी तरह उपन्यास की सृष्टि भी प्रथम यहीं हुई थी।”²

इस अवधारणा के मूल में दशकुमार चरित, वासवदत्ता, श्री हर्षचरितम्, कादम्बरी और संस्कृत के लक्षण ग्रन्थ हैं। यह बात तो सही प्रतीत होती है कि कथा-साहित्य का मूल भारतीय इतिहास में पहले से देखा जा सकता है लेकिन उसका माध्यम काव्य था। काव्य के माध्यम से कथाएँ कही गई हैं।

दूसरे प्रकार के विद्वानों का कहना है कि उपन्यास को भारतीय परंपरा से जोड़ना एक विडम्बना है। यह बांग्ला फिर पाश्चात्य साहित्य से हिंदी में लाया गया। हालाँकि बांग्ला में यह पाश्चात्य से ही आया है। नलिन विलोचन शर्मा, लक्ष्मीसागर वाष्णीय जैसे विद्वान इस मत के हिमायती हैं। नलिन विलोचन शर्मा जी लिखते हैं— “हिन्दी उपन्यास की स्थिति हिन्दी काव्य से सर्वथा भिन्न है। संस्कृत के प्राचीनतम् काव्य से लेकर आधुनिकतम् काव्य की परम्परा अविच्छिन्न है। किन्तु हिन्दी उपन्यास, साहित्य का वह सौधा है जिसे अगर सीधे पश्चिम से नहीं लाया गया तो उसका बांग्ला कलम तो लिया ही गया था, न कि सुगंधु दण्डी, बाण की लुप्त परम्परा पुनर्जीवित की गयी थी।”³

अतः उपन्यास के मूल स्रोत पर विद्वानों में मतभिन्नता है लेकिन बांग्ला और पाश्चात्य परम्परा के अधिक निकट मानने वालों की संख्या ज्यादा है।

अंग्रेजी में उपन्यास को 'Novel' और 'Fiction' कहते हैं? लेकिन 'Fiction' शब्द अधिक प्रयोग होता है। फ्रेंच भाषा में 'Nouvelle' एवं 'Novar', इटली भाषा में 'Novas' एवं 'Novella' तथा लैटिन भाषा में 'Nouvelle' एवं 'Novells' उपन्यास के पर्याय है। इन सभी का मूल अर्थ है यथार्थ चित्रण, रोमांच।

‘उपन्यास’ को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है। यहाँ पर हम कुछ विद्वानों की परिभाषा के आधार पर उपन्यास की अवधारणा को स्पष्ट करने का

प्रयास कर रहे हैं। सर्वप्रथम हम उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी की परिभाषा प्रस्तुत करते हैं— “मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र-मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्त्व हैं।”⁴

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखते हैं— “आज के जमाने में उपन्यास एक ही साथ शिष्टाचार का सम्प्रदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्रण और पाकेट का थियेटर है।”⁵

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय जी लिखते हैं— “‘उपन्यास’ व्यक्ति की अपनी परिस्थितियों के साथ सम्बन्ध की अभिव्यक्ति के उत्तरोत्तर विकास का प्रतिनिधित्व करता है।”⁶

अब्दुल बिस्मिल्लाह लिखते हैं— “उपन्यास के माध्यम से अपने समाज को और जीवन के विविध अनुभवों को गहराई के साथ अभिव्यक्त किया जा सकता है।”⁷

मृदुला गर्ग मानती हैं— “अनजाने में हम शायद इसलिए भी उपन्यास को चुनते हैं, क्योंकि वह हमारे जीवन की विडंबना को आकृति देता है।”⁸

उपन्यासकार हृदयेश ने उपन्यास को परिभाषित करते हुए लिखा है— “उपन्यास अपने में समानान्तर सृष्टि है, प्रति सृष्टि यह अधिक गांभीर्य और गरिमा के साथ की गयी एक लम्बी यात्रा है।”⁹

डॉ. श्यामसुन्दर दास लिखते हैं— “उपन्यास मनुष्य के जीवन की काल्पनिक कथा है।”¹⁰

भगीरथ मिश्र मानते हैं— “‘उपन्यास’ युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक महत्वपूर्ण व्यापक झँकी प्रस्तुत करने वाला गद्यकाव्य है।”¹¹

बाबूगुलाब राय ने लिखा है— “उपन्यास कार्य कारण श्रृंखला में बंधा हुआ वह कथानक है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित वास्तविक व काल्पनिक घटनाओं द्वारा मनुष्य जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।”¹²

पाश्चात्य विद्वान डॉ. हरबर्ट जे. मूलर के शब्दों में— “उपन्यास मूलतः मानवीय अनुभव का निरूपण है, चाहे वह यथार्थ हो अथवा आदर्श और इस प्रकार उपन्यास में अनिवार्यतः जीवन की आलोचना रहती है।”¹³ इसी प्रकार पाश्चात्य विद्वानों में क्रास, डेविड सेसिल, राबर्ट लिडेल, एडिन, हार्टन, इत्यादि विद्वानों ने भी लगभग इसी प्रकार उपन्यास को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

उपर्युक्त भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षकों और उपन्यासकारों द्वारा दी गई परिभाषाओं से उपन्यास के निम्न तत्व उभरकर सामने आते हैं—

1. यह मानव जीवन का यथार्थ चित्रण करता है।
2. यह काल्पनिक कथा है, मानव जीवन की।
3. इसकी कथा यथार्थ या आदर्श हो सकती है।
4. मानव के चरित्र का उद्घाटन करता है।
5. शिष्टाचार का सम्प्रदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्र और पॉकेट का थियेटर है।
6. जीवन की विडंबना की कृति है।
7. यह जीवन की आलोचना करता है।

अतः उपर्युक्त तत्वों के आधार पर हम उपन्यास की अवधारणा को सुनिश्चित कर सकते हैं।

1.2 उपन्यास : भारतीय एवं पाश्चात्य

जैसा कि हमने पहले ही बता दिया है कि भारतीय उपन्यास पर मूलतः पाश्चात्य का प्रभाव है। हालाँकि प्रत्येक देश का देशकाल और वातावरण अलग-अलग होता है। उपन्यास साहित्य पर विद्वानों में कहीं सहमति है तो कहीं असहमति है लेकिन उपन्यास के शिल्प-विधान पर सामान्यतः भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान एकमत नज़र आते हैं। उपन्यास को लिखने से पहले उपन्यासकार के मन और मस्तिष्क में सर्वप्रथम छः तत्व आते हैं—

1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. देशकाल और वातावरण, 4. भाषा, 5. कथोपकथन, 6. उद्देश्य।

ये छः तत्व भारतीय एवं पाश्चात्य उपन्यास साहित्य में आम हैं। इनके बिना उपन्यास की सत्ता नहीं होती। इन तत्वों पर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विचार हम क्रमानुसार देखते हैं—

1. **कथावस्तु**— यह उपन्यास का ढाँचा है, अर्थात् उपन्यास का चित्र कह सकते हैं। इसके बिना उपन्यास की रचना नहीं की जा सकती है। ई.एम. फॉर्स्टर, रिचर्डसन, एडविन और मूर जैसे विद्वानों का मत है कि बिना कथा के उपन्यास निरर्थक है। एक दूसरा वर्ग भी है जो उपन्यास में कथावस्तु को अनिवार्य नहीं मानता। शेखुड, एण्डरसन, विबान जैसे विद्वान इसी वर्ग के हैं। भारतीय विद्वानों ने कथावस्तु को स्वीकार किया है। डॉ. त्रिभुवन सिंह, आचार्य क्षेमेन्द्र 'सुमन' जैसे विद्वान लिखते हैं— “वस्तुतः कथावस्तु उपन्यास में वर्णित घटनाओं का वह संग्रह है, जिस पर उपन्यास का ढाँचा खड़ा होता है, जिसके द्वारा उपन्यास के विचार सामूहिक रूप में अभिव्यक्त होते हैं।”¹⁴

2. **चरित्र-चित्रण**— पात्रों का चरित्र चित्रण कथावस्तु के बाद दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता है। यह भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों साहित्य में पाया जाता है। भारतीय विद्वानों में प्रेमचंद, जैनेन्द्र और विदेशी विद्वानों में ई.एम. फॉर्स्टर, लोटजे, राबर्ट लिडेल, रॉबिन्सन, स्काट मैरोडिथ जैसे विद्वानों ने उपन्यास में चरित्र-चित्रण को महत्व दिया है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद लिखते हैं—

“सब आदमियों के चरित्र में बहुत कुछ समानताएँ होते हुए भी कुछ विभिन्नताएँ होती हैं। यही चरित्र सम्बन्धी समानता और विभिन्नता, अभिन्नत्व में भिन्नत्व और भिन्नत्व में अभिन्नत्व दिखाना उपन्यास का प्रमुख कर्तव्य है।”¹⁵

3. **देशकाल और वातावरण**— किसी भी देश की संस्कृति और तत्कालीन समय को देशकाल और वातावरण कह सकते हैं। इस संबंध में विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों — मन्मथलाल शर्मा, डॉ. जवाहर सिंह, गुलाबराय, एच. बी. लैपरोध ने देशकाल और वातावरण को उपन्यास में स्थान देते हैं। एच. बी. लैपरोध लिखते हैं— “यथार्थ की प्रतीति के लिए उपन्यास में वातावरण एवं देशकाल की सृष्टि आवश्यक होती है। यह वह धरातल है जिसमें पात्र उत्पन्न होते हैं, वह वातावरण है जिसमें वह सांस लेते हैं, वह माध्यम है जो उन्हें जीवित रखता है, उन्हें आच्छादित करता है। उनका लालन—पालन तथा नियंत्रण करता है तथा उनके रहन—सहन के ढंग का नियोजन करता है।”¹⁶

4. **भाषा**— भाषा के बिना मनुष्य और साहित्य का अस्तित्व नहीं है। उपन्यास की भाषा देशकाल और पात्रों के अनुसार होती है। भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान उपन्यास की भाषा पर रचनाकार और उसके पात्रों का प्रभाव देखते हैं। इस संबंध में डॉ. आदर्श सक्सेना लिखते हैं— “उपन्यास में भाषा के दो रूप देखने को मिलते हैं— एक वह जो रचनाकार बोलता है और लिखता है, दूसरा वह जिसमें रचनाकार का पात्र बोलता है।”¹⁷

5. **कथोपकथन**— बिना कथोपकथन के उपन्यास की कथावस्तु में रचनाशीलता और प्रभावशीलता का अभाव लगता है। यह उपन्यास में उल्लेखित उद्देश्य को गति देने का काम करता है। कथोपकथन संक्षिप्त, मौलिक, सोद्देश्य, मनोनुकूल होने चाहिए। यह उपन्यास का अपरिहार्य तत्व है। इसके बिना उपन्यास की कल्पना भी करनी बेकार लगती है। अलबेट्स, प्रेमचन्द, हिन्दी साहित्य कोशकार, डॉ. गुलाबराय प्रभृति विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार

कथोपकथन को बताते हुए उपन्यास में आवश्यक माना है। मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं— “उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाए, उतना ही उपन्यास सुन्दर होगा। वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को जो किसी चरित्र के मुँह से निकले उसके मनोभावों और चरित्र पर कुछ न कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल सरल और सूक्ष्म होना जरूरी है।”¹⁸

6. **उद्देश्य**— साहित्य का उद्देश्य एक सुंदर समाज का निर्माण करना है। उपन्यास साहित्य का उद्देश्य भी यही होना चाहिए। बिना किसी उद्देश्य के उपन्यास का लेखन व्यर्थ है। हेनरी जेम्स, डॉ. श्यामसुन्दरदास, प्रेमचंद, जैसे विद्वानों ने उपन्यास के उद्देश्य को उपन्यास में महत्वपूर्ण माना है। हेनरी जेम्स लिखते हैं— “उपन्यास के अस्तित्व का एकमात्र कारण यह है कि वह जीवन का प्रतिनिधित्व करने का प्रयत्न करता है।”¹⁹

अतः उपन्यास के जिन तत्वों का ऊपर उल्लेख किया गया है वह भारतीय एवं पाश्चात्य उपन्यास के मूल शिल्प है। इनसे ही उपन्यास को जाना जाता है।

1.3 उपन्यास एवं अन्य गद्य विधाएँ

जितनी लोकप्रियता उपन्यास को प्राप्त हुई है उतनी अन्य गद्य विधाओं को नहीं। हालाँकि अन्य गद्य विधाओं में सबसे अधिक लोकप्रियता उपन्यास के बाद आत्मकथा को मिली है। अन्य गद्य विधा में आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा—साहित्य, डायरी, रिपोर्टाज, ब्लॉग लेखन, पत्र—साहित्य आते हैं। पारुकान्द देसाई अपने शोध—प्रबन्ध में उपन्यास और अन्य गद्य विधा पर लिखते हैं कि उपन्यास के अन्दर सभी अन्य गद्य विधाएँ समाहित हैं— “एक यूरोपियन आलोचक ने कहा था कि उपन्यास के पेट में आधुनिक माने जाने वाले सभी साहित्य—रूप आ जाते हैं।... निबन्ध, साहित्यिक पत्र, संस्मरण और इतिहास, धार्मिक प्रवचन, क्रांतिकारी मेनिफेस्टो, यात्रा विवरण, रेखाचित्र, डायरी, आत्मकथा आदि... इन सबको

उपन्यास ने अपनाया है। मजेदार बात तो यह है कि सबको आत्मसात करने के बाद भी वह सबसे निराला है।”²⁰

हालाँकि अन्य गद्य विधाओं की अपनी-अपनी खास विशेषता और साहित्य में विशिष्ट स्थान है लेकिन उपन्यास साहित्य ने उसको भी अपनी शैली में ढालकर आत्मकथात्मक उपन्यास, रिपोर्टाज शैली का उपन्यास, जीवनीपरक उपन्यास पत्रात्मक प्रविधि का उपन्यास बना दिया है। अर्थात् अन्य गद्य विधा का उपयोग कर उसे उपन्यास में रूपान्तरित किया जा रहा है। हिन्दी में आत्मकथात्मक उपन्यास—ब्रजनन्दन सहाय का सौन्दर्योपासक, रिपोर्टाज शैली में श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी, जीवनीपरक उपन्यास में अमृतलाल नागर का मानस का हंस, खंजन नयन, और पत्रात्मक प्रविधि का पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र का ‘चंद हसीनो के खतूत’ इसके उदाहरण हैं। अतः हम देखते हैं कि उपन्यास अपने आप में लोकतान्त्रिक विधा है। उसका स्वरूप दिनोंदिन बदलता जा रहा है। वह अन्य गद्य विधा को भी उपन्यास के लिए प्रयोग कर रहा है।

1.4 समकालीन उपन्यास

समकालीन उपन्यास की समय-सीमा कब से कब तक होनी चाहिए यह सर्वमत से स्वीकार नहीं हो पाया है। कोई 1960 से तो कोई 1980 से इसकी शुरुआत मानता है जिसके लिए अपने-अपने तर्क हैं। कब तक माना जाना चाहिए यह स्पष्ट नहीं हैं कोई 2000 ई. तक मानता है तो कोई आज तक चल रहा दौर समकालीन मानता है। अतः प्रो. गोपालराय के शब्दों में— “1981-2000 की अवधि को ‘समकालीन’ परिदृश्य मानना विवादास्पद हो सकता है, पर विवेचन की सुविधा की दृष्टि से इसका कोई विकल्प भी नहीं है। इस परिच्छेद में हमने उन उपन्यासकारों का विवेचन करने का निर्णय किया है जिनका पहला उपन्यास 1981 ई. में या उसके बाद प्रकाशित हुआ। यद्यपि इस वर्ष को समकालीनता का आरंभ मानने का कोई निर्विवाद औचित्य नहीं है, पर समय की कोई न कोई रेखा तो हमें निर्धारित करनी ही होगी, जहाँ से समकालीनता का आरम्भ माना जा सके।”²¹ इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य तौर से समकालीनता का प्रारम्भ 1980 ई. से मान

सकते हैं जो कि आज तक जारी है या फिर 2000 ई. तक। दोनों को मानने वाले विद्वानों का वर्ग है।

‘समकालीन’ शब्द को परिभाषा की इयत्ता में समेट पाना बहुत ही कठिन कार्य है लेकिन असंभव नहीं। विभिन्न विद्वानों ने इसको परिभाषित करने का कार्य किया है लेकिन कोई सर्वमान्य परिभाषा अब तक नहीं बन पाई है। ‘समकालीन’ शब्द अंग्रेजी के ‘Contemporary’ का हिंदी पर्याय है जिसका अर्थ है तत्कालीन। नालंदा विशाल शब्द सागर में समकालीन के बारे में लिखा है— “समकालीन शब्द का अर्थ जो एक ही समय में हुए है।”²² डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित लिखते हैं— “समकालीनता मेरे लिए काल बोध के लिए प्रस्तुत की जाने वाली एक भाववाचक संज्ञा नहीं, बल्कि सर्जना के धरातल पर मैं उसे जीवंतता प्रदान करने वाली एक शक्ति और सर्जक के लिए एक ऐसा उपयोगी तत्व मानता हूँ, जो उसकी कृति को नवीनता प्रदान करके, ग्रहीता को उस कृति के निकट लाने और उससे आत्मीय भाव से जुड़ जाने का सम्बल प्रदान करता है।”²³ अतः समकालीनता भावनात्मक है। रचना और रचनाकार के लिए नवीनता और ग्रहीता के लिए रचना की विषयवस्तु के साथ आत्मीयता से जोड़ने वाली शक्ति समकालीनता है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में समकालीनता से हाशिए के समाज का विमर्श के रूप में प्रादुर्भाव हुआ है। दलित, स्त्री, आदिवासी, वृद्ध, किसान, अल्पसंख्यक, सांप्रदायिक विमर्श के रूप में साहित्य में केन्द्र बिन्दु बनकर आया है। इन केन्द्र बिन्दुओं के आधार पर 1980 ई. के बाद से उपन्यास साहित्य में खूब लेखन होने लगा है। इधर 2000 ई. के बाद से किन्नर जीवन केन्द्रित उपन्यास आने लगे जिससे हिन्दी साहित्य में एक और विमर्श ने जन्म ले लिया जिसका नाम है ‘किन्नर विमर्श’। अतः समकालीन उपन्यासों ने विमर्श केन्द्रित विषयों का चुनाव अपने उपन्यास साहित्य में किया और करते आ रहे हैं।

समकालीन हिन्दी उपन्यास साहित्य का आयाम वृहद् है। खूब उपन्यास लिखे गए और लिखे जा रहे हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि इस दौर में महिला व दलित कथाकार खूब लेखन किए हैं वह आज भी लेखन में अनवरत लगे हैं। महिला उपन्यासकारों में मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, सूर्यबाला, मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, सुनीता जैन, शिवानी, दीप्ति खंडेलवाल, नासिरा शर्मा, मालती जोशी, शशि

प्रभा शास्त्री, प्रभाखेतान, कात्यायनी, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह, चित्रा मुद्गल, जैसी प्रतिनिधि लेखिकाएं हैं। इसके अतिरिक्त समकालीन उपन्यासकारों में संजीव, राजकृष्ण मिश्र, पंकज बिष्ट, वीरेन्द्र सक्सेना, शिवमूर्ति, वीरेन्द्र जैन, कमलाकान्त त्रिपाठी, असगर वजाहत, अलका सरावगी, भगवानदास मोरवाल, कमलेश्वर जैसे प्रतिनिधि उपन्यासकार हैं। इनके कुछ महत्वपूर्ण उपन्यास, इदन्नमम, जिन्दगीनामा, जिन्दा मुहावरा, छिन्नमस्ता, कठगुलाब, आवां, गिलिगडु, सर्कस, जंगल जहाँ शुरू होता है, सावधान! नीचे आग है, धार, झीनी झीनी बीनी चदरिया, पाहीघर, कैसी आगी लगाई, कलिकथा वाया बाईपास, काला पहाड़ जैसे समकालीन उपन्यास दलित, आदिवासी, स्त्री, वृद्ध, किसान, मुस्लिम और साम्प्रदायिकता जैसे विषयों के प्रतिनिधि उपन्यास हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समकालीन उपन्यासकारों में चित्रा मुद्गल जी का भी नाम ससम्मान लिया जाता है। उनके उपन्यास समकालीन जीवन संदर्भों को चित्रित करते हैं। साथ ही उनका अंतिम उपन्यास पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा एक नये विमर्श 'किन्नर विमर्श' को लेकर उपन्यास साहित्य में पर्दापण किया है जो कि एक सराहनीय और नया कदम है।

संदर्भ ग्रंथ

- 1 डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य का साथी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा महाराष्ट्र, द्वितीय संस्करण—1950, पृष्ठ 71
- 2 पं. किशोरी लाल गोस्वामी, हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, पृष्ठ 99
- 3 नलिन विलोचन शर्मा, आलोचना, वर्ष खण्ड—1
- 4 प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस, पृष्ठ 74
- 5 हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी, पृष्ठ 68
- 6 गोविन्द त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1959, पृष्ठ 412
- 7 हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी, पृष्ठ 107
- 8 हंस पत्रिका, जनवरी 1999, पृष्ठ 104
- 9 क्षेमचन्द्र सुमन, योगेन्द्र कुमार मल्लिक, साहित्य विवेचन, आत्माराम एण्ड सं, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ 137
- 10 डॉ. कृष्ण बल्लभ जोशी, हिन्दी साहित्यशास्त्र की भूमिका, पृष्ठ 86
- 11 बाबूगुलाब राय, काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ 167
- 12 "The novel is typically a representation of human experience whether liberal or ideal and therefore inevitably a comment upon life." Herbert J. Muller's Modern Fiction- A study of value, P. Forward-14
- 13 क्षेमचन्द्र सुमन, योगेन्द्र कुमार मल्लिक, आत्माराम एण्ड सन्स, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ 138
- 14 क्षेमचन्द्र 'सुमन', योगेन्द्रकुमार मल्लिक, आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1952, पृष्ठ 138
- 15 मुंशी प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस, पृष्ठ 38
- 16 एच.बी. लैपरोध, दि ऑर्ट दि नोवलिस्ट, 1921, लन्दन
- 17 रेणुशाह, फणीश्वरनाथ रेणु का कथा शिल्प, पृष्ठ 152
- 18 प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस, पृष्ठ 102
- 19 डॉ. प्रताप नारायण टण्डन, हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास, पृष्ठ 15

20 पारुकान्द देसाई, हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा, में साठोत्तरी उपन्यास, (शोध-प्रबन्ध) हिन्दी विभाग, महाराजा सायजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1978, पृष्ठ 2

21 प्रो. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवाँ सं.-2019, पृष्ठ 375

22 डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुद्गल का कथा-साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2012, पृष्ठ 49

23 डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुद्गल का कथा-साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2012, पृष्ठ 49



द्वितीय अध्याय समाज एवं किन्नर जीवन



द्वितीय अध्याय

समाज एवं किन्नर जीवन

पृथ्वी पर प्रकृति की सबसे श्रेष्ठ कृति मानव है। मानव से समाज बना है। मानव को तीन प्रकार का बताया गया है। पहला पुरुष दूसरा स्त्री और तीसरा किन्नर। इन मानवों में भेद हैं। स्त्री-पुरुष को जाति धर्म, लिंग और भाषा के आधार पर बाँटा गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस बाँटवारे में किन्नरों का सामाजिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है। हालाँकि जाति के आधार पर स्त्री-पुरुष के बाँटवारे में भी बहुत विभाजन है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार जातियों में हमारा भारतीय समाज सदियों से सामाजिक रूप से बाँटा हुआ है। जिसमें सबसे निकृष्ट जाति के रूप में शूद्र को रखा गया है। इसमें भी एक छूत शूद्र तो दूसरा अछूत शूद्र दो वर्ण हैं। स्त्रियों को भी शूद्र की श्रेणी में रखा गया है। इस जाति और वर्ग विभाजन में किन्नरों का कोई स्थान नहीं है। उन्हें समाज से उपेक्षित ही नहीं बहिष्कृत भी कर दिया गया है। उनके साथ सामाजिक रूप से कोई रिश्ता नहीं रखा गया है। अगर रखा भी गया है तो सिर्फ अपने लाभ के लिए। वह लाभ यह है कि इनके आशीर्वाद से घर में सुख-समृद्धि आती है और श्राप से दुःख और कंगाली। फिर भी समाज से बहिष्कृत किया गया है। यह कितना विरोधाभास है।

1.1 सामाजिक संरचना एवं किन्नर जीवन

पूरे विश्व के प्रत्येक देश की सामाजिक संरचना और वहाँ के लोगों का जीवन भिन्न-भिन्न है। इतना ही नहीं प्रत्येक देश के अंदर भी यह संरचना भिन्न-भिन्न है। एक देश में उनके धर्म, जाति, लिंग, भाषा के लोग रहते हैं। इसलिए यह भिन्नता होना लाजिमी है। इसीलिए भारत देश को तो अनेकता में एकता वाला देश कहा जाता है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, लिंग, भाषा के विभिन्न गुलदस्ते हैं। इन गुलदस्तों से भारत की स्थिति वैसी ही है जैसी एक बगिया में विभिन्न गुलदस्तों की। हालाँकि यहाँ ही नहीं विश्व में भी किन्नरों का हाल लगभग

एक जैसा है। कहीं उनका जीवन अच्छा है तो कहीं कम अच्छा और कहीं-कहीं तो एकदम से घटिया। समाज से पूर्णतः बहिष्कृत।

भारतीय समाज की संरचना भेदभाव आधारित रही हैं। पुरुष और स्त्री को मुख्यधारा में माना गया है जबकि किन्नर को बहिष्कृत कर दिया गया है।

सामाजिक संरचना और किन्नर जीवन पर प्रियंका नारायण ने अपनी पुस्तक— “किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता” में आदि से आज तक के समाज एवं किन्नर जीवन का अच्छा चित्र उकेरा है। प्रियंका नारायण आदिम समाज के बारे में लिखती हैं कि स्त्रियाँ बच्चे को जन्म देती थीं और पुरुष उन्हें योग्य बनाते थे। स्त्रियाँ पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करती थीं। वहीं किन्नर ये दोनों काम करने में असमर्थ थे। इसलिए समाज में उनका महत्व कम होने लगा—

“सन्तति की प्राकृतिक और परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं ने समुदाय में उसकी जननी, स्त्रियों की महत्ता को स्थापित किया। पुरुष जो कि यौन सन्तुष्टि और बाह्य संघर्ष में ही केवल मर-खप जाने के कारण सैनिक मात्र बने रहे और अपनी महत्ता खोते गये। सन्तानों पर उस समय माताओं के एकाधिकार में पुरुषों और बच्चे पैदा करने में अयोग्य मनुष्यों (किन्नर भी) की महत्ता को कम किया। यौन क्रिया में सक्षम न होने के कारण यह सम्भव है कि हिजड़ों की स्थिति पुरुषों से भी नीची रही होगी। क्योंकि वे न तो स्त्रियों के समान बच्चे पैदा कर सकते थे और न ही यौन तृप्ति के लिए पुरुषों के आकर्षण का केन्द्र ही हो सकते थे।”¹

इसी प्रकार धीरे-धीरे किन्नरों का समाज से पूर्णरूपेण से बहिष्कार हो गया। उन्हें समाज में हाशिए पर रहे लोगों से भी बाहर कर दिया गया है।

प्रियंका नारायण के शब्दों में—

“प्रजनन और अस्तित्व के इस दृढ़ मानसिक— बौद्धिक वातावरण में स्त्रियाँ तो हथियार बनीं किन्नर वो भी नहीं बन पाये।”²

इतना ही नहीं इनको आदि शास्त्र और इतिहास में कहीं-कहीं जिक्र करके महत्व दे दिया गया है लेकिन वह भी अपमानित करते हुए। उनको समाज की मुख्य

धारा में शामिल नहीं किया गया। उनके जीवनयापन के बारे में विचार नहीं किया गया। प्रियंका नारायण लिखती है— “यदि हम भारत के प्राचीन शास्त्रों जो कि नीति और विधान की बात करते हैं, उनका अनुशीलन करें तो वो भी अन्य लैंगिक स्थितियों की तुलना में इनके विषय में लगभग मौन ही हैं। यह प्रदर्शित करता है कि इनकी एक खामी के चलते कैसे समाज ने इन्हें उपेक्षा के गहरे अन्धकूप में डाल दिया।”³

आदि से वर्तमान तक के सफर में सामाजिक संरचना के लिए नए-नए विधि-विधान बने और बनाए गए लेकिन वह आज भी लागू नहीं हो पा रहे हैं। किन्नर से संबंधित ही नहीं हाशिए के लोगों पर भी यही लागू होता है। सारे विधि-विधान सिर्फ कागजों और फसलों में धूल-फाँक रहे हैं। उनका समाज में पूर्णतः प्रभाव नहीं हो पाया है। इसलिए किन्नरों की दशा आज भी वही है प्रियंका नारायण लिखती है— “निष्कर्षतः बात यह है कि जब से हमें हमारा संविधान और शास्त्र ज्ञात है तब से लेकर आज तक स्थिति वही है। इन्हें तब भी बहिष्कृत उपेक्षित समझा जाता था और आज भी बहिष्कृत उपेक्षित समझा जाता है।”⁴

किन्नर को तृतीयलिंग कहा जाता है। इन्हें पुरुष और स्त्री के समाज से बाहर और अपमानित रहना होता है। इनको घर से बाहर निकाल दिया जाता है जिसके बाद इनके पास एक ही सहारा होता है। यह सहारा उनके ही लोग बनते हैं जो उन्हीं के जैसे घर से बाहर निकाल दिये जाते हैं। यही इनका समाज होता है। यह समाज लोगों की दृष्टि में बहिष्कृत और तिरस्कृत होता है। अपमानित होता है। डॉ. शबाना हबीब अपनी पुस्तक— ‘समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय’ में सामाजिक संरचना के बारे में लिखती हैं— “समाज में मानव दो लिंग में जीते हैं— स्त्री और पुरुष। इन दोनों से भिन्न तीसरी योनि का रूप भी समाज में है। ये लोग समाज से हमेशा तिरस्कृत जीवन बिताने के लिए बाध्य हैं। अनादिकाल से समाज में तृतीय समुदाय के लोग मौजूद थे। उन्हें आदर, सम्मान और ऊँचे औहदें नहीं प्राप्त हैं। परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है परन्तु हिजड़ों को आम इंसान के जैसा पारिवारिक सुख कभी प्राप्त नहीं होता।”⁵

अब सवाल यह उठता है कि इन्हें बहिष्कृत तिरस्कृत जीवन क्यों जीना पड़ता है? यह विचारणीय प्रश्न है। इसका उत्तर है समाज की संरचना का डर। किन्नरों के माता-पिता समाज के भय से इन्हें या तो मार डालते हैं या तो घर से बाहर कर देते हैं। डॉ. शबाना हबीब लिखती हैं— “साधारण तौर पर किसी परिवार में हिजड़े बच्चे का जन्म होता है तब, उसके माता-पिता उस बच्चे को मार डालते हैं, अथवा कुछ वर्ष बाद स्पष्ट लक्षण नजर आते ही समाज के भय से उसे घर से, परिवार से, अलग कर देते हैं। पारिवारिक अलगाव का दंश ही सबसे खतरनाक है।”⁶ इस प्रकार सबसे बड़ा कारण उनके माता-पिता और परिवार के लोग ही हैं जो उन्हें बहिष्कृत जीवन जीने को मजबूर करते हैं। एक दूसरा कारण भी है कि समाज के लोगों द्वारा उपहास का पात्र बनाकर उन्हें अपमानित किया जाता है जिसके कारण वे खुद घर छोड़कर हिजड़ों के समुदाय में जाकर मिल जाते हैं— “लोगों के हँसी-मजाक से तंग आकर, अधिकांश हिजड़े स्वयं ही परिवार से दूर चले जाते हैं। एक बार परिवार से अलग हुए, तो दुबारा रिश्ता जोड़ नहीं सकते, क्योंकि अब वे हिजड़ा समुदाय के अंग बन गए हैं। उन लोगों की दुनिया बिल्कुल अलग है। वे लोग गुरु को ही अपना माता-पिता, पति आदि रूप में दर्ज कराते हैं। अगर उन्हें कोई हिजड़ा बच्चा प्राप्त हो तो वे उसे लक्षण के आधार पर बेटा या बेटी मान लेते हैं।”⁷

अतः सामाजिक संरचना पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। उसका दायरा संकीर्ण है। उसकी सोच सामंतवादी है। उस पर पुरुषों का वर्चस्व है। इसका समाज पितृसत्तात्मक है जिसके दायरे में सिर्फ स्त्री है, किन्नर नहीं। इसलिए किन्नर समाज मूलभूत सुविधाओं से भी संघर्ष कर रहा है। रोटी, कपड़ा और मकान तो उसके लिए बहुत दूर की चीज है। सर्वप्रथम तो उसे अपनी सामाजिक पहचान ही नहीं मिली है, तो उसके लिए शिक्षा और रोजगार स्वास्थ्य पर बात करना दूर की कौड़ी है। हालाँकि आज किन्नरों की सामाजिक पहचान के लिए बड़े स्तर पर काम किया जा रहा है। उन्हें संवैधानिक रूप से मान्यता दे दी गई है। उच्च शिक्षित बौद्धिक वर्ग द्वारा वे अपनाये जा रहे हैं। राजकुमार लिखते हैं— “आज जेंडर आइडेंटिटी को लेकर समाज में बड़े स्तर पर काम हो रहे हैं। साथ ही आज समाज

का समाजीकरण भी धीरे-धीरे मानवाधिकारों के आधार पर अग्रसर होने की बात पर बल दे रहा है।⁸

इसी का परिणाम है कि शबनम मौसी (मध्य प्रदेश), नर्तकी नटराज (तमिलनाडु), लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र), सिमरन (मुम्बई), गजल (पंजाब), आदि किन्नरों ने अपने परंपरागत पेशे से हटकर एक सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सफलता हासिल की हैं लेकिन सामान्य जनमानस के बीच ये आज भी बहिष्कृत ही हैं।

सामान्यतः स्त्री-पुरुष से इतर मानव को किन्नर कहा जाता है। किन्नर को कई शब्दों से पुकारा जाता है। जैसे— हिजड़ा, थर्ड जेंडर, तृतीय प्रकृति, छक्का, हलवा, चावल, बीड़ी, तराजू, खिचड़ी, मीठा इत्यादि। किन्नर का अलग समुदाय होता है। इन किन्नरों में भी कई प्रकार हैं। इन्हें सामान्य रूप से 'LGBTT' कहा जाता है। L- से लेस्बियन, G- से गे, B- से बाई सेक्सुअल, T- से ट्रांसजेंडर और T- ट्रांसमेन या वुमेन।

'किन्नर' शब्द हिन्दी भाषा का है। विभिन्न देशों में किन्नरों को अलग-अलग शब्दों से पुकारा जाता है। उर्दू में 'हिजड़ा', अमेरिका में 'बेरदाश', फिलीपीन्स में 'बकलस', ओमान में 'सतित्स', पाकिस्तान में 'मुस्त', 'सिनयस', 'शैतान', दक्षिण एशिया में 'जोगप्पास', 'जोगतास', 'हिजरा' आदि नामों से पुकारा जाता है। भारत के राज्यों में अलग-अलग नामों से इन्हें पुकारा जाता है।

प्राचीन समय में किन्नरों को उच्च दर्जे का समझा जाता था। 'किन्नर' शब्द हिजड़ों के लिए प्रयोग न हो इसका विरोध 'किन्नौर' जिले (हिमाचल प्रदेश) के लोग कर रहे हैं। हालाँकि 'हिजड़ों के लिए 'किन्नर' शब्द वैसे ही प्रयोग किया जा रहा है जैसे चमारों के लिए 'हरिजन'। अतः किन्नर शब्द एक उपेक्षित बहिष्कृत वर्ग को सम्मानित करने के लिए प्रयोग हो रहा है। विभिन्न विद्वानों ने किन्नरों को परिभाषित करने का प्रयोग किया है। के. वनजा इन्हें परिभाषित करती है— "जीव जन्तुओं में पुरुष और स्त्री सेक्स के अलावा कुछ और भी है। स्त्री और पुरुषों में न आने वालों को आमतौर पर ट्रांसजेंडर कहा जाता है।"⁹ डॉ. शबाना हबीब लिखती

हैं— “किन्नर या हिजड़ों से अभिप्राय है, जिनके जननांग पूरी तरह विकसित न हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुष की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है। हिजड़ों को बुनियादी तौर पर ट्रांसजेन्डर, ट्रांससेक्सुअल, इंटर सेक्सुअल, एंट्रोगायन तथा कॉथिस बताते हैं।”¹⁰

यहाँ पर हम देखते हैं कि जहाँ के वनजा जीव-जन्तुओं में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग को छोड़ शेष सभी को ‘हिजड़ा’ या किन्नर कहती है तो वहीं दूसरी ओर डॉ. शबाना हबीब किन्नर, हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, ट्रांससेक्सुअल, इंटरसेक्सुअल, एंट्रोगापन, और कॉथिस वो हैं जिनके जननांग अर्धविकसित हैं। जो पुरुष होकर भी स्त्रियों के जैसा व्यवहार करते हों। स्त्रियों के सहज गुण हो उन्हें ही उभयलिंग मानती हैं।

प्रियंका नारायण लिखती है कि आधा स्त्री और आधा पुरुष शरीर लेकर जो पैदा होते हैं उन्हें किन्नर कहते हैं— “किन्नर ऐसे मानवों को कहते हैं जिनका शरीर पूर्ण रूपेण न तो स्त्री का होता है और न ही पुरुष का।”¹¹

राजकुमार लिखते हैं— “थर्ड जेंडर के अंतर्गत कई तरह के समुदायों का मिश्रित भाव है, जिसमें गे, लेस्बियन, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर इत्यादि है, परंतु हिजड़ा समुदाय जो मुख्य रूप से ट्रांसजेंडर के रूप में थर्ड जेंडर के अंतर्गत आता है। वही मुख्य रूप से आधार स्तंभ की भांति इस समुदाय वर्ग की कल्पना को सार्थकता प्रदान करते हैं।”¹²

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो रहा है कि ‘किन्नर’ उस समुदाय को कहते हैं जो न तो पुल्लिंग है और न ही स्त्रीलिंग। यह तीसरा लिंग है। प्रकृति का तीसरा समुदाय है। इसे किन्नर, हिजड़ा, एल.जी.बी.टी. इत्यादि नामों से जानते हैं। तीसरा लिंग सर्वोच्च न्यायालय ने नाम दिया है।

किन्नरों का जीवन बहुत पुराना है। पुराणों में इनके जीवन की झलक देखने को मिलती है। पुराणों में शिवशक्ति अर्थात् अर्धनारीश्वर, महाभारत में शिखण्डी, रामायण में : नपुंसक किन्नर रूप में इनका उल्लेख मिलता है। इनके अलावा, अर्जुन के रूप में, अरावल जैसे किन्नरों की कहानी हमारे धर्मग्रंथों में मिलती तो है।

लेकिन उनके सम्पूर्ण जीवन पर बात नहीं की गई है। किन्नरों के बारे में डॉ. सविता शर्मा लिखती हैं कि इनको पहले योद्धा, राजकीय जासूस जैसे ओहदे देकर समाज में स्थान दिया गया था। इनकी उपेक्षा तो अंग्रेजों के आगमन से होना शुरू हुई— “राजाओं के राज में हिजड़े बहादुर योद्धाओं के दल में शामिल किए जाते थे। स्त्री और पुरुष कुछ भी बन सकने की उनकी क्षमता उन्हें राजकीय जासूसों के पद भी दिलवाती थी। दरबार हो या मन्दिर वे अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन करके वाह—वाही भी लूटते थे, इनाम इकराम भी कमाते थे। बादशाहों के हरम में सुरक्षाकर्मी होते थे, औरतों के साथ सेक्स न करना उनकी कमी नहीं, खूबी थी। हिजड़ों का तिरस्कार तो अंग्रेजों के जमाने से शुरू हुआ।”¹³ इस प्रकार हम देखते हैं कि मुगल काल किन्नरों के लिए स्वर्ण काल का समय रहा है। जितना अधिकार और सम्मान उन्हें तब मिला था उतना उन्हें उसके बाद कभी नहीं मिला। हालांकि 2015 से सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार उन्हें संवैधानिक अधिकार तो दे दिए गए हैं लेकिन सामाजिक हैसियत अभी भी वही है। हर्ष कुमार लिखते हैं— “इतिहास में किन्नरों का काफी सम्मानजनक स्थान था।... यह समय किन्नरों का स्वर्ण समय था।... कई मुगल सेनाओं में किन्नर जनरल के पद पर आसीन थे। साथ ही कई रानी और महारानियों की सुरक्षा में भी वह तैनात रहते थे। लेकिन मुगलों के बाद आज भी किन्नरों को इज्जत नसीब नहीं हुई है।”¹⁴

किन्नरों का जीवन तिरस्कृत और निर्मम अत्याचारों का शिकार है। माता-पिता और समाज घर से बाहर निकाल देते हैं तो उन्हें किन्नरों का समुदाय पकड़ लेता है और जबरन उन्हें पारम्परिक पेशे और जीवन जीने को मजबूर करता है। उनके ऐसा न करने पर उन्हें प्रताड़ित भी किया जाता है और जान से मारने की धमकी भी दी जाती है। मजबूरन उन्हें पारम्परिक जीवन जीना पड़ता है। किन्नरों का अपना सामाजिक ताना-बाना है। उनकी अपनी संस्कृति, भाषा और वेशभूषा है। जब कोई किन्नर इनके समुदाय में आता है तो उसको किन्नरों के रस्म-रिवाज से शामिल किया जाता है। के. वनजा लिखती हैं— “ट्रांसजेंडर समुदाय में कोई नया सदस्य आता है तो उसे पूरे रस्मो-रिवाज के साथ मण्डली में शामिल किया जाता है। मण्डली में शामिल करने से पूर्व उसकी चुनरी रस्म की जाती है

तथा मुर्गेवाली माँ की पूजा-अर्चना भी। मुर्गेवाली माँ को ट्रांसजेंडर लोग अपनी इष्टदेवी मानते हैं। राजस्थान में उनका वास है, ऐसी उनकी मान्यता है। साथ ही उस दिन डेरे पर ढेरों पकवान बनते हैं एवं खूब जश्न मनाया जाता है।¹⁵

मुख्यधारा समाज से अलग रहने वाले किन्नरों की अपनी संस्कृति और पारिवारिक संबंध होते हैं। के. वनजा लिखती है— “मुख्यधारा समाज से अलग किए गए ट्रांसजेंडरों के अपने द्वारा निर्मित आचार-विचार, अधिकार-संरचना और व्यक्ति संबंध है।...एक व्यक्ति को ट्रांसजेंडर समाज का भाग बनकर जीना है तो उस समाज का कोई भी व्यक्ति उसे ‘बेटी’ के रूप में स्वीकारता है। जो ‘बेटी’ के रूप में किसी को स्वीकार करता है उसे ‘गुरु’ कहा जाता है।”¹⁶ इनके समाज में सिर्फ एक जाति होती है। वे अलग-अलग जातियों से होते हैं लेकिन एक समाज बनकर रहते हैं। उनमें कोई भेदभाव नहीं है। के.वनजा लिखती हैं— “अलग-अलग जाति बनकर नहीं, एक समाज बनकर वे सब मिलकर रहते हैं। इनके बीच में सात गोत्र हैं। इन्हें घर या घराना नाम से भी पुकारा जाता है। सात घरानों में से कहीं से भी ट्रांसजेंडर अपना गुरु चुन सकता है। घर घराने का एक नेता होता है, उसके हाथ में उस घराने का अधिकार होता है। नेता का नायक नाम से सम्बोधन करते हैं।”¹⁷

ऐसी किंवदन्ती है कि किन्नरों की मृत्यु के बाद उनकी शवयात्रा रात्रि में निकाली जाती है और उन्हें जूते-चप्पलों से पीटते हुए श्मशान घाट ले जाकर दफनाया जाता है। हिजड़ों की एक दिन की शादी होती है और अगले दिन विधवा। यह तमिलनाडु के विल्लुवपुरम में आयोजित कुवागम मेले में कूत्ताण्डव मन्दिर में सुहागिन बनते हैं फिर अगले दिन मंगलसूत्र तोड़कर विधवा। ये हल्दी मेहन्ती और जलसा रस्म करते हैं जिनमें पुरुष किन्नर को स्त्रैण बनाया जाता है या फिर शल्यचिकित्सा द्वारा बनवाया जाता है फिर जलसा मतलब जश्न मनाया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक किन्नर पूर्ण रूप से किन्नर घोषित हो जाता है।

ये लोग कूत्ताण्डव मंदिर में स्थापित मूर्ति अरावन की पूजा करते हैं। इनकी कुलदेवी मुर्गेवाली और बहुचरी माँ सन्तोषी माँ ही हैं। कूत्ताण्डव उत्सव प्रत्येक वर्ष

अप्रैल और मई महीने में मनाया जाता है। ये लोग केरल के 'चमय विलक्कु' उत्सव में भी शामिल होते हैं हालाँकि ये उत्सव इनके जीवन से संबंधित नहीं है।

इनकी जीविका परम्परागत तरीके से चलती है। इन्हें कोई रोजगार नहीं देता। अगर देता भी है तो इन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से कार्य स्थल पर प्रताड़ित और शोषित किया जाता है जिसके कारण या तो वो खुद छोड़ देते हैं या फिर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया जाता है। इसलिए वो नाचना, गाना, भीख माँगना, लैंगिक धन्धेबाजी आदि काम करके जीविकोपार्जन करते हैं। के. वनजा लिखती हैं— “मुख्यधारा समाज द्वारा अलगाये गये ट्रांसजेंडरों को कम्पनियों या अन्य संस्थाओं में काम नहीं मिलता है। अतः उन्हें समूह के पारम्परिक धनार्जन के मार्ग बधाई देना, घर और अन्य स्थानों में भीख माँगना आदि हैं। विवाह, जन्म, उत्सव, उद्घाटन जैसे अवसरों पर उनके आशीर्वाद की प्राप्ति से मंगल आ जाने का विश्वास विशेषकर उत्तर भारत के लोगों के बीच में व्याप्त है।... लेकिन रोज ऐसे कार्य नहीं होते हैं। वे अधिकतर भीख माँगने का कार्य करते हैं और वे कई प्रकार के परिहास के पात्र बनते हैं। इससे भी जीने के लिए आवश्यक पैसा नहीं मिलता। तब वे अच्छी तरह जीने के लिए लैंगिक धन्धे में उतरते हैं। अपनी जरूरतों के साथ गुरु की जरूरतों की भी पूर्ति करने का दायित्व प्रत्येक ट्रांसजेंडर का है। बेंगलुरु, मुम्बई जैसे शहरों के अधिकांश ट्रांसजेंडर यौन धन्धे करने वाले हैं।”¹⁸

इस प्रकार इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, जैसी बुनियादी चीजों से वंचित किया गया है। ये मुख्यधारा समाज से दूर हिजड़ों की बस्ती में रहते हैं। इनकी भाषा अलग है। इनकी भाषा सांकेतिक है। डॉ. शबाना हबीब लिखती हैं— “हिजड़ों की अपनी भाषा होती है। जब तक वे परिवार में रहते हैं तब तक वहाँ की भाषा ही बोलते हैं। इसके बाद नए शब्द और नए अर्थ वाले शब्दों से युक्त भाषा वे बोलने लगते हैं। ये लोग सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं।”¹⁹

भारत में किन्नरों को अब संवैधानिक अधिकार प्राप्त हो गया है। सन् 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में इन्हें “तृतीयलिंग” का दर्जा दे दिया है। 2015 के आदेश के बाद इनके अधिकारों की ओर लोगों का ध्यान गया। अब सरकारी फॉर्म

में इनका भी ऑप्शन रहता है। अर्थात् अब ये भी आवेदन कर सकते हैं। कई किन्नरों का उदाहरण आज प्रस्तुत हैं। जो किसी तरह चोरी-छिपकर पढ़ाई-लिखाई करके विभिन्न पदों पर विराजमान हैं, ऐसे लोगों की संख्या लगभग 20 या 25 अब तक सामने आई है। हालाँकि अभी सामाजिक स्तर पर इनका वही हाल है। इन्हें बहिष्कृत और प्रताड़ित किया जाता है। जब तक इनको सामाजिक स्तर पर न्याय नहीं मिलेगा तब तक इनको वास्तविक अधिकार प्राप्त नहीं हो सकेगा।

2.2 सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्ग

किन्नरों को वर्ष 2014 से भले ही संवैधानिक अधिकार प्राप्त हो गया हो लेकिन वे अभी तक बहिष्कृत और उपेक्षित ही है। समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता, आज भी उन्हें घृणा की दृष्टि से लोग देखते हैं। उनसे बात करने में कतराते हैं। अपना अपमान समझते हैं। उन किन्नरों को नपुंसक के अर्थ में 'हिजड़ा' कहकर उन्हें नीचा दिखाते हैं। किन्नरों के कई भेद हैं— लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, ट्रांसवुमेन, डबल-डैकर, इंटरसेक्स। हालाँकि इन सबको मूल रूप से किन्नर, हिजड़ा, छक्का आदि में से किसी भी नाम से लोग पुकारते एवं जानते हैं। अंग्रेजी में इन सबके लिए 'LGBTTT' पद का प्रयोग करते हैं।

इन हिजड़ों की चार शाखाएँ हैं— बुचरा, नीलिमा, मनसा और हँसा। डॉ. शबाना हबीब के शब्दों में— “हिजड़ों की चार शाखाएँ हैं— बुचरा, नीलिमा, मनसा और हँसा। जो जन्मजात अर्थात् अपूर्णलिंगी होते हैं, उन्हें बुचरा कहते हैं। जो किसी कारणवश स्वयं को हिजड़ा बनने के लिए समर्पित कर देते हैं उन्हें नीलिमा कहते हैं। कुछ हिजड़े तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को विपरीत लिंग अथवा अक्सर स्त्रीलिंग के अधिक निकट महसूस करते हैं, वह मनसा कहलाते हैं। शारीरिक कमी तथा नपुंसकता आदि यौन विकारों के कारण जो हिजड़ा बनने पर विवश है, वह हँसा कहलाते हैं।”²⁰

मुख्यतः सामाजिक रूप से बहिष्कृत वर्ग के अंतर्गत LGBTTT आते हैं। इनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—

- L. लेस्बियन—** यह वह समुदाय है जो समान लिंग के प्रति आकर्षित होता है। हालाँकि समान लिंग में केवल स्त्री का स्त्री के प्रति आकर्षण होता है। यह वर्ग सिर्फ स्त्रियों का वर्ग है।
- G. गे—** किन्नरों का वह समुदाय जो समान लिंग के मनुष्य के प्रति आकर्षित होता है वह 'गे' कहलाता है। इनको समलैंगिक के रूप में देखा जाता है। यह लेस्बियन से इस अर्थ में भिन्न है कि यहाँ सिर्फ पुरुष का पुरुष के प्रति आकर्षण होता है।
- B. बाइसेक्सुअल (द्विलैंगिक)—** इस समुदाय के लोग पुरुष एवं स्त्री दोनों के प्रति मनचाहे रूप से किसी की ओर भी आकर्षित होते हैं। समाज में ये दोनों में से किसी के भी साथ जीवनयापन कर सकते हैं।
- T. ट्रांसजेंडर—** इस समुदाय के अंतर्गत वो लोग आते हैं जो स्त्री-पुरुष नहीं होते हैं। अर्थात् यौन रूप से भिन्न। इनमें अगर शरीर पुरुष का होगा तो उनमें मानसिक रूप से स्त्री के हाव-भाव और समझ होगी और अगर शरीर स्त्री का है तो हाव-भाव और समझ पुरुष का होता है।
- T. ट्रांस सेक्सुअल—** जन्मजात पुरुष और जीवनयापन भी पुरुषों की तरह है। लेकिन जब यह किन्नरों के साथ सम्मिलित हो जाते हैं तो स्त्री रूपी आंगिक रूप एवं स्थितियों को अपने जीवन में शामिल कर लेते हैं।
- T. ट्रांस वेसटाइट (क्रॉस डेस्सर) —** ये पुरुष होते हैं लेकिन इनके हाव-भाव एवं इच्छाएँ स्त्री की होती हैं। इसलिए ये स्त्री बनकर रहते हैं लेकिन अपना लिंग परिवर्तन नहीं करवाते हैं। और अपनी इच्छानुसार इच्छाएँ परिवर्तित करते रहते हैं।

उपर्युक्त संक्षिप्त परिचय से स्पष्ट है कि किन्नरों के भी कई प्रकार हैं। हालाँकि यह सब एक साथ मिलकर रहते हैं और अधिकांश स्त्री का रूप धारण करके ही रहते हैं। इतना ही नहीं शल्यचिकित्सा या बधियाकरण द्वारा अपना लिंग परिवर्तित कर किन्नर बन जाते हैं। अतः इन्हें एक शब्द में किन्नर ही कहते हैं।

2.3 उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर जीवन

हिन्दी साहित्य के इतिहास में किन्नर जीवन की समस्याओं का चित्रण तो नहीं हुआ है, लेकिन उनका उल्लेख कहीं-कहीं थोड़ा बहुत देखने को मिल जाता है। कविता के क्षेत्र में हम उन्हें एक झलक देखते आ रहे हैं लेकिन उनके मूल सवालों और समस्याओं को हम समकालीन हिन्दी उपन्यासों में पूरी तरह देखते हैं। हालाँकि आज कहानी, कविता, आत्मकथा जैसी विधाओं में भी किन्नर जीवन को उकेरा जा रहा है। इन सबका मूल कारण “शरद सिंह” को जाता है जिन्होंने हिन्दी साहित्य में अन्य विमर्शों की भाँति ‘किन्नर विमर्श’ पर अपनी लेखनी चलाई। हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन के यथार्थ को उकेरने में उपन्यास साहित्य सबसे आगे रहा है। आज 10 से ज्यादा उपन्यास किन्नर जीवन पर लिखे जा चुके हैं और आज भी लेखन जारी है।

नीरजा माधव का ‘यमदीप’ (2002), मनोज रूपड़ा का ‘प्रतिसंसार’ (2008), पंकज बिष्ट का ‘पंखवाली नाव’ (2009), महेन्द्र भीष्म का ‘किन्नर कथा’ (2010), प्रदीप सौरभ का ‘तीसरी ताली’ (2014), डॉ. अनसूया त्यागी का मैं भी औरत हूँ (2005), निर्मला भुराड़िया का ‘गुलाम मंडी’ (2013), महेन्द्र भीष्म का ‘मैं पायल’ (2016), चित्रा मुद्गल का ‘पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा’ (2016), भगवंत अनमोल का ‘जिन्दगी 50-50’ (2017) आदि मुख्य रूप से किन्नर जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले उपन्यास हैं, इन उपन्यासों में किन्नर जीवन के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त किया गया है। इन उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर जीवन निम्नलिखित है—

1. सामाजिक रूप से तिरस्कृत और बहिष्कृत
2. आजीविका की समस्या

3. शिक्षा और स्वास्थ्य
 4. किन्नरों की शल्य-चिकित्सा
 5. किन्नर और आई.वी.एफ.
 6. किन्नरों की मानवीय संवेदना
 7. किन्नरों का समाज और संस्कृति
 8. समलैंगिकता
 9. असली और नकली किन्नर
1. **सामाजिक रूप से तिरस्कृत और बहिष्कृत—** किन्नर पैदा होते ही सिर्फ माता को छोड़कर सभी के द्वारा तिरस्कृत और बहिष्कृत किए जाते हैं। हालांकि शिक्षित और समझदार माता-पिता अपने किन्नर बच्चे को घर-परिवार और समाज की मानसिक प्रताड़ना के डर से उन्हें कोसते नहीं हैं उन्हें सामान्य बच्चों की तरह पालते-पोसते हैं लेकिन ऐसा कम ही है। कुछ किन्नर बच्चे स्वयं घर इसलिए छोड़ देते हैं ताकि उनके माता-पिता और परिवार को प्रताड़ित और बहिष्कृत जीवन न जीना पड़े। “यमदीप” उपन्यास की नाज़बीबी अपनी माँ के पूँछने पर कहती है— “मम्मी, मैं आप लोगों की बदनामी के कारण अपनी दुनिया में चली आई... हिजड़ों की दुनिया में... मेरा हाथ पैर अपंग होता, दिमाग खराब होता, तो भी शायद तुम रख सकती थीं, लेकिन...”²¹ इससे सिद्ध होता है कि कुछ माता-पिता चाहकर भी अपने बच्चों के साथ नहीं रह पाते हैं।
 2. **आजीविका की समस्या—** बचपन से ही विस्थापन के कारण इन्हें न तो शिक्षा मिल पाती है और न ही आजीविका के लिए कोई तकनीकी कौशल का ज्ञान। अतः समाज से बहिष्कृत किन्नरों के लिए भीख माँगना, नाचना-गाना, लैंगिक धंधे मजबूरी होती है। “तीसरी ताली” उपन्यास की ज्योति कहती है— “माना मैं मर्द हूँ, लेकिन, ये समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए

राजी नहीं है। इस समाज ने मादा की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द हूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पेट की आग तो बड़ों—बड़ों को न जाने क्या—क्या बना देती है।”²²

3. **शिक्षा और स्वास्थ्य—** बहिष्कृत किन्नरों को शिक्षा और स्वास्थ्य भी नहीं मिलता हैं। कई रोगों से ग्रस्त किन्नर चिकित्सा सुविधा के अभाव में मृत्यु के पाश से निकल नहीं पाते। “गुलाम मंडी” उपन्यास की अंगूरी आपबीती बताती है— “कोई भरती करता पाठशाला में, पहले पूछते मेल कि फीमेल। अपनी वो शर्मिला है न, छोरा बन के भरती हुई थी, तो बहनजी ने एक दिन चड़्ढी उतरवा ली थी उसकी और जूते मारकर के स्कूल से निकलवा दिया था उसको। उमराव गुरु के कुनबे ने शरण दी उसको वरना भूखी मर जाती।”²³

4. **किन्नरों की शिल्प—चिकित्सा—** आधी अधूरी देह और मन और इच्छा विपरीत लेकर उत्पन्न होने वाले किन्नर शल्य—चिकित्सा कराके स्त्री की योनि ग्रहण करते हैं। यह उनकी मजबूरी होती है क्योंकि किन्नरों को समाज स्त्री रूप में ही ग्रहण करना चाहता है।

5. **किन्नर और आई.वी.एफ.—** ‘मैं भी औरत हूँ’ उपन्यास में आई.वी.एफ. द्वारा किन्नरों को बच्चे पैदा करने और घर बसाकर जीवनयापन करने का विकल्प उपन्यासकार ने सुझाया है। रोशनी कहती है— “मैं पत्नी का सुख पा सकती हूँ पर मैं किसी पुरुष को सिर्फ इसलिए स्वीकार नहीं कर पा रही हूँ कि मैं उसे बच्चा नहीं दे सकती। वैसे यह कोई बड़ी बात नहीं है, कई महिलाओं के बच्चे नहीं होते, उसके सब कुछ होता है पर वे माँ नहीं बन पातीं, तो क्यों वे जिन्दगी का सुख नहीं मांगती? फिर मैं स्वभाव से इतनी अलग क्यों हूँ? आज के इस आधुनिक युग में आई.वी.एफ. ऐसी आधुनिक टेक्नोलॉजी है, जिससे आप माँ बन सकती हैं। ‘सोरोगेटेड मदर’ से आप एक बच्चा प्राप्त कर सकते हैं।”²⁴

6. **किन्नरों की मानवीय संवेदना**— किन्नर भी इंसान हैं। उन्हें भी वही अनुभूति होती है जो साधारण स्त्री-पुरुष को होती है। घर-परिवार, माता-पिता, समाज, दया, सहानुभूति, दुःख, पीड़ा, खुशी, क्रोध इत्यादि। लेकिन समाज इन्हें बहिष्कृत करके इन सबसे दूर रख देता है। लेकिन कुछ किन्नर ऐसे हैं जो बहिष्कृत और तिरस्कृत होकर भी संवेदनशील रहते हैं और लोगों एवं घर-परिवार तथा समाज की मदद करते हैं। “यमदीप” उपन्यास की नाजबीबी प्रसव पीड़ा से कराह रही एक महिला की सहायता तब करती है जब कोई स्त्री-पुरुष उसकी सहायता नहीं करता— “अरे हम हिजड़े हैं। हिजड़े... इन्सान है क्या मुँह फेर लें।”²⁵ इसी तरह वह अपनी माँ की मृत्यु पर घर और श्मशान घाट पर जाती है तो उसका भाई उसे वहाँ से तिरस्कृत करता है तो उसका जवाब होता है— “मैं कभी तुम्हारी जिन्दगी में दखल न दूंगी, भईया। बस अब पापा ही बचे हैं, उसको संभालकर रखना।”²⁶
7. **किन्नरों का समाज और संस्कृति**— घर और समाज से बहिष्कृत होने के बाद किन्नरों की बस्ती में ही इनको आश्रय मिलता है। फिर इनका यही घर, परिवार और समाज बन जाता है। माता, पिता, गुरु, भाई, बहन आदि सब यही होते हैं। रीति-रिवाज, उत्सव, मेला, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, देवी-देवता सब इनके अलग हो जाते हैं। कुवागम मैला, मुर्गेवाली देवी, बुचरा देवी, हल्दी मेहन्ती, जलसा इनकी संस्कृति बन जाती है। बेटी के रूप में किन्नर गुरु द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद बहुत ही पीड़ादायी और जानलेवा रस्म है हल्दी मेहन्ती और जलसा। इसमें यह मान्यता है कि जब तक उसका लिंग काटकर छेद नहीं किया जाता तब तक वह पूर्ण किन्नर नहीं होता। यह रस्म इस प्रकार “यमदीप” उपन्यास में देखने को मिलती है— “खौलते तेल में पड़े चाकू से उनका कोई सीनियर हिजड़ा पुरुष जननांग को एक झटके से काट डालता है। उस पर कोई देसी जड़ी-बूटी लगाकर उसके बाद उसकी कमर में एक रस्सी बांधी, उसके दूसरे छोर पर एक कील जैसी कोई चीज लगाकर घाव में घुसा दी जाती है, ताकि जखम सूखने पर उसे औरत होने की अनुभूति हो।”²⁷

8. **समलैंगिकता**— पंकज बिष्ट ने अपने उपन्यास 'पंखवाली नाव' में समलैंगिक की समस्या को उठाया है। इस उपन्यास का नायक अनुपम कॉलेज से लेकर अपने नौकरी करने वाले स्थान तक हर जगह समलैंगिक संबंध बनाता है और इस कारण वह तिरस्कृत और बहिष्कृत होता रहता है। शर्मिष्ठा उसकी ओर लड़का समझकर आकर्षित होती है ताकि अपने पति की कमी का सुख भोग सके लेकिन अनुपम यह सुख नहीं दे सकता।
9. **असली और नकली किन्नर**— असली किन्नरों को नकली किन्नरों से बहुत कष्ट मिलते हैं। उन्हें सावधानी से रहना पड़ता है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में यह समस्या उपन्यासकार ने उठाई है। यह संघर्ष अपने अधिकारों के लिए करते हैं। तारा नकली किन्नरों से संघर्ष के बीच मारी जाती है। ये नकली किन्नर सामान्य पुरुष होते हैं। जो पैसे के लालच में ये सब करते हैं यहाँ तक कि किन्नरों की बस्ती में मिलकर उनको लूट भी लेते हैं जो तिरस्कृत और बहिष्कृत किन्नरों के लिए जले पर नमक छिड़कने जैसा है।

अतः आज का उपन्यास साहित्य किन्नरों के जीवन की समस्या को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। न सिर्फ उनकी समस्या को अभिव्यक्त कर रहा है। बल्कि किन्नरों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए विकल्प भी रच रहा है। शल्य—चिकित्सा, आई.वी.एफ. और सरोगेसी से बच्चे प्राप्त कर सामान्य जीवनयापन का माहौल बना रहा है। हालाँकि किन्नर जीवन अभी भी तिरस्कृत और बहिष्कृत ही है जिसे समाज ही घर वापसी करा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- 1 प्रियंका नारायण, किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 35-36
- 2 वही, पृष्ठ 39
- 3 वही, पृष्ठ 39
- 4 वही, पृष्ठ 39
- 5 डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 14
- 6 वही, पृष्ठ 14
- 7 वही, पृष्ठ 15
- 8 राजकुमार, थर्ड जेंडर : भाषावैज्ञानिक अध्ययन, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2019, पृष्ठ 84
- 9 के.वनजा, क्वीर विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2021, पृष्ठ 125
- 10 डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 09
- 11 प्रियंका नारायण, किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 57
- 12 राजकुमार, थर्ड जेंडर : भाषावैज्ञानिक अध्ययन, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2019, पृष्ठ 26
- 13 डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203, नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ 16
- 14 डॉ. पायल लिहारे, डॉ. श्याम मोहन पटेल (सं.), हिन्दी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श, वान्या पब्लिकेशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2020, पृष्ठ 162
- 15 के. वनजा, क्वीर विमर्श, लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 131
- 16 वही, पृष्ठ 130
- 17 वही, पृष्ठ 130
- 18 वही, पृष्ठ 137

- 19 डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 16
- 20 वही, पृष्ठ 10
- 21 वही, पृष्ठ 30
- 22 वही, पृष्ठ 44
- 23 के. वनजा, क्वीर विमर्श, लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 141
- 24 डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्रथम संस्करण-2021, पृष्ठ 48
- 25 वही, पृष्ठ 31
- 26 वही, पृष्ठ 32
- 27 वही, पृष्ठ 33



तृतीय अध्याय
चित्रा मुद्गल का रचना
संसार



तृतीय अध्याय

चित्रा मुद्गल का रचना संसार

चित्रा मुद्गल हिंदी साहित्य की ख्यातिलब्ध साहित्यकार हैं। हिंदी साहित्य में इनका नाम अमर है। बिना इनके नाम के हिंदी कथा-साहित्य के समकालीन इतिहास को जानना और समझना किसी न किसी बिंदु को छोड़ने के जैसा है। समकालीन स्त्री-विमर्श की सशक्त कथाकार हैं, चित्रा मुद्गल जी। इनका रचना संसार बहुआयामी है। इनकी रचनाओं में समाज के उपेक्षित, तिरस्कृत, बहिष्कृत और बलात्कृत रूप लोग अधिकांश रूप में जगह पाए हैं। अब तक इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, लेख, संपादन, अनुवाद पर कार्य किया है। हालाँकि इनकी ख्याति एक सशक्त कथाकार के रूप में जानी जाती है।

चित्रा मुद्गल जी के साहित्य का मूल आधार कथा-साहित्य है। कथा-साहित्य के माध्यम से स्त्री, वृद्ध, किन्नर, बालक, निम्न वर्ग इत्यादि से जुड़ी हुई समस्याओं के विभिन्न पहलुओं की आवाज उठाई हैं। नारी के मौलिक अधिकारों के विभिन्न पहलुओं को बहुत बारीकी से समझने, समझाने उनके साथ घर से लेकर समाज एवं कार्यस्थल तक हो रहे शोषण, दमन, अत्याचार, बलात्कार, तिरस्कार, अपमान एवं बहिष्कार को अपने कथा-साहित्य में न सिर्फ चित्रित किया है बल्कि उसकी समस्या का समाधान भी वैकल्पिक तौर पर उपलब्ध कराया है। आजकल वृद्धों की स्थिति पर बात होने लगी है। चित्रा जी ने वृद्धों के जीवन के एक-एक पहलू को पकड़ने की कोशिश की हैं। उनके साथ उनके बच्चों द्वारा हो रहे बहिष्कार तिरस्कार और हिंसा को चित्रित करती हैं। इतना ही नहीं उनको इससे निकलने की युक्ति भी सुझाती हुई नज़र आती हैं। उनकी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और मुख्यधारा के समाज में घर वापसी की वकालत करती हुई भी नज़र आती हैं। महानगरीय निम्न वर्ग के रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या को उकेरती हुई उनके घर और परिवार के अंदर भी बारीकी से पैठ करती हुई नज़र आती हैं। प्रेम के त्रिकोणीय रूप के परिणाम को उद्घाटित करने का अदम्य साहस दिखाती हैं।

भूख, बेरोजगारी, वेश्या जीवन, बाल जीवन के विभिन्न पहलुओं को इनकी रचनाओं में मुखरता से देखा जा सकता है। चित्रा जी के कथा-साहित्य में संघर्ष एवं समाधान दोनों को देखा जा सकता है। समस्या को सिर्फ उठाती नहीं है बल्कि उसके समाधान में संघर्ष और विकल्प का भी सृजन करती हैं। समस्या के समाधान के लिए संघर्ष निरंतर जारी रहता है। यह संघर्ष निरर्थक नहीं होता है। वह सार्थक होता है। इसकी सार्थकता चित्रा मुद्गल जी एक विकल्प देकर प्रमाणित कर देती हैं। अतः चित्रा मुद्गल जी के रचना-संसार का मूल मंतव्य समस्या चित्रण के साथ-साथ संघर्ष एवं समाधान भी है। इसलिए वो विकल्प का सृजन करती हुई चलती हैं।

चित्रा मुद्गल जी ने अब तक कहानी, उपन्यास, बाल उपन्यास, नाटक, वैचारिक लेख, संपादित पुस्तक एवं अनुवाद का रचना संसार निर्मित किया है जो कि निम्नलिखित है—

1. 'एक जमीन अपनी', प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ संस्करण, क्रमशः 1990, 1999–2000 और 2002 एवं 2009 में प्रभात प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन और सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है।
2. 'आवां' उपन्यास का पहला एवं आठवां संस्करण क्रमशः 1999 एवं 2015 में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।
3. सन् 2002 में 'एक जमीन अपनी' का अंग्रेजी अनुवाद ओशन पब्लिकेशन से 'दि क्रूसेड' नाम से प्रकाशन हुआ।
4. 'गिलिगडु' उपन्यास का पहला एवं पाँचवां संस्करण क्रमशः 2002 एवं 2010 में सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली से हुआ है।
5. 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा' का सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा क्रमशः पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा संस्करण—2016, 2017 और 2019 में प्रकाश में आया।

चित्रा मुद्गल जी की प्रथम कहानी 'सफेद अनारा' 25 अक्टूबर, 1964 ई. को मुंबई के नवभारत टाइम्स के रविवारीय अंक में प्रकाशित हुई थी जिसको पुरस्कार प्राप्त हुआ था। चित्रा मुद्गल जी की शेष कहानियाँ संग्रह के रूप में आई है जो निम्नलिखित है—

1. 'जहर ठहरा हुआ' नामक कहानी अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1980 ई. में प्रकाशित हुई है।
2. 'लाक्षागृह' का प्रकाशन सन् 1982 ई. में पराग प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया।
3. 'अपनी वापसी' कहानी संग्रह को सन् 1983 ई. में संभावना प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया।
4. 'इस हमाम में' कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1986 ई. में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया।
5. 'ग्यारह लंबी कहानियाँ' 1987 ई. में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली की ओर से चित्रा मुद्गल के कहानी संग्रह में से चुनकर प्रकाशित किया गया है।
6. 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं' नामक कथा संग्रह नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली द्वारा सन् 1992 ई. में प्रकाशित किया गया है।
7. चित्रा मुद्गल जी की चर्चित कहानियों को सन् 1994 ई. में 'सामयिक प्रकाशन' नई दिल्ली में 'चर्चित कहानियाँ' नामक शीर्षक से प्रकाशित करवाया।
8. 'मामला आगे बढ़ेगा अभी' प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1994 ई. में प्रकाशित हुआ।
9. 'जिनावर' कहानी संग्रह किताबघर, नई दिल्ली द्वारा सन् 1996 ई. में प्रकाशित किया गया।

10. 'लपटें' नामक कहानी संग्रह सन् 2000 ई. से 2004 ई. तक पाँच संस्करण में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित हुआ।
11. 'केंचुल' कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 2001 ई. में प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।
12. 'भूख' कहानी संग्रह सन् 2001 ई. में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।
13. 'बयान' लघुकथा संकलन है जिसका प्रकाशन सन् 2004 ई. में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया है।
14. चित्रा मुद्गल जी की संपूर्ण कहानियों को तीन खंडों में 'आदि अनादि' नामक शीर्षक से सन् 2007 ई. में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।
15. 'पेंटिंग अकेली है' सन् 2014 ई. में सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है।

चित्रा मुद्गल जी की कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद सन् 1988/98 ई. में 'दि हाइना एंड अदर सार्ट स्टोरीज' शीर्षक से ओशन बुक्स प्रा.लि. ने संकलित कर प्रकाशित किया।

बाल कहानी संग्रह

1. 'जंगल का राजा' वर्ष 1986 ई. में प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित।
2. 'देश-विदेश की लोक कथाएँ' सन् 1986 ई. में प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित।
3. 'नीति कथाएँ' सन् 1987 ई. में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् से प्रकाशित।
4. 'पेड़ पर खरगोश' सन् 2003 ई. में किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित।
5. 'सूझ बूझ' सन् 2004 ई. में प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित।

6. 'दूर के ढोल' सन् 2004 ई. में किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित।
7. 'कांच की किरच' सन् 2008 ई. में राजपाल एंड संस से प्रकाशित।
8. 'देश-विदेश की लोककथाएँ' पुनः सन् 2008 ई. में राजपाल एंड संस से प्रकाशित।

बाल-उपन्यास

1. 'मणिमेखलै' सन् 2001 ई. में साहित्य प्रकाशन से प्रकाशित।
2. 'जीवक' सन् 2001 ई. में साहित्य प्रकाशन से प्रकाशित।
3. 'माधवी कन्नगी' सन् 2002 ई. में किताबघर से प्रकाशित।

नाटक

1. 'पंच परमेश्वर तथा अन्य नाटक' वर्ष 2005 ई. में राजपाल एंड संस से प्रकाशित।
2. 'सद्गति तथा अन्य नाटक' वर्ष 2005 ई. में राजपाल एंड संस से प्रकाशित।
3. 'बूढ़ी काकी तथा अन्य नाटक' वर्ष 2005 ई. में राजपाल एंड संस से प्रकाशित।

आलेख-संग्रह

1. 'बयार उनकी मुट्ठी में' सन् 2004 ई. में सामयिक प्रकाशन से प्रकाशित।
2. 'विचार-संग्रह' सन् 1988 ई. में अभिनव प्रकाशन से प्रकाशित।
3. 'पार्टी' सन् 2011 ई. में बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित।

कथात्मक रिपोर्टाज

1. 'तहखानों में बंद आईनें अक्स' सन् 1988 ई. में अभिनव प्रकाशन से प्रकाशित।

2. 'तहखानों में बंद अक्स' सन् 2010 ई. और 2014 ई. में सामयिक प्रकाशन से प्रकाशित।

अनुवाद

1. पराग प्रकाशन, नई दिल्ली से, 'गुजराती की श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएं' प्रकाशित।
2. पराग प्रकाशन, नई दिल्ली से, 'गुजराती की श्रेष्ठ कहानियां' (अनुवाद) प्रकाशित।
3. गुजराती, मराठी, अंग्रेजी से ढेरों लेख एवं कहानियों का अनुवाद।

संपादित पुस्तकें

1. असफल दांपत्य की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1887, ई.।
2. टूटते परिवारों की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1887, ई.।
3. दूसरी औरत की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1887, ई.।
4. भीगी हुई रेत, आधुनिक प्रकाशन, बीकानेर, 1989 ई.।
5. पुरस्कृत कहानियाँ, संतोष प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989 ई.।
6. देह. देहरी, साहिल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989 ई.।
7. प्रेमचंद्र की प्रेम कहानियाँ, रोशनाई प्रकाशन, कोलकाता, 2005 ई.।

इसके अतिरिक्त चित्रा मुद्गल जी ने सात कहानी-संग्रह का संपादक कार्य किया है। कुछ कहानियों और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा को छोड़कर प्रथम तीनों उपन्यास और कहानियों का अनुवाद मराठी, पंजाबी, असमिया, बंगला, कन्नड़, उर्दू, अंग्रेजी इत्यादि देशी-विदेशी भाषाओं में विभिन्न विद्वानों में किया है।

3.1 उपन्यास

चित्रा मुद्गल जी ने अब तक कुल चार मौलिक उपन्यास का सृजन किया है। इन उपन्यासों की विषय-वस्तु मूलतः नारी और विज्ञापन की दुनिया का यथार्थ, नारी और कार्यस्थल पर नारियों की 'स्थिति, वृद्धों की समस्या और उनके समाधान का प्रयास और किन्नर जीवन की समस्या और उनके उपाय रही है, अर्थात् इनके उपन्यासों में संघर्ष और समाधान का प्रयोग किया गया है। इसके लिए इन्होंने नारी, वृद्ध और किन्नर को चुना है। इनके चारों उपन्यास क्रमानुसार निम्न हैं—

1. एक जमीन अपनी, 1990 ई.
2. आवां, 1999 ई.
3. गिलिगडु, 2002 ई.
4. पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, 2016 ई.

1. **एक जमीन अपनी—** चित्रा मुद्गल जी का यह प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में बाजार और स्त्री का मुद्दा उठाया गया है। बाजार में विज्ञापन के नाम पर स्त्रियों का शरीर किस प्रकार बेचा जा रहा है। हालाँकि चित्रा जी ने दो पात्र अंकिता और जीता का सृजन किया है जिसमें से एक पात्र बाजार में स्त्री का प्रतिरोध करती है तो एक बाजार में स्त्री का समर्थन करते हुए भोग एवं लिप्सा में लिप्त है। बाजार में ऐशोआराम से जीवनयापन कर रही है। नीता विज्ञापन में मॉडलिंग का काम करती है। वह विज्ञापन की फिल्में बनाती है जिसमें अर्धनग्न रूप में सजी-सँवरी अपनी काया का प्रदर्शन करती है। इतना ही नहीं विज्ञापन कंपनी के मालिक और बड़े अधिकार के लिए भी भोग एवं लिप्सा की वस्तु बनकर रह जाती है। वहीं दूसरी ओर अंकिता कोई समझौता नहीं करती। वह वस्तु नहीं बनती, वह एक सभ्य विज्ञापन देना चाहती है। नौकरी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के दायरे में रहकर करना चाहती है। इसलिए वह भोग, लिप्सा और स्त्री के वस्तु स्वरूप का प्रतिरोध करती है— “वह सुअर का बच्चा सक्सेना... आठ-नौ पेग्स उसके गले उतर चुके थे और उसके हाथ-पांव अपने वश में नहीं थे। उसने कंधे पर ही हाथ नहीं रखा था, पार्टी की बात थी, वरना वहीं

चप्पल उतार लेती, वह भी सीख जाता कि पार्टियों में लड़कियाँ बिकने नहीं आतीं, आती हैं तो उनके साथ कैसा सुलूक करना चाहिए, मगर जहर का घूंट पीकर रह गई, क्योंकि ऐसी जगह पर भर्त्सना करना उसे नंगा करना नहीं होता, अलबत्ता अपने कपड़े जरूर उतर जाते हैं...’’¹

2. **आवां—** इस उपन्यास में चित्रा मुद्गल जी ने नारी की कार्यस्थल पर स्थिति का चित्रण बारीकी से किया है। कार्य स्थल पर नारी के साथ छल और बल के साथ हो रहे शोषण के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया है। जिस घर में कोई पुरुष नहीं है उस घर की गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए नारी का बाहर सभ्य कहे जाने वाले समाज में विभिन्न तरीके से प्रत्येक स्थान पर शोषण, दमन और अत्याचार होता है। पहले सीधे तरीके से प्रहार करने का प्रयास किया जाता है लेकिन जब वह उसे स्वीकार नहीं करती तो छल और बल के साथ—साथ राजनीति के द्वारा उसका शोषण किया जाता है जिसे सीधी—साधी, भोली—भाली नारी जब तक समझ पाती है तब तक बहुत देर हो जाती है। विभिन्न सामाजिक संगठनों, राजनेताओं और सभ्य कहे जाने वाले समाज के ठेकेदारों के वास्तविक चेहरे के पीछे एक भेड़िये का चेहरा होता है जिसका पर्दाफाश चित्रा जी ने किया है। यही नहीं छल से किराये पर कोख और बड़े—बड़े व्यापारी की कपटपूर्ण धूर्तता की शिकार नारियों का चित्रण हुआ है। इसके साथ घर में भी नारियां सुरक्षित नहीं हैं। घर में उनके सगे—संबंधी और नाते—रिश्तेदार द्वारा शोषित और प्रताड़ित होती हैं। इन सबकी बड़ी खासियत यह है कि चित्रा जी ने प्रतिरोध और संघर्ष को भी रेखांकित किया है। वह इस समस्या से निजात पाने के लिए एक विकल्प भी देती जाती हैं, वह है प्रतिरोध और प्रतिशोध। इस उपन्यास में नमिता, देवीशंकर पाण्डेय, स्मिता, किशोरीबाई, सुनंदा इस उपन्यास के प्रतिनिधि पात्र हैं। साथ ही यह उपन्यास श्रमिक वर्ग की समस्या को भी उठाता है। इस वर्ग की समस्या को उठाने वाले नेता समाजसेवी निम्न श्रमिक वर्ग की महिलाओं का शोषण भी करते हैं। इस शोषण के खिलाफ चित्रा जी सकारात्मक दृष्टि से संघर्ष का सृजन करती हैं—

“हम लड़ेंगे साथी
उदारा मौसम के खिलाफ
हम चुनेंगे साथी
जिंदगी के टुकड़े।
हम लड़ेंगे जब तक दुनिया में
लड़ने की जरूरत बाकी है
हम लड़ेंगे कि लड़े बगैर
कुछ नहीं मिलता।
हम लड़ेंगे अब तक
लड़े क्यों नहीं!
जो लड़ते हुए मर गए
उनकी याद जिंदा रखने को
हम लड़ेंगे साथी,
हम लड़ेंगे....”²

आवां उपन्यास के संबंध में के. वनजा बहुत गंभीर और सटीक विश्लेषण करती हैं। उनका विश्लेषण आवां उपन्यास की परत दर परत खोलता है। वे विश्लेषण करती हैं— “यह उपन्यास जरूर संघर्ष की गाथा है। यह संघर्ष अनेक स्तरों पर है। एक ओर तो यह मानव जीवन का संघर्ष है। उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक का जीवन संघर्ष है, लेकिन दूसरी ओर उच्च वर्ग की दमन नीति के विरुद्ध जो संघर्ष है, वह इसमें ज्वलंत है। कंपनी मालिकों, उद्योगपतियों, माफिया वर्गों से संघर्ष करने वाला श्रमिक वर्ग है, रोजमर्रा की जिंदगी के लिए वे आजीवन प्रयत्न करते हैं, लेकिन पूंजीपतियों के शिकार बनने से उनकी जिंदगी कभी भी सुधरती नहीं। इसलिए उन्हें आजीवन संघर्ष करना पड़ता है। श्रमिकों में स्त्रियाँ एवं दलित हैं।”³

इस प्रकार आवां उपन्यास श्रमिक स्त्री और श्रमिक दलित स्त्री-पुरुष के यथार्थ के संघर्ष का जीता-जागता नमूना है जिसकी हत्या अनवरत ही जारी है।

3. **गिलिगडु**— यह उपन्यास वृद्ध जीवन पर केन्द्रित है। वृद्धों का जीवन आज के बाजारीकरण के दौर में मूल्यहीन बना दिया गया है। बाजार आज की पीढ़ी पर इतना हावी हो गया है कि वह अपने खून के रिश्ते एवं मानवीय संबंधों की बलि देता जा रहा है। अंधाधुंध विकास की दौड़ में माता-पिता को नाप-तोल रहा है। वृद्ध माता-पिता उसके विकास, ऐशो-आराम, झूठी शानो-शौकत और सुख-सुविधा में कांटे की तरह हो गए हैं। उन्हें अकेले छोड़कर वो अपने बीबी-बच्चों के साथ महानगरों एवं विदेशों में जा रहे हैं। अपने विकास एवं सुख में वो अपने वृद्ध माता-पिता की कोई दखल अंदाजी स्वीकार नहीं करते हैं। वो अपने में इतने व्यस्त हैं कि वृद्ध माता-पिता के दुःख-दर्द, स्वास्थ्य, इच्छा-अनिच्छा का ख्याल नहीं रखते हैं। यहाँ तक कि खुशी के मौके पर भी उनको सम्मिलित नहीं करते हैं। अपने वृद्ध माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास दो वृद्धों रिटायर्ड सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह और रिटायर्ड कर्नल विष्णु नारायण स्वामी पर केन्द्रित है जो अभिजात्य वर्ग से संबंध रखते हैं। इन वृद्धों के साथ बहिष्कार, तिरस्कार और हिंसात्मक व्यवहार भी होता है। साथ ही शर्मनाक और वाहियात आरोप भी लगाया जाता है। अकेलेपन से त्रस्त, हताश, निराश और अपमानित वृद्ध जीवन साथी ढूँढ़ रहे हैं। अणिमादास एक विधवा पेंशन भोगी रीडर हैं। वह जीवनसाथी के लिए अखबार में विज्ञापन निकलवाती हैं। वहीं दूसरी ओर जसवंत सिंह को इससे मुक्ति का एक उपाय सूझता है कि अपनी वसीयत किसी ऐसे व्यक्ति को क्यों न सौंप दी जाए जो उसकी देखभाल और सेवा-सुश्रुषा करे। उनकी नौकरानी सुनगुनिया है जिसे वो यह सौंपना चाहते हैं— "उन्हें समझ में नहीं आता कि लोग अपनी वसीयत बदलने का जोखिम क्यों नहीं उठाना चाहते। उन्हें क्यों नहीं समझ में आता कि वसीयत बदले बिना उनके जीवन में गति संभव नहीं।"⁴

इस प्रकार चित्रा मुद्गल जी ने वृद्धों की समस्या को उकेरते हुए उसके समाधान का विकल्प दे देती हैं। कुछ वृद्ध अपनी वसीयत को बदलकर अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं।

4. **पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा**— किन्नर जीवन केन्द्रित यह उपन्यास लेखिका के विषय से हटकर लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका किन्नरों की समस्या का चित्रण करते हुए उनके समाधान का विकल्प तलाशती हैं।

किन्नरों की समस्याओं का समाधान किन्नरों के संघर्ष के माध्यम से दर्शाती हैं। किन्नर जीवन केन्द्रित अब तक प्रकाशित अन्य उपन्यासों के सापेक्ष यह भिन्न है, इसकी भिन्नता इस बात में है कि यह उपन्यास किन्नरों की समस्या को न सिर्फ चित्रित करता है बल्कि उसके प्रतिरोध में संघर्ष भी करता है। किन्नरों के पारंपरिक जीवन से हटकर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और संघर्ष की बात करता है। किन्नरों के मनुष्य होने का संघर्ष करता है। किन्नरों के साथ हो रहे बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार के विरुद्ध संघर्ष करता है। यह संघर्ष अंत में एक समाधान लेकर उपस्थित होता है— ‘किन्नरों की घर वापसी।’ यह उपन्यास किन्नरों को ससम्मान घर वापसी की वकालत करता है। उपन्यास के नायक विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली के माध्यम से लेखिका कहती हैं कि किन्नरों को स्त्री-पुरुष से अलग रखकर अन्य में नहीं बल्कि उन्हें स्वैच्छिक रूप से स्त्री-पुरुष चुनने का अधिकार हो। आरक्षण की व्यवस्था अलग से नहीं बल्कि जिस जाति, धर्म और समुदाय में जन्म लेता है उसी के अंतर्गत उसे आरक्षण के अधिकार मिलने चाहिए। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, विकलांग, स्त्री आदि की तरह इन्हें भी मनुष्य समझ कर आरक्षण की व्यवस्था की जाए। इससे पहले किन्नरों की ससम्मान एक मनुष्य के रूप में घर वापसी का कानून बनना चाहिए। सभी माता-पिता उन्हें अपने सामान्य बच्चों की तरह सभी अधिकार और सम्मान प्रदान करें। विनोद सरकार से अपिल करता है— “मैं सरकार से अपील करता हूँ इस सभागार में, लिंग दोषी बिरादरी की घर वापसी को वह सुनिश्चित करें।”⁵

अतः चित्रा मुद्गल जी का यह उपन्यास किन्नरों की कूटनीति और संघर्ष का जीता जागता नमूना है। मनुष्य के रूप में घर वापसी का जीवंत दस्तावेज हैं।

उपर्युक्त चारों उपन्यासों के आधार पर हम पाते हैं कि चित्रा मुद्गल जी के उपन्यासों की विषय-वस्तु नवीन है जिसमें समस्या के चित्रण की अपेक्षा संघर्ष के माध्यम से समस्या के समाधान की तलाश जारी है।

3.2 कहानी

चित्रा मुद्गल जी मूलतः कथाकार हैं। कथाकार के रूप में वे जानी जाती हैं। उन्होंने लगभग चौदह पन्द्रह कहानी संग्रहों में 50 से अधिक कहानियों की रचना की है। इनकी कहानियों का फलक बहुआयामी है। स्त्री, श्रमिक, निम्नवर्ग और किन्नर के जीवन के बारीक से बारीक पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई हैं। उनके साथ हो रहे बहिष्कार, तिरस्कार, बलात्कार, शोषण, दमन, अत्याचार, छल, कपट इत्यादि पक्षों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। अर्थात् इनकी कहानियों के जीवन के बहुत स्वर को देखा जा सकता है। इनके अब तक प्रकाशित कहानी-संग्रह 'जहर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'इस हमाम में', 'जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं', 'मामला आगे बढ़ेगा अभी', 'जिनावर', 'लपटें', 'केंचुल', 'भूख', 'बयान', 'पेंटिंग अकेली है', 'ग्यारह लंबी कहानियां', 'चर्चित कहानियां', 'आदि-अनादि' है। इन कहानी-संग्रहों के आधार पर चित्रा मुद्गल जी की प्रतिनिधि कहानियों के माध्यम से उनके कहानी-साहित्य को समझने का प्रयास करते हैं।

1. सफेद सेनारा— चित्रा मुद्गल जी की पहली कहानी है जो सन् 1965 ई. में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी में एक स्थापित लेखक के छल-कपट पूर्ण प्रेम का पर्दाफाश किया गया है। वह शादीशुदा होते हुए भी एक युवा कवयित्री से प्रेम करते हुए सात वर्ष का बच्चा पैदा कर देते हैं फिर भी दूसरी शादी करने जाते हैं। तभी युवा कवयित्री इसका पर्दाफाश करती है।
2. लाक्षागृह— इस कहानी में एक अधिक उम्र की ऐसी लड़की की कहानी है जिसकी शादी इसलिए नहीं होती कि वह खूबसूरत नहीं है जबकि वह

नौकरी करती है। सुन्नी के माता-पिता भी नहीं चाहते कि उसकी शादी हो क्योंकि वह नौकरी करती है। ऑफिस के ही सिन्हा उससे इसलिए विवाह करना चाहते हैं कि वह उनका घर चलाएगी। वह इस्तीफा देकर पड़ोसी लड़का देवेन्द्र जिससे शादी करने से मना कर देती है खुद शादी का प्रस्ताव भेजती है लेकिन तब तक देवेन्द्र की शादी कहीं और तय हो चुकी होती है। अर्थात् विवाह न हो पाने की कुंठित नारी का चित्रण यहाँ पर हुआ है— “हिचकियों से उसका समूचा शरीर हिलने लगा। ‘उसके टूटे-टूटे से शब्द गुरभुरी बर्फ से माँ के कानों में गलने लगे, मैं देवेन्द्र से ब्याह के लिए तैयार हूँ।”⁶

3. अपनी वापसी— प्रौढ़ पति-पत्नी के रिश्ते में ठंडेपन के कारण अकेलापन और टूटन को चित्रित किया गया है। हालाँकि चित्रा जी तीसरे पात्र की एंट्री कराकर इस समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करती हैं। जिसे शकुन, हरीश और मेजर के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया गया है। मेजर अपने अकेलेपन और टूटन की जिम्मेदार अपनी पत्नी सुनीता को ठहराता है— “अपने में सिमटकर वह अपने से बाहर कुछ भी नहीं सोच पाती, प्रौढ़ता को उसने हताशा की खोह बना लिया है, सोचती है कि उसके जीने के दिन बीत चुके हैं। नहीं समझती कि उम्र के हर मोड़ का अपना रंग होता है। ऊष्मा होती है।”⁷
4. इस हमाम में— घर-घर से कचरा ढोने वाली अंजा और उच्च वर्ग की घर की मालकिन दिवा अपने-अपने पतियों के व्यवहार से प्रताड़ित होती रहती हैं। प्रतिरोध करने पर उसकी कीमत चुकानी पड़ती है।
5. जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं— इस कहानी में नेताओं के भ्रष्टाचारी और दोगले चेहरे को दिखाया गया है। चुनाव के समय समाजसेवी बनकर आते हैं और डकैत बनकर चले जाते हैं।
6. मामला आगे बढ़ेगा अभी— इस कहानी में छोटे-छोटे काम करने वाले निम्न और श्रमिक वर्ग की व्यथा और विवशता का चित्रण किया गया है।

7. जिनावर— इस कहानी में मानव और जानवर के बीच के संबंध को दर्शाया गया है। मानव स्वार्थी और मौकापरस्त होता है। जब तक जानवर उसके लिए उपयोगी होता है तब तक वह उसके लिए प्राणों से प्यारा है किंतु जैसे ही वह अनुपयोगी हुआ वह कूड़ा हो जाता है। इसमें तांगावाला असलम और उसकी घोड़ी सरवरी की कहानी है। असलम सरवरी की जान ले लेता है— “यही सोचकर कि अपनी मौत तो वह मरेगी ही, आगे—पीछे किसी गाड़ी से भिड़ा दूँगा, तो वह मरते—मरते अपनी फीस अदा कर जाएगी। ये नोट नहीं मेरी सरवरी की बोटियां हैं बोटियां....”⁸
8. केंचुल— इस कहानी में ऐसे गरीब माँ-बेटी की कहानी है जो दारू का धंधा करती है। वह पति और पिता से वंचित है। गरीब और उस पर घर में किसी पुरुष का न होना। ऐसे में समाज में उनका जीना मुश्किल होता है और पुरुष उनके प्रति लार टपकाते हुए व्यवहार करता है। माँ को बुरा लगता है गुस्से में जाती है लेकिन गरीबी के कारण विरोध नहीं कर पाती है। कमला की बेटी जीवनयापन के लिए सब्जी बेचने का काम करती है। वह एक लड़के से प्रेम कर बैठती है। सरजू कल्पू से विवाह करना चाहती है लेकिन कल्पू कहता है अभी कुछ दिन रुको। इस पर माँ कमला बेटी सरजू से कहती है कि शीघ्र करो। इन मर्दों का कोई भरोसा नहीं— “कब से क्या मतलब? बनाना है तो जल्दी बना, ठेरा काय को? हां पइसा नई हाएगा मेर से ले, पन जल्दी कर शादी, देर नई मंगता, भरोसा नई तेरा, ... कभी मुलुक को चला गया तो वापस नई आएगा तेरा... भैया लोगों का एतबार नई मेरे को।”⁹ इस प्रकार नारी अब पुरुषों के बहकावे में नहीं आने वाली। वह पुरुषों की छल-कपट नीति को समझ चुकी है।
9. भूख— इस कहानी के माध्यम से आजाद भारत के 75 साल बाद भी गरीबी, जहालत, बलात्कार और तिरस्कार भरे जीवन का चित्रण किया गया है। घर में पति और पिता की मृत्यु हो जाने पर पत्नी को सेठ वहशियों के कारण नौकरी नहीं मिलती। भूख को मिटाने के लिए बच्चे को भिखारिन को किराये पर दे देती है लेकिन उसे भरपेट खाना नहीं देती वह भिखारिन। अंत में

भूख के कारण उसकी आंत चिपक जाती है जिसके कारण वह मर जाता है अस्पताल से खबर आती है— “बच्चा भूख से मर गया उसकी आंत सूखकर चिपक गई थी।”¹⁰

10. वाइफ स्वैपी— आज के दौर में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है। पति—पत्नी के रिश्ते में शारीरिक संबंध के मूल्य भी बदल रहे हैं। आज बीवियों की अदला—बदली हो रही है, जिसमें पुरुष तो खुश है ही, स्त्रियाँ भी खुश हैं लेकिन कुछ स्त्रियाँ जो भारतीय संस्कृति और स्त्री—पुरुष के शारीरिक संबंध के मूल्य को समझती हैं वह खुश नहीं हैं लेकिन सतीत्व के आवरण में प्रतिरोध नहीं कर पा रही हैं। ‘वाइफ स्वैपी’ कहानी इसी का पर्दाफाश करती है— “वो आदमी है कि पायजामा। जानते हो, कहाँ ले गया मुझे? मौर्या शेरेटन। ऐसी सहमी हुई थी कि उसकी गाड़ी में पांव देते ही सीधा हनुमान चालीसा का जाप शुरू कर दिया। क्षमा मांगी। रावण इसको नहीं ले जा रहा, सीता माता स्वेच्छा से उनके संग जा रही है। स्वेच्छा से न जा रही होती तो उसकी गाड़ी में चढ़ने से मना कर देती। कैसे मना करती पति—इच्छा को जो अपनी इच्छा बना लिया था। सतीत्व का धर्म उसका धर्म। सो मन ही मन प्रभु को पुकारा। ऐसा चक्कर चलाओ प्रभु कि पति की इच्छा भी पूरी हो जाए और सतीत्व का सत भी न टूटे।”¹¹ इस प्रकार यह कहानी भी उच्च वर्ग के पति—पत्नी की है जो एक गेम की तरह है जिसमें पत्नियों की अदला—बदली या यूँ कहें कि पतियों की अदला—बदली करके शारीरिक सुख की आड़ में नैतिकता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर रहे हैं।

इस प्रकार कुछ महत्वपूर्ण कहानियों के माध्यम से हमने चित्रा जी के कहानी—साहित्य को समझने का प्रयास किया। इनकी कहानियों में स्त्री की सहमति, असहमति, संघर्ष और प्रतिरोध का सफल चित्रण हुआ है। नारी जाग चुकी है। वह किसी प्रकार का शोषण, अत्याचार, दमन और बलात्कार स्वीकार नहीं करती भले ही भुक्तभोगी क्यों न हो वह प्रतिरोध और संघर्ष करती है। निम्न वर्ग, श्रमिक वर्ग, वेश्या जीवन का भी चित्रण संघर्ष के साथ दिखाया गया है। पारिवारिक रिश्तों में

बदलाव, व्यवस्था विरोध, बदलते मूल्य एवं नौकरी-पेशा नारी का संघर्ष निम्नवर्गीय नारी का संघर्ष, स्त्रियों का स्त्रियों द्वारा शोषण जैसे विषयों को चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। अतः इनकी कहानियाँ जीवन के बहुपक्षीय मुद्दों को उठाने वाली हैं।

3.3 बाल उपन्यास

चित्रा मुद्गल जी ने स्त्री, पुरुष और किन्नर के साथ-साथ बालकों और बालिकाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई हैं। बच्चों के मनोजगत् को अच्छी तरह समझ-बूझकर उनको अच्छे संस्कार देने के लिए मिथक, लोक कथा, वीर योद्धाओं, महानायकों, सद्चरित्रों के माध्यम से साहित्य का सृजन किया है। भारत में प्राचीन काल से पंचतंत्र, बेताल पच्चीसी, जातक कथाएँ बाल शिक्षा के लिए रही हैं। चित्रा जी अपने बाल उपन्यासों में सामाजिक, परिस्थितिगत ज्ञान, ग्लानि, पश्चाताप, सत्य के मार्ग पर चलना, समाज सेवा और बुद्धिमत्ता एवं वीरता आदि की शिक्षा देती हैं। इन्होंने अब तक तीन बाल उपन्यास लिखे हैं। इनके बाल उपन्यासों के बारे में डॉ. कल्पना पाटील लिखती हैं— “बाल उपन्यासों का कथानक बालकों के मनोविश्व का विचार करके लिखा है। कुमारवयीन बालकों के लिए वह ज्यादा संस्कारक्षम है। बाल उपन्यासों का अंत विरक्ति तथा भगवद् भक्ति से संबंधित है। चित्रा जी के बाल उपन्यासों का एक महत्व यह है कि उसमें स्थित संस्कार बड़े लोगों के लिए भी है।”¹² इनके उपन्यास— ‘माधवी कन्नगी’, ‘मणिमेखलै’ और ‘जीवक’ हैं।

1. माधवी कन्नगी— यह बाल उपन्यास दस भागों में विभाजित है। यह उपन्यास प्राचीन तमिल साहित्य में ‘शिल्पधिकारम्’ महाकाव्य पर आधारित है। इस उपन्यास में माधवी, कन्नगी, मणिमेखलै और कोवलन के माध्यम से शिक्षा दी गई है। बालकों को मनोरंजन के साथ-साथ मानवीय और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा दी गई है। माधवी के माध्यम से सौंदर्य नश्वर और क्षणिक होता है, मणिमेखलै के माध्यम से अच्छे लोगों के चरित्र का अनुकरण करना चाहिए, कोवलन के जरिए अपनी गलती को स्वीकार कर सुधारना चाहिए और कन्नगी के माध्यम से घर गृहस्थी, सामाजिक परिस्थिति का ईमानदारी व धैर्य से सामना करना चाहिए। कन्नी एक आदर्श पत्नी है पतिव्रता है, पति का सम्मान करती है यह जानकर भी कि वह चरित्रहीन है

जिससे वह शर्मिदा और ग्लानि से ग्रस्त हो जाता है— “आइए स्वामी! आपका स्वागत है! भीतर चलकर आराम कीजिए। मैं आपके लिए जलपान तैयार करती हूँ।”¹³

2. मणिमेखलै— तमिल महाकाव्य ‘शिलप्पधिकारम्’ की कथावस्तु के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है जिसमें नायिका मणिमेखलै के माध्यम से चित्रा मुद्गल जी ने जीवन में धन कमाने की अपेक्षा जनसेवा का उद्देश्य होना चाहिए की शिक्षा देती हैं। भूखे लोगों को भोजन उपलब्ध कराने की शिक्षा देती हैं। मणिमेखलै धन कमाने और शादी करने के प्रस्ताव को ठुकरा कर आजीवन भूखों को भोजन उपलब्ध कराती है। इससे बालकों को जनसेवा की शिक्षा प्राप्त होती है।

3. जीवक— इस उपन्यास का नायक ‘जीवक’ है जो अपने पिता के हत्यारों से बल, बुद्धि और विवेक द्वारा प्रतिशोध लेता है। जैसे को तैसे की भाषा में जवाब देता है और अपना राज्याधिकार वापस प्राप्त करता है। इससे बालकों को बल, बुद्धि, विवेक, प्रतिशोध, त्याग, तपस्या जैसी महत्वपूर्ण शिक्षा प्राप्त होती है।

अतः चित्रा मुद्गल जी के बाल उपन्यास बालकों और बालिकाओं को सामाजिक, चारित्रिक, राजनीतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक और समाज सेवा की शिक्षा देते हैं। साथ ही कूटनीति, त्याग, तपस्या, प्रतिशोध की भी शिक्षा देते हैं। अतः इनके उपन्यासों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा भी मिलती है।

3.4 बाल कहानी

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी बाल कहानियों में भारतीय एवं विदेशी लोक कहानियों का आधार लिया है। विदेशों में कजाकिस्तान, चीन, मंगोलिया, मिआओ, हेन, तिब्बत तथा कोरिया देश शामिल हैं। इन देशों की दंतकथा, परिकथा, नीतिकथा और बोधकथा को कहानियों में रूपायित किया गया है। इन कथाओं के माध्यम से चित्रा मुद्गल जी ने बालकों में साहस और जिज्ञासा निर्माण करने की कोशिश की है। चित्रा मुद्गल जी के बाल कहानी संग्रह— ‘जंगल का राजा’, ‘पेड़ पर खरगोश’, ‘सूझ बूझ’, ‘दूर के ढोल’, ‘कांच की किरच’, ‘नीति कथाएँ’ और ‘देश

विदेश की लोककथाएं' हैं। यहाँ हम चित्रा मुद्गल जी की चर्चित और प्रतिनिधि लोक कहानियों के आधार पर उनकी बाल कहानियों को समझेंगे।

‘राजा और गरीब आदमी’ कहानी में बूढ़ा आदमी, उसका बेटा और राजा के माध्यम से बुद्धिमान और मूर्ख व्यक्ति की कहानी बताई गई है जिसमें बुद्धिमान व्यक्ति की जीत होती है। बुद्धि से हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है चाहे वो व्यक्ति गरीब ही क्यों न हो। साथ ही तीन बातें सीखने को मिलती है— जिस पर विश्वास न हो उसे दोस्त मत बनाओ, जो खानदानी रईस नहीं उससे कर्ज मत लो, रहस्य की बात कभी अपनी पत्नी को भी मत बताओ। सच और बुद्धि कभी किसी से डरती नहीं। बूढ़ा आदमी राजाज्ञा मानने से इंकार करता है— “हम राजा के लिए कुछ नहीं करेंगे। उसने हमें बिना कसूर के ज़िंदा गड़वाकर मारने की कोशिश की है।”¹⁴ फिर भी उसे जबरदस्ती सैनिक पकड़ ले जाते हैं और उससे माफी मांगते हैं तब जाकर वह राजा की मदद करता है।

‘मर्मस्थल’ चीनी लोककथा है। पहाड़ पर मिट्टी खोदने वाले आदमी के माध्यम से यह शिक्षा दी गई है कि आए हुए संकट का सामना धैर्य व अक्ल से करना चाहिए। संकट टल जाता है। ‘प्रतिशोध’ कहानी ‘मंगोलिया’ की लोककथा है जिसमें उलान बेयरे नामक युवक अपने पिता के हत्यारे क्रूर राजा से प्रतिशोध करता है। ऐसे समय में जो मदद करता है वही सच्चा मित्र होता है। दुश्मनों से अकेले और आवेश में आकर नहीं भिड़ना चाहिए। सच का साथ सभी देते हैं। ‘सिस्टर लैस’ मिआओ देश की लोककथा है। इस कथा में सिस्टरलैस नामक सुंदर युवती के माध्यम से यह शिक्षा दी गई है कि किसी को कमजोर समझकर प्रताड़ित नहीं करना चाहिए। उसके साथ जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए नहीं तो सब कुछ सर्वनाश हो जाता है। ‘निश्चय ही’ हेन की लोककथा हैं जिसमें पेपर बील नामक किसान के जरिए यह बताया गया है कि अपने स्वार्थ में किसी को मुसीबत में जानबूझकर नहीं धकेलना चाहिए अन्यथा वह मुसीबत खुद पर आ जाती है। ‘जादुई चिड़िया’ नामक कहानी मंगोलिया की लोककथा है जिसमें एक पहाड़ी बुद्धिमान और हाजिर जवाब चिड़िया के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि अपनी सुरक्षा अपने हाथ में होती है। स्वयं को अपने मालिक से कैसे बचाना है, स्वार्थी और धूर्त मूर्ख मालिक के यहाँ नहीं रहना चाहिए। मालिक की भी जाँच

परख करके ही उसके साथ अपने को रखना चाहिए— “बादशाह! आपने भले ही मुझे आसानी से पकड़ लिया है, मगर मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि जब हम साथ चल रहे हैं, न तो हम चुप चलेंगे न आप किसी बात पर गहरी आह भरेंगे। जैसे ही आपने आह भरी, मैं पलक झपकते फुर्र हो जाऊँगी।”¹⁵

‘खुशहाली की चिड़िया’ नामक कहानी में तिब्बती लोककथा है जिसमें बहादुर वाग्जिया के द्वारा यह शिक्षा दी गई है कि दूसरे की बुराई नहीं करनी चाहिए, दूसरे के माँ और दादा को अपना माँ और दादा समझना चाहिए, किसी की आँख नहीं फोड़ना चाहिए अपने स्वार्थ में। आत्मविश्वास के साथ समाज के लिए मर मिटना चाहिए लगन व मेहनत जरूर सफलता दिलाती है। ‘जादुई थैला’ नामक कहानी कोरियाई लोककथा है जिसमें एक जवान गरीब पति-पत्नी के माध्यम से यह शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा कर्म करते रहना चाहिए। अगर धनवान भी हो जाओ तब भी ईमानदारी से मेहनत करते रहना चाहिए नहीं तो वो दिन दूर नहीं जब आप फिर गरीब बन जाएँगे।

इस प्रकार चित्रा मुद्गल जी के बाल कहानी में विभिन्न जीवन से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों बुद्धि, धैर्य, मित्रता, प्रतिशोध, ईमानदारी इत्यादि की मानवीय, नैतिक और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की गई है। साथ ही बच्चों के मनोरंजन का भी ध्यान दिया गया है।

प्रस्तुत अध्याय ‘चित्रा मुद्गल का रचना संसार’ अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। लेखिका ने मूलतः उपन्यास, कहानी, बाल उपन्यास और बाल कहानी के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों को विषय-वस्तु बनाया है। स्त्री-पुरुष के घर-परिवार और समाज में बदलते संबंध और स्वर, श्रमिक वर्ग और निम्नवर्ग के जीवन के विभिन्न पहलुओं, किन्नर जीवन के मनुष्य होने का संघर्ष, बाल बच्चों को मानवीय, नैतिक और मूल्यवान शिक्षा इत्यादि इनके कथा-साहित्य के मूल विषय हैं। अतः चित्रा मुद्गल जी का रचना संसार जीवन और जगत में बदल रहे मानवीय, नैतिक और मूल्यपरक रिश्तों के उद्देश्य से परिपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- 1 चित्रा मुद्गल, एक जमीन अपनी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण—2009, पृष्ठ 34
- 2 चित्रा मुद्गल, आवां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, आठवां संस्करण—2015, पृष्ठ 540—541
- 3 के. वनजा, चित्रा मुद्गल एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, सं.—2016, पृष्ठ 88
- 4 चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.—2010, पृष्ठ 143
- 5 चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.—2019, पृष्ठ 186
- 6 चित्रा मुद्गल, आदि अनादि भाग—1, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 241
- 7 वही, पृष्ठ 174
- 8 चित्रा मुद्गल, आदि—अनादि भाग—3, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 32
- 9 चित्रा मुद्गल, आदि—अनादि भाग—1, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 71
- 10 वही, पृष्ठ 15
- 11 वही, पृष्ठ 8
- 12 डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुद्गल का कथा—साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.—2012, पृष्ठ 273
- 13 चित्रा मुद्गल, माधवी कन्नगी, किताबघर, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ 13
- 14 चित्रा मुद्गल, देश विदेश की लोककथाएँ, राजकमल एण्ड संस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 05
- 15 वही, पृष्ठ 31



चतुर्थ अध्याय

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा
में अभिव्यक्त किन्नर जीवन



चतुर्थ अध्याय

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा

में अभिव्यक्त किन्नर जीवन

किन्नर जीवन सदैव से बहिष्कृत एवं तिरस्कृत रहा है। किन्नर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीति आदि क्षेत्र में भी नहीं प्रवेश पाते हैं। यह उपन्यास इन सभी क्षेत्रों में उनको प्रवेश दिलाने के संघर्ष की कहानी है। किन्नरों को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए राजनीतिज्ञों का एक मुख्य विषय है कि इनको स्त्री-पुरुष से इतर लिंग का दर्जा देकर आरक्षण का प्रावधान कर दिया जाए लेकिन यह उपन्यास आरक्षण की वकालत न करते हुए उन्हें सामाजिक पहचान दिलाने की वकालत करता है। जिस प्रकार समाज ने उन्हें बहिष्कृत और तिरस्कृत करके घर और समाज की पहचान से निकाल दिया, उसी प्रकार ससम्मान उन्हें घर और समाज स्वीकार करके उन्हें भी स्त्री-पुरुष की भाँति जीवनयापन करने का मौका दें। उन्हें भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीति, इत्यादि जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्री-पुरुष के समान अधिकार प्रदान करें। यह उपन्यास मूलतः किन्नरों को सामाजिक पहचान दिलाने वाला एक सशक्त दस्तावेज है।

4.1 समाज द्वारा बहिष्कृत एवं तिरस्कृत किन्नर

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा उपन्यास का नायक विनोद उर्फ विमली उर्फ दीकरा है। जैसे ही यह समाज को पता चलता है कि विनोद न स्त्री है और न पुरुष वैसे ही किन्नरों का सरदार उसे अपने समाज का बताती हुई लेने आ धमकती है। बिन्नी के माता-पिता समाज के भय से बात छुपाते हैं लेकिन अंततः वे बिन्नी को समाज और नाते-रिश्तेदार के भय से किन्नरों को सौंप देते हैं। यह बिन्नी का घर से बहिष्कार है। उसके माता-पिता इतना सक्षम थे कि उसे किन्नरों के समुदाय से बचा सकते थे लेकिन लोकापवाद के कारण उसे किन्नरों को सौंप दिए। यह बहिष्कार बिन्नी के लिए एक बकरी को कसाई के हाथ सौंपने के जैसा

था— “तूने, मेरी बा, तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाइयों के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया।”¹

बहिष्कार और तिरस्कार किसी भी प्राणी को प्रतिरोधी स्वर प्रदान करता है। उसके भीतर बदले की भावना का समावेश आ जाता है। वह मानवता और इंसानियत के दुश्मनों से मुठभेड़ के लिए तत्पर रहता है। किन्नरों के लिए सबसे पहले उनके माता-पिता ही बहिष्कार और तिरस्कार के मूल कारण हैं। अगर वो उन्हें स्वीकार कर लें तो समाज उन्हें धीरे-धीरे स्वीकार कर ही लेगा।

समाज और किन्नरों के भय से जब बिन्नी के छुट्टी लेने की बात कही जाती है तो वह छुट्टी लेने से मना कर देता है और स्कूल जाने की जिद करता है। वह सभी लड़के-लड़कियों की तरह स्कूल जाकर पढ़ना चाहता है और टॉप करके सबको बताना चाहता है कि मैं भी इंसान हूँ, तुम्हारे जैसे ही— “मुझे छुट्टी नहीं करनी। मेरी पढ़ाई बर्बाद हो रही है। पिछड़ जाऊँगा मैं अपनी कक्षा में। पिछड़ना नहीं चाहता मैं। मैं बोर्ड टॉप करना चाहता हूँ। मैं टॉप कर सकता हूँ पप्पा! मैं टॉप करके दिखाऊँगा। मुझे स्कूल जाने दो... प्लीज पापा प्लीज।”²

किन्नरों को लेकर समाज ने जो धारणा बना दी है उससे निकलना बहुत कठिन है, लेकिन नामुमकिन नहीं। आजकल के माता-पिता पेट में ही बच्चे को देखकर आश्वस्त होना चाहते हैं कि वह ठीक-ठाक है या नहीं। लड़का-लड़की कुछ भी हो चलेगा लेकिन लिंगदोषी न हो इसलिए सोनोग्राफी से बच्चे को चेक करवा लेते हैं। इसके बाद भी बिन्नी के बड़े भाई सिद्धार्थ को डर बना रहता है। वह अपनी माँ से माँ और पिता जी के खानदान के बारे में पूछ बैठता है। यहाँ तक कि कमरे से बिन्नी की तस्वीर भी निकलवा देता है। कहीं ऐसा न हो कि उसकी पत्नी पर उसका बुरा प्रभाव पड़े— “बा, अपने कमरे में तुमने बिन्नी की तस्वीर क्यों टांग रखी है? सेजल की निगाह उस पर पड़ती नहीं होगी? कभी सोचा है तुमने उसके मन पर क्या प्रभाव पड़ता होगा?”³ अर्थात् किन्नर का ख्याल भी इंसान अपने लिए घातक मान रहा है जो कि उसके भाई-बन्धु ही हैं।

किन्नरों को न सिर्फ घर से बहिष्कार किया जाता है बल्कि उन्हें मृत मान लिया जाता है। उनसे बात करना, मिलना, देखना कुछ भी समाज और घर वाले स्वीकार नहीं करते सिवाय माँ के— “तो तुझे मेरी कसम है बा! छूट दे दे मुझे। प्लीज बा, प्लीज कि हर रोज सुबह-शाम मैं तुझे ज्यादा नहीं, मात्र मिनटभर के लिए फोन कर सकूँ।”⁴

एक किन्नर अपने पिता से मिलने जाता है तो वह उसे डंडा लेकर दौड़ने लगता है। वह उसे डूब मरने का श्राप देता है— “तेरी जगह साबुत बेटा पैदा हुआ होता तो इस उमर में सहारा बनता। करमजला तू किस काम का हमारे लिए।”⁵ जब कोई उसे ‘किन्नर’ कहता है तो उसे बहुत अपमान महसूस होता है। किन्नर शब्द उसे बरमें की पैनी नोंक सा धंसने लगता है। “किन्नर शब्द चुभ गया पीठ पर। धंसने लगा रीड में बरमें की पैनी नोक सा।”⁶ इतना ही नहीं वह स्वयं को तिरस्कृत मानता है और उसका दिल एवं दिमाग सुलग उठता है— “... किन्नर शब्द सुनते ही अवमानना न चाहते हुए भी क्यों सुलग उठती है।”⁷ किन्नर शब्द उसे बहुत आहत करता है। उसके घावों को कुरेदता है। वह उतना ही आघात पहुँचाता है जितना हिजड़ा। “... सुनने में किन्नर शब्द भले ही गाली न लगे मगर अपने निहितार्थों में वह उतना ही क्रूर और मर्मन्तक है, जितना हिजड़ा। किन्नर की सफेदपोशी में लिपटा चला आता है, उसकी ध्वन्यात्मकता में रचा-बसा। कोई भूले तो कैसे भूले?”⁸

किसी भी इंसान के लिए इससे बड़ा तिरस्कार और क्या हो सकता है जब खुद उसके माता-पिता उसे जिंदा रहते हुए मृत घोषित कर दें। बिन्नी के साथ ऐसा ही हुआ। उसे किन्नरों को सौंप उसके माता-पिता स्कूल, परिवार, समाज, नाते-रिश्तेदार हर जगह सड़क दुर्घटना में मृत्यु की घोषणा कर देते हैं। जब बाद में बिन्नी को यह उसके स्कूल के दोस्त से पता चला तो वह सिर्फ आत्महत्या करने की सोचा, वह बिल्कुल टूट गया— “शहर में मरूँगा तो लाश किन्नरों के हाथ लगेगी। किन्नरों के विधि-विधान से मौत का निपटारा होगा। किन्नर के रूप में मैं मरना नहीं चाहता। अपनी मर्जी से मर सकता हूँ तो मौत का निपटारा भी मेरी मर्जी से ही होना चाहिए। ऊँचे पहाड़ पर जाकर मरना उचित होगा।”⁹

4.2 शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्सुक किन्नर

इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका यह बताना चाहती हैं कि आज का किन्नर समाज शिक्षा ग्रहण करना चाहता है। वह भी आम जनमानस की तरह इंसान बनकर जीवनयापन करना चाहता है। बिन्नी, पूनम, चन्द्रा जैसे किन्नर इस उपन्यास के प्रतिनिधि पात्र इसका जीता-जागता नमूना है। जब किन्नरों को पता लग जाता है कि विनोद किन्नर है तो उसके माता-पिता उसकी स्कूल से छुट्टी ले लेते हैं, मेडिकल पर। इस पर बिन्नी घबरा जाता है— “पापा, मैं घर में बैठकर नहीं पढ़ूँगा, सबके साथ पढ़ूँगा। अपनी ही कक्षा में बैठकर। मुझे स्कूल जाना है। मैं अपना ध्यान रखूँगा। अपनी हिफाजत खुद करूँगा। कब तक मैं अपने सहपाठियों से टेलीफोन पर होमवर्क नोट करता रहूँगा, पापा?”¹⁰

बिन्नी जब किन्नरों की बस्ती में विस्थापित कर दिया जाता है तो भी वह अपनी पढ़ाई करना चाहता है। इसके लिए उसका साथ एक किन्नर पूनम जोशी देती है। वह उसकी पढ़ाई के लिए अपने व्यक्तिगत खर्च से बचा कर आठ हजार रुपये इकट्ठा की थी। जब वह हताश होकर आत्महत्या करने के लिए मंसूरी जाने के लिए पूनम से पैसा मांगा था तब वह यह कहकर उसे आत्महत्या करने से रोक देती है— “ले, ले जाकर जहर खरीद ले अपने लिए! पाई-पाई जोड़ी थी तेरी पढ़ाई के लिए। मिनमिनाता रहता है न हरदम?”¹¹ इस प्रकार शिक्षा आत्महत्या के इरादे को नेस्तनाबूद कर देती है।

विधायक जी की कृपा और पूनम जोशी एवं चन्द्रा के सहयोग से वह कम्प्यूटर के बेसिक प्रोग्राम में प्रवेश पा जाता है। कम्प्यूटर को ऑन-ऑफ करना सीखने के बाद उसे लगा कि वह अपनी जिंदगी के सारे बंद दरवाजे खोलने के योग्य हो गया है— “कंप्यूटर क्लासेज में प्रवेश के साथ ही कंप्यूटर को ऑन-ऑफ करना सीख लिया जब, तभी लगा मैं अपने लिए बा सारी दुनिया के दरवाजे खोलने जा रहा हूँ...।”¹²

कंप्यूटर सीखने के बाद वह किन्नरों का ठिकाना छोड़ जब विधायक जी के यहाँ नौकरी पर जाने लगता है तब चन्द्रा और पूनम को अपनी पढ़ाई की चिंता

होती है। चन्द्रा रोते हुए कहने लगती है कि हम कैसे पढ़ेंगे अब? तब बिन्नी उन दोनों के लिए एक ट्यूटर रख के जाता है जिसकी फीस वह खुद भरेगा। चन्द्रा का पढ़ाई के लिए उत्सुकता देखने लायक है— “हमारी पढ़ाई का क्या होगा?”¹³

बिन्नी, चन्द्रा और पूनम ये तीन पात्र आज के किन्नरों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यह चाहते हैं कि वह भी आम जन की तरह पढ़े-लिखें, नौकरी करें। सामान्य स्त्री-पुरुष की भाँति समाज में रहकर अपना जीवनयापन करें। वह किन्नरों का अभिशप्त जीवन नहीं जीना चाहते हैं। अगर विधायक जी जैसे समाज के प्रतिनिधि लोग उनको सिर्फ मौका दें तो वह सब कुछ कर सकते हैं। दुनिया का कोई कार्य नहीं जो वह नहीं कर सकते, सिवाय बच्चे जनने के। वह भी संभव है— गोद लेकर और सरोगेसी मदर के माध्यम से।

4.3 सामाजिक पहचान के लिए संघर्षरत किन्नर

इस उपन्यास में दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों की तरह किन्नरों को भी समाज में न्याय दिलाने की बात जोर-शोर से उठाई गई है। विधायक जी और उनकी पार्टी द्वारा सामाजिक न्याय के लिए किन्नरों को तृतीयलिंग और आरक्षण का मुद्दा बनाया गया है वहीं दूसरी ओर बिन्नी या विनोद आरक्षण की बजाय किन्नरों की सामाजिक पहचान का मुद्दा उठाता है। वह किन्नरों को अन्य लिंग में नहीं बल्कि स्त्री और पुरुष लिंग में ही स्वेच्छा से शामिल होने का अधिकार दें तथा किन्नरों की घर वापसी कराई जाए यही उनके बहिष्कार और तिरस्कार का सम्मान होगा तथा उनके साथ सामाजिक न्याय और पहचान होगी।

बिन्नी की नज़रों में किन्नरों की मुक्ति का सिर्फ एक ही रास्ता है। वह रास्ता है शिक्षा। जरूरी नहीं कि हम बड़ी-बड़ी डिग्रियों के लिए ही पढ़ाई करें। आवश्यक यह है कि हम इतना पढ़ लें कि कुछ अच्छे उपन्यास पढ़ सकें जिससे कि उनके चरित्रों पर बात कर सकें। विचार-विमर्श कर सकें। विचार-विमर्श करके अपने लिए रास्ता निकाल सकें। बिन्नी पूनम जोशी से कहता है— “पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है। कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया है हमारे लिए।”¹⁴

बिन्नी एक तरफ है तो दूसरी तरफ राजनीतिक पार्टी के नेतागण। वो चाहते हैं कि किन्नरों को अन्य लिंग में डालकर आरक्षण दे दिया जाए जिससे पार्टी का वोट बैंक मजबूत होगा और किन्नरों के अम्बेडकर विनोद उर्फ बिन्नी होंगे। वहीं दूसरी ओर विनोद इससे सहमत नहीं है। वह समाज में किन्नरों की घर वापसी चाहता है। उन्हें भी स्त्री-पुरुष की भाँति जीवनयापन करने की इजाजत माँगता है— “जरूरत है सोच बदलने की, संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी, तभी जब अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें कूड़े में नहीं फेंकेंगे। ट्रांसजेंडर के खांचे में नहीं ढकेलेंगे। यह पहचान जब उन्हें किन्नरों के रूप में जीने नहीं दे रही समाज में तो सरकारी मान्यता मिल जाने के बाद जीने देगी? किन्नरों के रूप में समाज ने उन्हें उस खांचे में सदियों पूर्व ढकेल कर रखा हुआ है। उसी रूप में उन्हें आरक्षित करके सरकार अभिभावकों को अपराध मुक्त कर खुली छूट दे रही है। पैदा होते ही वह लिंग दोषी बच्चों को ट्रांसजेंडर जमात के हवाले कर दें, छुट्टी पा ले अपनी जिम्मेदारी से।”¹⁵

आज का किन्नर समुदाय डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक इत्यादि बनकर समाज के सभी सामाजिक संबंधों को जीना चाहता है। वह स्वाभिमान चाहता है। बहिष्कार और तिरस्कार के बदले स्वीकार और सम्मान चाहता है। वह ऐसे नियम बनाने के लिए सरकार से अपील करता है— “मैं सरकार से अपील करता हूँ इस सभागार में, लिंगदोषी बिरादरी की घर वापसी को वह सुनिश्चित करे।”¹⁶

किन्नरों को जीरो अदर्स के अलग खांचे में रखकर आरक्षित न करे। उसको भी अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग, विकलांग आदि की भाँति उसी वर्ग में मनुष्य की श्रेणी में रखें। वह भी मानव हैं। उनकी दिनचर्या भी स्त्री-पुरुष की भाँति है। बस वे सिर्फ बच्चे को जन्म नहीं दे सकते अर्थात् किन्नरों का संघर्ष उन्हें मनुष्य मानने का संघर्ष है। समाज उन्हें मनुष्य माने और बहिष्कृत एवं तिरस्कृत न करे— “किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने जाने का संघर्ष है।”¹⁷

किन्नरों को अपना लिंग चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उन्हें शादी-ब्याह करने के लिए छूट होनी चाहिए। चाहे जिस जाति और धर्म में वो जन्म लें उन्हें सामान्य बच्चों की तरह सामान्य जीवनयापन करने की सुविधा मिलनी चाहिए। उस जाति और धर्म के सभी अधिकार मिलने चाहिए। उनके लिंग को लेकर कोई सुखी नहीं बननी चाहिए। उनके पास सिर्फ बच्चे पैदा करने के प्रकृति प्रदत्त गुण नहीं है बाकी सभी प्रकृति प्रदत्त गुण है— “.....किन्नर चाहे जिस भी वर्ग की संतान हों, चाहे जिस जाति-बिरादरी, समुदाय से संबंधित हों, उसी जाति-वर्ग के अनुसार उन्हें अपना सामान्य जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए। अगर वे आरक्षित श्रेणी के माता-पिता की सन्तानें हैं तो वे उस आरक्षित श्रेणी को प्राप्त होने वाली सुविधाओं के हकदार हैं। समर्थ माता-पिता के समक्ष उनके समुचित भरण-पोषण की दिक्कत है ही नहीं। उन्हें जरूरत है तो जागरूकता की।”¹⁸

उपर्युक्त विश्लेषणों से स्पष्ट है कि यह उपन्यास किन्नरों की सामाजिक अस्मिता की पहचान की वकालत करता है। सामान्य स्त्री-पुरुष की भाँति जीवनयापन करने की मांग का जीता-जागता नमूना बिन्नी उर्फ विनोद उर्फ विमली उर्फ दीकरा है।

4.4 किन्नरों का यौन शोषण

किन्नरों का दोहरा-तिहरा शोषण होता है। पहला घर से बहिष्कार दूसरा घर और परिवार से आजीवन तिरस्कार और तीसरा यौन शोषण। किन्नरों को सिर्फ नाचने-गाने और मनोरंजन का साधन समाज द्वारा समझा जाता है। उन्हें उपभोग की वस्तु लोग समझते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पुरुषसत्तात्मक समाज स्त्रियों को समझता है। हालांकि स्त्रियों को सिर्फ उपभोग की वस्तु समझा जाता है लेकिन अधिकार बराबर दिया जाता रहा है लेकिन किन्नरों को बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार जैसे पाश्विक कृत्यों का सामना करना पड़ता है। इसके लिए काफी हद तक किन्नर समुदाय को भी दोषी माना जा सकता है, लेकिन पूर्ण रूप से घर, परिवार और समाज के लोग दोषी हैं। यहाँ पर बलात्कार की शिकार पूनम जोशी चन्द्रा और सोनिया है।

इनके साथ बलात्कार सिर्फ इसलिए नहीं किया जाता है कि ये हमें आनंद प्रदान करेंगे बल्कि उनका लिंग कैसे है और उससे कैसा महसूस होगा इस दृष्टिकोण से लोग जबरदस्ती करते हैं। पूनम जोशी के साथ ऐसा ही हुआ है। वह अपने नाच गाने का नृत्य करके खाना खाने से पहले नृत्य के लिए लाए गए किराये के कपड़े को एक रूम में बदल रही थी। उसने भूलवश दरवाजे की कुंडी नहीं लगाई थी या फिर सिटकती चढ़ाने के पहले ही उसके रोकने पर भी जबरदस्ती दरवाजा खोलते हुए विधायक का भतीजा अपने चार साथियों के साथ कमरे में प्रवेश करके उसके लिंग को देखने की जिद करता है। पूनम जोशी छटपटाती लात-घूसों से मुकाबला करती रही लेकिन पाँचों वहशियों ने उसे उठाकर झुलाते हुए बेरहमी से फर्श पर पटक दिया— “वहशियों ने उठाकर झुलाते हुए उसे बेहरहमी से फर्श पर चित्त पटक दिया। मुँह में उसके टूँस दी सतरंगी किराये की चुनरी।”¹⁹ इसके बाद वहशियों ने उसे भेड़ियों की तरह नोचा खरोचा और उसके होंठो को बारी-बारी से चूहे के पैने दांतों की तरह कुचला— “उसके विवश पैने दांतों का सामना उन्होंने उसके रसीले होंठो को बारी-बारी से कुतर कर किया।”²⁰ तत्पश्चात् उसके दोनों हाँथों को बांधा, कमीज को फाड़ा। पूनम का लिंग उन वहशियों के लिए किसी अजूबा से कम नहीं था। इसलिए वो उसकी फोटो खींचने लगे—

“मोबाइल दो अपना कोई

तस्वीरे खींचूंगा।

टाँगे कसे रखो।”²¹

पूनम के लिंग को चाकू-कांटा से चीड़ा गया। झूठी प्लेट और छुरी-कांटा से उसके लिंग को फाड़ दिया, विधायक के भतीजे ने। पूनम जोशी के लिंग से खून निकल ही रहा था कि पाँचों ने बारी-बारी से उसके साथ बलात्कार किया—

“विधायक जी के बिल्लू भतीजे ने छेद का ऑपरेशन शुरू कर दिया।

चाकू-कांटा मुस्तैद हो आए।

दीमक की बाम्बियां बनाता-रिसता खून फर्श पर आड़े-तिरछे

बहने लगा।

खुली पैट ने बेशर्त हो पैट उतार ली।”²²

विधायक जी ने अपने भतीजे और उसके चारों साथियों को रातों रात किसी अज्ञात जगह के लिए रवाना कर, पूनम जोशी को अपने फोन की दमदार सिफारिश से अस्पताल में एडमिट करा खुद फॉर्म हाउस छोड़कर चले गए— “पूनम जोशी जी को कपड़े—लत्ते पहनाकर एक दमदार फोन की विश्वसनीय सिफारिश में नत्थी कर होली फैमिली में दाखिले के लिए भेज दिया गया।”²³

इस प्रकार पाश्विकता का नंगा नाच किन्नरों के साथ होता रहता है। यह वही करते हैं जो समाज के रक्षक ठेकेदार होते हैं। जहाँ तक किन्नर उनके लिए उपयोगी और मनोरंजक है वहाँ तक वो स्वीकार हैं। उसके बाद सिर्फ बहिष्कार, तिरस्कार और पाश्विक बलात्कार के शिकार हैं। ऐसे ही एक बार पुलिस ने भी पूनम जोशी और चन्द्रा को नोचा, मारा—पीटा और रौंदा—कुचला था।

4.5 एक स्वर्गवासी माँ का अपने किन्नर बेटे के लिए माफीनामा

बिन्नी के भाषण का लाइव प्रसारण टी.वी. पर सभी ने देखा। उसकी माँ ने देखकर उसे घर वापसी के लिए समाचार पत्र में एक माफीनामा प्रकाशित करवाया। जिसमें वह अपने बेटे से अपील करती हैं कि मैं अपनी भूल का परिष्करण करना चाहती हूँ। मैं अपने बेटे को अपने सामान्य बेटों की तरह सारे अधिकार देती हूँ। मैं उसकी माँ हूँ। यहाँ तक कि वह मेरी मुखान्नि भी करे। माफीनामा कुल 9 बिंदुओं का है। बिंदु संख्या 2 में वह बिन्नी से क्षमा मांगती हैं— “अपने मझले बेटे विनोद शाह जिसे हम सभी प्यार से बिन्नी कहकर पुकारते थे, प्रार्थना करती हूँ, वह अपनी बा की इस अक्षम्य भूल को क्षमा कर दे और अपने घर वापस लौट आए।”²⁴

बिंदु संख्या 3 में कहती हैं कि वह अपनी माँ का सपना पूरा करे— “अपनी अधूरी शिक्षा पूरी करे। अपनी बा का सपना पूरा करने के लिए।”²⁵

बिंदु संख्या 4 में वह विनोद को अपने अन्य बेटों की तरह सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाती है— “उसे मैं यह जानकारी भी देना चाहती हूँ— “उसके

पिताश्री हरीन्द्र शाह ने अपनी रजिस्टर्ड वसीयत में अपनी समूची सम्पत्ति को तीनों उत्तराधिकारी बेटों— सिद्धार्थ शाह, विनोद शाह, मंजुल शाह को बराबर का हिस्सेदार बनाया है।”²⁶

बिंदु संख्या 6 में अपनी मुखाग्नि भी चाहती हैं—

“मैं अपनी उसी सम्पत्ति के लिए वसीयत करती हूँ। मेरी मृत्यु के उपरांत मुझे मुखाग्नि मेरे तीनों बेटे मिलकर देंगे।”²⁷

अंतिम बिंदु संख्या 9 में वह समाचार पत्रों से इस माफीनामा को प्रकाशित करने की इच्छा जाहिर करती हैं—

“मैं चाहती हूँ। मेरे इस माफीनामा को बाकायदा सभी भाषाओं के अखबारों में विज्ञापित किया जाए। नेताओं की तस्वीरें आए दिन अखबारों में छपती रहती हैं। अपने लिंग दोषी बेटे से क्षमायाचना करती हुई, उसकी घर वापसी की कामना करती हुई एक माँ की तस्वीर अखबारों में क्यों नहीं छप सकती?”²⁸

इस प्रकार यह माफीनामा किन्नरों को तिहरे शोषण से बचाने की एक सशक्त अपील है। यह किन्नर जीवन को मनुष्य में परिवर्तित करने का सशक्त माफीनामा है। इससे समाज को एक नई दिशा और किन्नरों को एक नया जीवन प्राप्त होगा। अतः यह एक सकारात्मक प्रयास है, एक माँ का अपने किन्नर बेटे के लिए। दूसरे शब्दों में कहें तो सभी माताओं का सभी किन्नर बेटों के लिए।

संदर्भ ग्रंथ

- ¹ चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ 11
- ² वही, पृष्ठ 15
- ³ वही, पृष्ठ 23
- ⁴ वही, पृष्ठ 61
- ⁵ वही, पृष्ठ 194
- ⁶ वही, पृष्ठ 42
- ⁷ वही, पृष्ठ 42
- ⁸ वही, पृष्ठ 42
- ⁹ वही, पृष्ठ 33
- ¹⁰ वही, पृष्ठ 15
- ¹¹ वही, पृष्ठ 34
- ¹² वही, पृष्ठ 60
- ¹³ वही, पृष्ठ 81
- ¹⁴ वही, पृष्ठ 110
- ¹⁵ वही, पृष्ठ 112
- ¹⁶ वही, पृष्ठ 186
- ¹⁷ वही, पृष्ठ 195
- ¹⁸ वही, पृष्ठ 196
- ¹⁹ वही, पृष्ठ 203
- ²⁰ वही, पृष्ठ 204
- ²¹ वही, पृष्ठ 204
- ²² वही, पृष्ठ 204
- ²³ वही, पृष्ठ 205
- ²⁴ वही, पृष्ठ 222
- ²⁵ वही, पृष्ठ 222
- ²⁶ वही, पृष्ठ 222
- ²⁷ वही, पृष्ठ 223
- ²⁸ वही, पृष्ठ 223



पंचम अध्याय

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा :
एक आलोचनात्मक अध्ययन



पंचम अध्याय

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा : एक आलोचनात्मक अध्ययन

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा किन्नरों की सामाजिक पहचान का संघर्षशील दस्तावेज है। किन्नरों का संघर्ष घर वापसी का है। समाज द्वारा बहिष्कृत, तिरस्कृत और बलात्कृत किन्नरों को ससम्मान घर वापस बुलाने का एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। वहीं दूसरी ओर राजनीतिक पार्टियाँ और उनके नेता उन्हें सामाजिक न्याय उसी प्रकार देना चाहते हैं जिस प्रकार एस.सी., एस.टी. और ओ.बी.सी. को आरक्षण प्रदान करके दिए हैं। लेकिन यहाँ पर किन्नर उनसे असहमत हैं तो यह कैसा सामाजिक न्याय। दलित, पिछड़े और आदिवासी आरक्षण की माँग किए और उन्हें मिला लेकिन किन्नरों की घर वापसी की माँग नहीं मानी जा रही तब ये कैसा सामाजिक न्याय है? किन्नरों का यह सवाल जायज है। उन्हें पहले समाज और घर द्वारा स्वीकार किया जाए। एक सामाजिक प्राणी माना जाए। उन्हें मनुष्य का दर्जा दिया जाए।

आम जनमानस की तरह उन्हें भी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएँ प्रदान की जाए लेकिन इसके पहले उन्हें मनुष्य का सामाजिक प्राणी माना जाए। यही उनके साथ न्याय माना जाएगा। तभी उनके साथ हो रहे बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार रुकेगा। पत्र-शैली में लिखित इस उपन्यास की भाषा सहज और प्रभावशाली है। हृदय को स्पर्श करने वाली है। किन्नर समुदाय के रहन-सहन, बोली, भाषा के अनुकूल है। इस अध्याय के अंतर्गत हम नाला सोपारा का आलोचनात्मक अध्ययन करेंगे।

5.1 नाला सोपारा एवं अन्य किन्नर जीवन केन्द्रित उपन्यास

किन्नर जीवन से संबंधित उपन्यास इक्कीसवीं सदी में खूब लिखे और पढ़े जा रहे हैं। सभी अपनी-अपनी विशिष्टताओं से भरे हैं तथा किन्नर जीवन की समस्याओं का चित्रण हुआ है। कुछ उपन्यासों में किन्नर जीवन की एक-एक घटना, रस्म-रिवाज और संस्कृति का चित्रण किया गया है। लेकिन इन सबसे हटकर 'नाला सोपारा' किन्नरों की घर वापसी की आवाज के रूप में सामने आया है। पहले उन्हें सामाजिक पहचान दिलाने की बात करता है। फिर बाद में सरकारी और कागजी पहचान की बात करता है। अतः यह उपन्यास अन्य उपन्यासों में बेजोड़ है।

'यमदीप' (2002), प्रतिसंसार (2008), पंखवाली नाव (2009), किन्नर कथा (2010), तीसरी ताली (2014), मैं भी औरत हूँ (2005), गुलाम मंडी (2013), मैं पायल... (2016), जिन्दगी 50:50 (2017) इत्यादि किन्नर जीवन केन्द्रित मुख्य उपन्यास हैं। किन्नर जीवन केन्द्रित उपन्यासों से हमें निम्न चीजें स्पष्ट तौर पर देखने को मिलती हैं—

1. किन्नरों की समस्या को चित्रित करने वाले उपन्यास।
2. किन्नरों की रस्म-रिवाज और संस्कृति का चित्रण।
3. सामान्य जीवनयापन के लिए किन्नरों को एक वैकल्पिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करने वाले उपन्यास।
4. किन्नरों की घर वापसी से संबंधित उपन्यास।

5.1.1 किन्नरों की समस्या को चित्रित करने वाले उपन्यास— किन्नरों की समस्या बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार है। इन समस्याओं को लगभग सभी उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली है। लेकिन किसी-किसी उपन्यासों में ये सिर्फ सहायक की भूमिका में हैं। कुछ उपन्यास ऐसे हैं

जो इनकी समस्याओं का चित्रण भर करते हैं। ऐसे उपन्यासों में यमदीप, पंखवाली नाव, किन्नर कथा, तीसरी ताली जैसे उपन्यास आते हैं जो किन्नरों की समस्याओं— बहिष्कार, तिरस्कार, बलात्कार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसी मूलभूत समस्याओं का चित्रण करते हैं। ‘यमदीप’ उपन्यास का महताब गुरु (किन्नरों का सरदार) किन्नरों की समस्या बताता है— “किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़ा को पढ़ते—लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलक्टरी में... किसी में भी?... अरे इनकी दुनिया यही है, माताजी कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है।”¹

5.1.2 किन्नरों की रस्म—रिवाज और संस्कृति का चित्रण— मुख्यधारा से हटकर किन्नरों की अपनी अलग बस्ती और ठिकाने होते हैं। इसलिए इनके भी अपने रस्म—रिवाज और संस्कृति होती है। हल्दी मेहन्ती, जलस, निर्वाण, कुवागम उत्सव, सुहागन और मंगलसूत्र तोड़ने की रस्म, चमय विलक्कु उत्सव इनकी मुख्य रस्म—रिवाज और संस्कृति है। ‘यमदीप’, तीसरी ताली जैसे उपन्यास इसके उदाहरण हैं। तीसरी ताली में ज्योति की विधिवत रस्म की जाती है— “रक्त का सोता बहने लगा। घण्टों खून बहता रहा। हिजड़ों में यह मान्यता है कि रक्त के बहने के साथ ही पुरुष का पुरुषत्व भी बह जाता है और उसमें नारीत्व के गुण प्रवेश कर जाते हैं। इसके बाद लकड़ी के एक गुटके के जरिए घाव को बन्द किया जाता है, ताकि पेशाब का रास्ता खुला रहे।”²

5.1.3 सामान्य जीवनयापन के लिए किन्नरों को एक वैकल्पिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करने वाले उपन्यास— समाज से बहिष्कृत किन्नरों को स्त्री—पुरुष की भाँति सामान्य रूप से जीवनयापन करने के लिए कुछ उपन्यासकारों ने विकल्प रचा है। उन विकल्पों के माध्यम से वो भी

सामान्य जीवनयापन कर सकते हैं। मैं भी औरत हूँ, पंखवाली नाव जैसे उपन्यासों में विकल्प रचा गया है। बच्चा गोद लेना, सरोगेसी मदर, आई.वी.एफ., समलैंगिक जीवन जैसे विकल्प इन उपन्यासों में हैं। 'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में रोशनी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि ऑपरेशन द्वारा योनि प्राप्त कर और आई.वी.एफ. द्वारा बच्चा प्राप्त कर वैवाहिक जीवन में पदार्पण कर सामान्य जीवनयापन किया जा सकता है— "मैं पत्नी का सुख पा सकती हूँ पर मैं किसी पुरुष को सिर्फ इसलिए स्वीकार नहीं कर पा रही हूँ कि मैं उसे बच्चा नहीं दे सकती। वैसे यह कोई बड़ी बात नहीं है, कई महिलाओं के बच्चे नहीं होते, उसके सब कुछ होता है पर वे माँ नहीं बन पातीं, तो क्यों वे जिन्दगी का सुख नहीं मांगती? फिर मैं स्वभाव से इतनी अलग क्यों हूँ? आज के इस आधुनिक युग में आई.वी.एफ. ऐसी आधुनिक टेक्नोलॉजी है, जिससे आप माँ बन सकती है।"³

5.1.4 किन्नरों की घर वापसी को चित्रित करने वाले उपन्यास— नाला सोपारा उपन्यास किन्नरों का ससम्मान घर वापसी कराकर उन्हें सामाजिक पहचान और फिर अन्य पहचान दिलाने की बात करता है। किन्नरों को अलग से आरक्षण की जरूरत नहीं है उन्हें तो बस उनके माता—पिता की जाति में रहकर ही अधिकार प्राप्त करना है। यह उपन्यास किन्नरों को मनुष्य मानने के संघर्ष का उपन्यास है। बिन्नी सरकार से अपील करता है कि ऐसे कानून बनाए जाएं जिससे सभी माता—पिता अपने—अपने बहिष्कृत बच्चों को वापस बुलाएं—

“लेकिन, मैं आप सबकी ससम्मान घर वापसी चाहता हूँ।

मैं सरकार से अपील करता हूँ इस सभागार में, लिंग दोषी बिरादरी की घर वापसी को वह सुनिश्चित करे।

कानून बनाए। बाध्य करे अभिभावकों को। घर से बहिष्कृत बच्चों को वह जिस भी उम्र के पड़ाव में हों, अपने साथ रखें।”⁴

इस प्रकार नाला सोपारा उपन्यास किन्नरों को सामाजिक पहचान दिलाने वाला उपन्यास है। बाकी अन्य उपन्यास समस्या—निरूपण, विकल्प—निरूपण, रस्म—रिवाज, किन्नर समाज और संस्कृति निरूपण करके रुक जाते हैं।

5.2 आलोचना एवं नाला सोपारा

नाला सोपारा उपन्यास पर आलोचना शोध—आलेख के रूप में अधिकांश हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं। पुस्तकाकार रूप में कुछ उपन्यासों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के रूप में हैं, हालाँकि यह एक—दो से ज्यादा नहीं है। नाला सोपारा पर लिखे शोध आलेख कुछ पुस्तकों में संकलित हैं। उन संकलित पुस्तकों में से महत्वपूर्ण और प्रतिनिधि शोध—आलेखों पर विचार करना समीचीन प्रतीत होता है। बाकी सभी पृष्ठपेक्षण ही नज़र आते हैं। नाला सोपारा पर लिखित शोध आलेख ‘थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ’ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में); तीसरी दुनिया का यथार्थ, एक मूल्यांकन, किन्नर विमर्श : कल, आज और कल, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज जैसी संपादित पुस्तकों में संकलित हैं।

नाला सोपारा पर जिन लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई है उनके अपने—अपने दृष्टिकोण दृष्टिगत होते हैं। सभी ने अपने—अपने नज़रिये से नाला सोपारा उपन्यास को आलोच्य बनाया है। मधुरेश, डॉ. सविता शर्मा, विजय बहादुर सिंह, बबिता सिंह, प्रो. शर्मिला सक्सेना, डॉ. पुष्पा गुप्ता, डॉ. रमाकान्त राय जैसे आलोचकों ने अपने नज़रिये से जाँचा परखा है।

समीक्षक मधुरेश यह पाते हैं कि किन्नरों की समस्या का समाधान भावना के द्वारा किया जा सकता है। न सिर्फ भावनात्मक बल्कि सामाजिक

और मानवीय भी। मधुरेश के शब्दों में— “लेकिन सबकुछ के बावजूद लेखिका यह संदेश दे पाने में सफल हो पाती है कि समस्या का कोई रचनात्मक समाधान सामाजिक, मानवीय और भावनात्मक ही हो सकता है।”⁵ अर्थात् किसी भी समस्या का समाधान समाज, मानव और भावना के द्वारा ही संभव है।

डॉ. सविता शर्मा की दृष्टि में नाला सोपारा किन्नरों के बहिष्कृत, तिरस्कृत और बलात्कृत जीवन में परिवर्तन के लिए संघर्ष का उपन्यास है। वे अपनी पुस्तक में ‘तीसरी ताली’ उपन्यास से तुलना करती हुई लिखती हैं— “तो वहीं विनोद भी ‘नाला सोपारा’ का सशक्त पात्र है, जो कि समाज में परिवर्तन चाहता है अपने लिए भी और अपने जैसे हजारों—लाखों उन किन्नर समुदायों के लिए जो उसी की तरह अपने घर से दूर नारकीय जीवन जीने को विवश हैं। विनोद पढ़ा—लिखा तथा जागरूक व्यक्ति है, जिसकी सबसे बड़ी लड़ाई यही है, किन्नरों को स्त्री—पुरुष की तरह ही इंसान मानने की लड़ाई।”⁶

समीक्षक विजय बहादुर सिंह नाला सोपारा की नब्ज को पकड़ने का प्रयास करते हैं। किन्नरों की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसे बुनियादी मुद्दों पर बात करते हुए उपन्यास पर बात करते हैं।

उनके दृष्टिकोण से यह उपन्यास किन्नरों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करने वाला है। वे लिखते हैं— “उपन्यास में जिस मुद्दे को मूल मुद्दे की तरह उठाया गया है, वह तो यही है कि किन्नरों के प्रति कैसरस हो चुकी सोच को बदला जाए और उन्हें मुख्य सामाजिक धारा में मानवीय पहचान और गरिमा मिले, जो इस अपील और माफीनामे से सम्भव होती है।”⁷

बबिता सिंह का मानना है कि सत्ता और समाज का आपसी गठजोड़ है। इस गठजोड़ में किन्नर का जीवन बहिष्कृत कर दिया गया है। यह उपन्यास

नाला सोपारा किन्नरों की अपनी सत्ता की लड़ाई का मार्मिक दस्तावेज है—
“लोकतंत्र के रक्षक इनके सबसे बड़े भक्षक बने हुए हैं। चित्रा मुद्गल का
उपन्यास ‘पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा’ सत्ता और समाज के आपसी
गठजोड़ के मध्य अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे तीसरी सत्ता का कठोर
और मार्मिक दस्तावेज है।”⁸

इस प्रकार हम देखते हैं कि नाला सोपारा पर आलोचना से यह तथ्य
स्पष्ट हो रहा है कि उपन्यास का उद्देश्य किन्नरों की समस्या का समाधान है।
लेकिन यह समाधान अपनी विशिष्टता के कारण उल्लेखनीय है। यह समाज,
मानव और भावना के आधार पर होना चाहिए। किन्नर समुदाय को मानव
समझा जाए। वह मानव की पहचान चाहता है। किन्नरों को समाज की
मुख्यधारा में शामिल करने का दस्तावेज है यह उपन्यास। इन समीक्षकों ने
अपने-अपने तरीके से नाला सोपारा पर अपनी आलोचना की है। यह उपन्यास
किन्नरों की घर वापसी और मानवीय अस्तित्व वापसी का उपन्यास है।
स्त्री-पुरुष की भाँति किन्नरों को भी सामाजिक पहचान दिलाने का उपन्यास
है, न कि उन्हें अलग से अन्य वर्ग में रखकर आरक्षित करने के संघर्ष का
उपन्यास हैं।

5.3 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर जीवन का वैशिष्ट्य—

नाला सोपारा उपन्यास किन्नर जीवन को नए सिरे से रेखांकित करने
वाला उपन्यास है। किन्नर समुदाय का अपना विशिष्ट रहन-सहन और
वेशभूषा होती है जिसका उल्लेख अब तक के उपन्यास करते आए हैं लेकिन
नाला सोपारा उपन्यास में किन्नर स्वयं को मनुष्य के रूप में पहचान पाना
चाहता है। इसलिए वह किन्नर समुदाय और किन्नरों का जीवन दोनों से मुक्ति
चाहते हुए मुख्यधारा में रहकर जीवन जीना चाहता है। वह इसीलिए किन्नर
समुदाय से भी संघर्ष करता है। इस उपन्यास में किन्नर जीवन का वैशिष्ट्य
निम्नलिखित है—

1. किन्नर समुदाय
2. किन्नरों की पारंपरिक वेशभूषा एवं रहन-सहन से विद्रोह
3. किन्नर कूटनीति
4. किन्नर का निश्छल प्रेम
5. पढ़ने-पढ़ाने के लिए एक-दूसरे के प्रति समर्पित

सामान्य तौर पर शुरू में थोड़ा विद्रोह करके फिर मान जाना ऐसी किन्नरों की जीवन-चर्चा थी लेकिन इस उपन्यास में बिन्नी उर्फ विनोद शुरू से लेकर अंत तक विद्रोह करता आया है। वह न सिर्फ सरदार से विद्रोह करता है बल्कि किन्नरों की पारंपरिक वेशभूषा एवं रहन-सहन, आजीविका, नाचना-गाना इत्यादि को भी मना कर देता है। अपनी माँ को खत में लिखता है— “उनके लात, घूँसे, थप्पड़ और कानों में गर्म तेल सी टपकती किसी भी सम्बन्ध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक-मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ न सलमे-सितारे वाली साड़ियाँ लपेट लिपिस्टिक लगा कानों में बुंदे लटकाने को।”⁹

कूटनीति भी किन्नर जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई है। सरदार अफीम का व्यवसाय करता है। पूनम और चन्द्रा विधायक जी से सम्बन्ध बनाकर रखती हैं। उसी की बदौलत विनोद को आगे की शिक्षा, नौकरी और फिर किन्नरों का नेता बनने का पद और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। इन सब पर कूटनीति तब भारी पड़ जाती है जब विनोद को मंच से अपने भाषण में किन्नरों के आरक्षण पर बोलने को कहा जाता है लेकिन वह मंच पर माइक पाते ही किन्नरों के स्वाभिमान पर आवाज उठाता है। इस पर विधायक जी के सहयोगी तिवारी जी उस पर भड़क जाते हैं— “वाह! तुम तो छंटे हुए रणनीतिकार निकले। सरकार को सलाह देने लगे। पासा पलटने में माहिर।”¹⁰

किन्नर का निश्छल प्रेम बिना लिंग आधारित मानवता की एक मिसाल और किन्नर जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विनोद के लिए पूनम जोशी और चन्द्रा का लगाव किसी प्रेमिका का अपने प्रेमी के लगाव से कम नहीं दिखता तो वहीं विनोद का भी पूनम के साथ हुए बलात्कार पर क्रोधित होना और दोषियों को छोड़ूँगा नहीं कहना उसके प्रति प्रेम का अनूठा उदाहरण है। वह तब तक अपनी माँ को देखने नहीं जाता जब तक पूनम उसे जाने को नहीं कहती। बिन्नी कहता है— “ठीक हो जाओ पूनम जोशी जी। तुम्हें हराने की कोशिश करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा।”¹¹

विनोद पढ़ना चाहता था। सरदार उसे किन्नरों का पारंपरिक जीवन जीने के लिए बाध्य कर रहा था। तभी पूनम जोशी और चन्द्रा की कृपा उस पर पड़ती है। पूनम जोशी उसे अपने जेब खर्च पर पढ़ाती है। उसने आठ हजार रुपये पढ़ाई के लिए इकट्ठा किए थे। जब वह विधायक जी के यहाँ नौकरी करने लगता है तो पूनम और चन्द्रा की ट्यूशन की फीस वह भरता है। यही जागरूकता किन्नर जीवन की विशिष्टता बन जाती है। परंपरा से हटकर जीवन जीने की ललक है— “मैंने उससे साफ कह दिया है, पाँच सौ रुपये ट्यूशन का मेहनताना उसे मैं दूँगा महीने का।”¹²

नाला सोपारा उपन्यास में किन्नरों के जीवन की विशिष्ट झलक देखने को मिलती है। वह लीक से हटकर मुख्यधारा का जीवन जीने के लिए संघर्षरत है। वह आज के समय का जीवन चाहता है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, राजनीति, कूटनीति इत्यादि करना चाहता है। किन्नरों के पारंपरिक जीवन से मुक्ति चाहता है।

5.4 भाषा एवं शिल्प विधान

पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा की भाषा एवं शिल्प विधान चर्चित है। चित्रा मुद्गल जी के लिए किन्नर पर लिखना इसके पहले के उपन्यास

और कहानी साहित्य से इतर परिवेशगत विषय हैं इसलिए भाषा पर विचार करना आवश्यक लगता है। नये विषय पर नए भाषा के प्रयोग हुए हैं। भाषा का बहुत सटीक एवं सीमित प्रयोग हुआ है जिसका कारण उपन्यास का मूल उद्देश्य है। सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण और पठनीय भाषा है। हिंदी भाषा से इतर क्षेत्रीय भाषाओं गुजराती, मराठी की प्रधानता है। साथ ही देशज, विदेशज, अरबी-फारसी, उर्दू के पुट भी मिलते हैं। इन सभी के साथ पत्र-शैली का शिल्प-विधान अनूठा प्रयोग है। पत्र-शैली पत्राचार के आदान-प्रदान पर आधारित है। पत्राचार की शैली और भाषा का अच्छा प्रयोग देखने को मिलता है। शैली के अनुरूप भाषा और भाषा के अनुरूप शैली का स्वागत योग्य कदम उठाया गया है।

चित्रा मुद्गल कई सामाजिक संगठनों से जुड़ी रही हैं। खुद सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य की हैं। इन अनुभवों को उपन्यास में उकेरा भी है। लेकिन इनकी खास विशेषता है कि इनका 'एक्टिविस्ट' रूप इनकी रचना पर हावी नहीं है। रचना पर विषय और परिवेश की अच्छी पकड़ है। फलस्वरूप भाषा भी वहीं से उत्पन्न हो जाती है। डॉ. सविता शर्मा जी लिखती हैं— "उपन्यास की भाषा प्रयोगात्मकता तथा उन नए अनुभवों को अपने में समेटे हुए हैं जो कि इस उपन्यास में चाहिए। एक एक्टिविस्ट रचनाकार कैसे अपनी रचना में मूल सरोकार के प्रति समर्पित हो सकता है, यह इस अनोखे और पठनीय उपन्यास की भाषा बताती हैं यहाँ समाज की हर सतह उधड़ती है। भाषा में विभिन्न शब्दों जैसे तद्भव, तत्सम, देशज, विदेशज, गुजराती आदि हैं तो साथ ही किन्नर समुदाय द्वारा प्रयुक्त होने वाली भाषा उपन्यास में यथार्थता का गुण भरती है।"¹³

सफलता सरोज की दृष्टि में चित्रा मुद्गल के लिए यह एक चुनौती रही होगी क्योंकि उनके अन्य उपन्यासों को लेकर भाषा की जो पहचान बनी हुई थी उससे यह भिन्न थी। फिर भी लेखिका ने चुनौती का सामना किया और

सहज रूप में विषयानुरूप भाषा का प्रयोग किया— “उपन्यास की भाषा आश्चर्यजनक रूप से सरल, सहज, प्रवाहपूर्ण और पठनीय है। चित्रा मुद्गल के लिए अपनी भाषा जो अब एक पहचान बन चुकी है विषय से हटकर इस तरह सरल हो जाना इस उपन्यास को लिखते समय एक चुनौती रही होगी। और यही कारण है कि जब पठनीयता रचनाओं से गायब होती जा रही है ऐसे में यह उपन्यास जब आप पढ़ना शुरू करते हैं तो एक सिरे से अंत तक पढ़ते ही चले जाते हैं।”¹⁴

डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार उपन्यास की भाषा उपन्यास के परिवेश की विशेषताओं को चित्रित करने में सहायक बन पड़ी है। भावों की ग्राह्यता में कोई बाधा न हो इस बात का भी भरपूर ख्याल रखा गया है— “माँ और बेटे के मध्य संवाद की भाषा का परिसीमन बहुत ही आत्मीयता के साथ तय किया गया है कि बहुत से बेबाक मुद्दों पर भी खुला संवाद है परंतु कुछ अश्लील नहीं लगता। गुजराती तथा मराठी भाषा के शब्दों का प्रयोग पारिवेशिक विशेषताओं के प्रस्तुतीकरण में सहायक बन पड़ा है। सामान्य रूप से भाव प्रस्तुतीकरण हेतु बहुत ही सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि भाव ग्राह्यता बाधि या क्लिष्ट न हो।”¹⁵

नाला सोपारा उपन्यास की भाषा की भी अपनी सीमा है। यह सिर्फ नाला सोपारा की बात नहीं है बल्कि किन्नर से संबंधित अन्य उपन्यासों पर भी लागू होती हैं। किन्नरों को संबोधित करने के लिए पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के अनुसार अपनी भाषा नहीं है। फिर भी रचनाकार ने भाषा का ऐसा प्रयोग किया है कि किन्नरों की समस्या के चित्रण में कोई बाधा नहीं आती। सविता शर्मा लिखती हैं— साथ ही किन्नरों पर लिखने के लिए भाषा का अभाव है, जो कि ‘पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा’ की ही समस्या नहीं है बल्कि ऐसी सभी विधाओं की कमी है जो कि किन्नर विषय पर लिखते हैं। हिन्दी में ऐसी किसी

भाषा का विकल्प नहीं जहाँ स्त्रीलिंग, पुल्लिंग के अलावा नपुंसकलिंग की भी बात आसानी से कही जाए।”¹⁶

विनोद और उसकी माँ के पत्रों की तिथि से यह स्पष्ट होता है कि यह उपन्यास लगभग पाँच महीने के बीच माँ और बेटे के बीच पत्राचार पर आधारित है। लेखिका को जमीन उन्हीं पत्रों से मिलती है। हालाँकि इस उपन्यास में सिर्फ 17 पत्र हैं जो सिर्फ बेटे के पत्र हैं। यह पत्राचार 23 जुलाई, 2011 से शुरू होकर 27 दिसम्बर, 2011 तक चलता है। पत्र-शैली पर लिखित इस उपन्यास के बारे में विजय बहादुर सिंह लिखते हैं— “माँ और बेटे के बीच पत्र-शैली के सहारे उपन्यास में ऐसा शिल्प साकार किया गया है। जिससे बेटे द्वारा अपनी ‘बा’ को लिखे गए पत्रों में ही माँ द्वारा प्रत्युत्तरित पत्रों का मज़मून जाहिर हो गया है। निश्चित ही यह सूक्ष्म और सधे हुए कौशल के बल पर ही सम्भव किया जा सकता है।”¹⁷

नाला सोपारा उपन्यास में लेखिका ने पत्राचार शैली, प्रश्नात्मक शैली तथा कहीं-कहीं अनुमानपरक शैली का प्रयोग किया है। तुकबंदी, मुहावरे, लोकोक्ति, प्रतीक, बिम्ब आदि सफलतापूर्वक उचित स्थान पर रखे गए हैं। उपन्यास में लेखिका ने शिल्प के बहुआयामी प्रयोग किए हैं। डॉ. सविता शर्मा लिखती है— “उपन्यास में लेखिका ने शिल्प के माध्यम से कई प्रयोग भी किए हैं। उनमें से एक है कि यह उपन्यास सत्रह भागों या अध्यायों में विभक्त है। उसमें एक से नौ तक के अध्याय या पत्रों के ऊपर लेखिका ने केवल जगह और दिनांक का ही ब्यौरा दिया है। जबकि दस से सत्रह तक के पत्रों में जगह, दिनांक के साथ-साथ समय का भी ब्यौरा है। जाहिर है ऐसा लेखिका ने शिल्प के प्रति सजग रह कर ही किया है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि बाद के पत्रों में घटनाएँ व द्वंद्व पहले से अधिक तेजी से घटते हैं, जिस कारण एक ही दिन या रात में कई बार पत्र लिखा गया है। जिसके लिए समय का ब्यौरा देना आवश्यक था।”¹⁸

डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह के अनुसार उपन्यास में प्रयुक्त पत्र-शैली लेखिका के भाव और किन्नरों की समस्याओं को चित्रित करने में सार्थक सिद्ध हुई है। इनके अनुसार पत्र-शैली चिंतन और विचार प्रवाह के लिए जानी जाती है। इसलिए कथा-प्रवाह में बाधा नहीं आती है— “पत्र-शैली में रचित इस उपन्यास का पूरा ताना-बाना पत्रों के माध्यम से माँ-बेटे के बीच के संवादों के माध्यम से ही बुना गया है। घटनाओं के क्रमिक विकास और क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण के कारण ही कथा-तत्व का पूरा निर्वाह किया गया है। पत्र-शैली को चिंतन प्रवाह या विचार-प्रवाह को अभिव्यक्त करने के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त माना जाता है और इसी कारण लेखिका ने इसके माध्यम से कथा-प्रवाह को अभिव्यक्त करके एक अनूठी कृति कथ्य और शिल्प की दृष्टि से एक अनुपम कृति की रचना करने में सफलता हासिल की है।”¹⁹

नाला सोपारा उपन्यास के शिल्प-विधान की सीमा है। यह सीमा न होती तो शायद यह उपन्यास और सशक्त एवं प्रभावकारी होता। हाँ, इतना जरूर है कि उपन्यास की मोटाई बढ़ जाती। तब जाहिर सी बात है कि उपन्यास में कुछ छूट गया होता। शायद ऐसा लेखिका ने उपन्यास के बढ़ते आकार को दृष्टिगत रखते हुए छोड़ा है। या फिर हो सकता है कि वह लेखिका की पहुँच से दूर हो रहा हो अथवा अनुपलब्ध। वह यह है कि उपन्यास में सिर्फ एक व्यक्ति के पत्रों का संकलन है हालाँकि दूसरे व्यक्ति के पत्रों का सारांश पृष्ठभूमि के रूप में आता है। “सविता शर्मा लिखती हैं— “उपन्यास के शिल्प की सबसे बड़ी कमी यह है कि उपन्यास में केवल बिन्नी के ही पत्रों का ब्यौरा है ‘बा’ के पत्रों का नहीं। हालाँकि बिन्नी के पत्रों के बीच-बीच में बा के पत्रों का जिक्र है किन्तु फिर भी यदि बा के पत्रों की भी जानकारी होती तो उपन्यास और भी सशक्त होता।”²⁰ आगे सविता शर्मा उपन्यास के शिल्प प्रवाह पर भी प्रश्न उठाती हैं कि अंत में दो प्रकाशित समाचार उपन्यास के शिल्प प्रवाह से इतर थोपे हुए लगते हैं— “तो साथ ही उपसंहार के रूप में

समाचार-पत्रों का इस्तेमाल जहाँ एक ओर नया प्रयोग भी है तो वहीं उपन्यास में जबरदस्ती थोपे हुए भी लगते हैं।”²¹

इस प्रकार पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा की भाषा एवं शिल्प एक-दूसरे के अनुकूल है लेखिका के उद्देश्यों एवं किन्नर के जीवन के भाव पाठक के लिए सुग्राह्य बन पड़े है। इसके लिए भाषा एवं शिल्प के बहुआयामी किंतु परिवेश के अनुकूल प्रयोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संदर्भ ग्रंथ

- 1 यमदीप, नीरजा माधव, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ 94
- 2 प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 61–62
- 3 डॉ. अनसूया त्यागी, मैं भी औरत हूँ, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2009, पृष्ठ 15–16
- 4 चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ 186
- 5 डॉ. शगुप्ता नियाज़ (सं.), थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ, विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वि.सं.–2019, पृष्ठ 19
- 6 डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2022, पृष्ठ 54
- 7 सफलता 'सरोज' (संपादिका), किन्नर विमर्श: कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2019, पृष्ठ 100
- 8 डॉ. जयश्री एस.टी., तीसरी दुनिया का यथार्थ: एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2021, पृष्ठ 139
- 9 चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ 9
- 10 वही, पृष्ठ 189
- 11 वही, पृष्ठ 210
- 12 वही, पृष्ठ 82
- 13 डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2022, पृष्ठ 66
- 14 सफलता 'सरोज' (संपादिका), किन्नर विमर्श: कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2019, पृष्ठ 112
- 15 डॉ. शगुप्ता नियाज़, थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में), विकास प्रकाशन, कानपुर, दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ 167
- 16 वही, पृष्ठ 112

- 17 सफलता 'सरोज' (सं.), किन्नर विमर्श : कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2019, पृष्ठ 101
- 18 डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ 67-68
- 19 डॉ. शगुपता नियाज, थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में), विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण-2019, पृष्ठ 167
- 20 वही, पृष्ठ 112
- 21 वही, पृष्ठ 112



उपसंहार



उपसंहार

उपन्यास आज के युग की सबसे लोकप्रिय विधा है। रचनाकारों ने किन्नर जीवन केन्द्रित समस्याओं का चित्रण उपन्यास विधा में अधिक मात्रा में चित्रित किया है और आज भी लगातार जारी है। अब तक किन्नर जीवन केन्द्रित उपन्यासों में किन्नरों की संस्कृति, रस्म-रिवाज, रहन-सहन इत्यादि का चित्रण अधिक होता आया है। साथ ही किन्नरों के पारंपरिक जीवन के बजाय एक वैकल्पिक जीवन की भी कल्पना की जाती है, लेकिन बिना किसी सामाजिक पहचान के। 'पोस्ट बॉक्स नम्बर 203' नाला सोपारा उपन्यास इसी बिन्दु को लेकर चर्चित है। यही इसकी पहचान है। यह उपन्यास किन्नरों के लिए कोई बाईपास का निर्माण करने की वकालत नहीं करता बल्कि मुख्य रास्ते (समस्या) के निर्माण की बात करता है। अर्थात् किन्नरों का सम्मान घर वापसी की वकालत करता है। यह आरक्षण की अलग व्यवस्था नहीं चाहता बल्कि वही चाहता है जहाँ यह पैदा होता है। किन्नर जीवन मानव जीवन का रूप मांगता है। मुख्यधारा में शामिल होना चाहता है। स्वयं को मनुष्य का दर्जा प्राप्त करना चाहता है।

किन्नरों को जन्म लेते ही बहिष्कार, तिरस्कार और बलात्कार का दंश झेलना पड़ता है। नाला सोपारा उपन्यास में इस देश के विरुद्ध एक सतत् संघर्ष चलता है। बहिष्कार नहीं, स्वीकार की आवाज उठाई जाती है। जिस प्रकार स्त्री-पुरुष का स्वीकार हर्षोल्लास के साथ होता है, उसी प्रकार किन्नरों का भी होना चाहिए। ऐसी माँग बराबर होती है। किन्नर के नाम से लोग नाक-भौं सिकोड़ कर दूर भागते हैं। जबकि वहीं आनंद के नाम पर बंद कमरे में उनका बलात्कार करते हैं। ऐसे बलात्कारियों से प्रतिशोध की भावना देखने को मिलती है। उसे अपना दुर्भाग्य कहकर सहने की नहीं। अक्सर पारंपरिक तरीके से किन्नर अपना जीवनयापन करते आए हैं। वह भी समाज की बनी-बनाई, घिसी-पिटी मानसिकता को थक-हारकर मान बैठते हैं लेकिन

नाला सोपारा ऐसी मानसिकता से बाहर निकलकर सामान्य जीवन जीने के लिए शिक्षा ग्रहण करने की पुरजोर कोशिश करता है। इतना ही नहीं किन्नरों की मुक्ति का एकमात्र रास्ता शिक्षा ही है जिसे पितृसत्तात्मक समाज ने छोड़ा है। यह उपन्यास किन्नरों की शिक्षा पर बल देता है। और वे अवसर पाकर किन्नर डेरे में रहकर भी एक-दूसरे को पढ़ने के लिए मदद करते हैं। वह पढ़-लिखकर तकनीकी कौशल का प्रशिक्षण लेकर स्त्री-पुरुष की भाँति रोजगार भी करता है, नौकरी भी करता है। यह रोजगार एवं नौकरी करने पर बल देता है। आजीविका के लिए पारंपरिक तरीकों को त्यागने की बात करता है।

नाला सोपारा उपन्यास की मुख्य विशेषता सामाजिक पहचान और स्त्री-पुरुष से अलग अन्य के रूप में आरक्षण की व्यवस्था की टकराहट है। हालांकि लेखिका का उद्देश्य सामाजिक पहचान है। अन्य के अंतर्गत आरक्षण की व्यवस्था राजनीतिक पार्टियों का उद्देश्य है। ऐसी पार्टियाँ जो सिर्फ अपने वोट बैंक की राजनीति करती हैं। यहाँ किन्नरों का कूटनीतिज्ञ रूप सामने आता है। कूटनीति और रणनीति का तर्कपूर्ण जीवन किन्नरों ने प्रदर्शित किया है। वो आरक्षण चाहता है लेकिन अलग से नहीं।

‘किन्नर’ मनुष्य के रूप में ही जीना चाहता है। स्त्री-पुरुष में ही अपने को स्वेच्छानुसार देखना चाहता है। मुख्यधारा में ही रहकर आरक्षण को स्वीकार करना चाहता है। स्वाभिमान बेचकर नहीं। वह किन्नर समुदाय के पारंपरिक जीवन से सांस्कृतिक रस्म-रिवाज, आजीविका के साधनों से मुक्ति चाहता है। वह जन्म देने वाले अपने माता-पिता, भाई-बहन, नाते-रिश्तेदार, मित्र इत्यादि से उसी प्रकार जुड़ना चाहता है जिस प्रकार उसके अन्य भाई-बहन, जो लिंग दोषी नहीं हैं। अतः प्रस्तुत शोध-विषय किन्नरों के मनुष्य होने का संघर्ष है। लिंग होने या न होने का संघर्ष नहीं। जिस प्रकार स्त्री-पुरुष प्रकृति की रचना हैं उसी प्रकार किन्नर भी प्रकृति की रचना है।



संदर्भ ग्रंथ सूची



संदर्भ ग्रंथ सूची

(क) आधार ग्रंथ

1. पोस्ट बॉक्स नम्बर-203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2019

(ख) सहायक ग्रंथ

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य का साथी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, महाराष्ट्र, द्वितीय संस्करण-1950
2. किशोरीलाल गोस्वामी, हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश
3. नलिन विलोचन शर्मा, आलोचना, वर्ष खण्ड-1
4. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
6. गोविन्द त्रिगुणायत, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भारतीय साहित्य मन्दिर, नई दिल्ली, 1959
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सहचर, नैवेद्य निकेतन, वाराणसी
9. हंस पत्रिका, जनवरी 1999
10. क्षेमचन्द्र सुमन, योगेन्द्र कुमार मल्लिक, साहित्य विवेचन, आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली, 1952
11. डॉ. कृष्ण बल्लभ जोशी, हिन्दी साहित्य शास्त्र की भूमिका
12. बाबूगुलाब राय, काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

13. "The novel is typically a representation of human experience whether liberal or ideal and there fore inevitably a comment upon life."
14. मुंशी प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस
15. एच.बी. लैपरोध, दि आर्ट ऑफ दि नोवलिस्ट, लन्दन, 1921
16. रेणुशाह, फणीश्वरनाथ रेणु का कथा शिल्प
17. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, बनारस
18. डॉ. प्रताप नारायण टण्डन, हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास
19. पारुकान्त देसाई, हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास, शोध प्रबन्ध, हिन्दी विभाग, महाराजा सायजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1978
20. प्रो. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवां सं.—2019
21. डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुद्गल का कथा—साहित्य, विद्या प्रकाशन कानपुर, प्र.सं.—2012
22. प्रियंका नारायण, किन्नर : सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.—2021
23. के. वनजा, क्वीर विमर्श : लेस्बियन, गे, बाई—सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.—2021
24. डॉ. शबाना हबीब, समकालीन साहित्य में तृतीय प्रकृति समुदाय, साहित्य रत्नाकर, कानपुर, प्र.सं.—2021

25. डॉ. पायल लिहारे और डॉ. श्याम मोहन पटेल (संपादक), हिन्दी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श, वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर, प्र.सं.-2020
26. के. वनजा, चित्रा मुद्गल: एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, सं.-2016
27. अंजुदुआ जैमिनी, चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में संघर्ष और संचेतना, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, प्र.सं.-2016
28. सफलता 'सरोज' (संपादिका), किन्नर विमर्श : कल, आज और कल, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2019
29. डॉ. सविता शर्मा, तीसरी ताली और पोस्ट बॉक्स नम्बर 203 नाला सोपारा में अभिव्यक्त किन्नर समाज, विकास प्रकाशन, प्र.सं.-2022 ई.
30. डॉ. जयश्री एस.टी. (संपादक), तीसरी दुनिया का यथार्थ : एक मूल्यांकन, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-2021
31. डॉ. शगुप्ता नियाज़ (संपादक), थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ (चित्रा मुद्गल कृत नाला सोपारा के संदर्भ में), विकास प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय सं.-2019 ई.
32. शील डागा, किन्नर गाथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.-2020



શોધ આલેખ





INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)

DOI : 03.2021-11278686

ISSN : 2582-8568

IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा मैं किन्नर विमर्श

रजनी रानी

(एम.फिल) शोधार्थी

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय,

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

Email: rajniraniugc@gmail.com

DOI No. **03.2021-11278686** DOI Link ::

शोध सारांश :

मानव समाज दो स्तंभों पर खड़ा है स्त्री और पुरुष । जिसमें दोनों के सहारे मानव प्रजाति आगे बढ़ रही है। मानव जाति की आदिम सभ्यता से ही समाज का संपूर्ण विकास इन्हीं दो लिंगों के कारण ही हो रहा है लेकिन हमारे समाज में मानव प्रजाति के इन दो लिंगों के अतिरिक्त एक और लिंग का अस्तित्व है जिसे हमारा समाज किन्नर, तृतीयपंथी, उभयलिंगी, थर्ड जेंडर इत्यादि नामों से संबोधित करता । भारतीय संविधान में किन्नर समुदाय को एक समान नागरिक अधिकार प्राप्त हैं उन्हें सरकार ने तृतीयलिंगी श्रेणी में रखा है। किन्नर बच्चों की नियति तो शारीरिक मानसिक रूप से विकलांग रह जाने वाले बच्चों से भी गयी- गुजरी होती है। निर्दोष होने पर भी बारंबार अपने परिवार से मिलने वाली उपेक्षा और लक्षण से बहुधा किन्नर लोग अंदर ही अंदर टूटते बिखरते रहते हैं । यह वास्तविकता ही है कि किन्नर समुदाय के लोगों को उनके किन्नर होने के कारण ही वह समाज से तिरस्कृत बहिष्कृत हैं।

प्रस्तावना:

वर्तमान समय में भारत ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर किन्नरों एवं समलैंगिकों पर विमर्श होने लगे हैं । विमर्श का एक बड़ा आधार साहित्य के अतिरिक्त सोशल मीडिया रहा है जिसने किन्नर को एक नए अस्तित्व और पहचान के साथ मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है फिर वह चाहे टीवी हो, प्रिंट मीडिया हो, यूट्यूब, डॉक्यूमेंट्री या अन्य कोई संचार माध्यम हो जिसने वर्षों पुराने छिपे यथार्थ को लोगों के सामने रखा है। लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, मानोबी बंदोपाध्याय जैसे किन्नर समुदाय आज अपनी कहानी स्वयं लोगों के सामने रखने लगे हैं जिसके परिणाम स्वरूप लोगों का ध्यान उस वर्ग की ओर आकर्षित हुआ जिसे अब तक समाज से बहिष्कृत और तिरस्कृत किया जाता रहा है। लोगों के आकर्षित होने से एक बड़ा लाभ जो इस वर्ग को पहुंचा वह यह है कि लोगों ने उन्हें

इनके अस्तित्व और पहचान को लेकर बात करनी शुरू की जिसका परिणाम “किन्नर विमर्श” के रूपमें आज हमारे सामने है।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। जब देश में समावेशी विकास की बात की जाती है तो केवल जाति और लिंग को आधार बनाकर दलित पिछड़े और स्त्री के विकास की बात की जाती हैं किंतु किन्नरों की नहीं, जबकि किन्नर समुदाय भी स्पृश्यता और लैंगिक आधार पर अनेक वंचनाओं और प्रवंचनाओं से पीड़ित है। हमारे लोकतांत्रिक देश एवं सभ्य समाज के लिए यह अत्यंत लज्जाजनक है कि एक किन्नर व्यक्ति के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से जितना घृणित व्यवहार किया जाता है उतना शायद मनुष्य किसी पशु से भी ना करता हो। एक किन्नर होने की जो सजा इन्हें मिलती है वह क्रूर ही नहीं बरन क्रूरतम सजा है। इन्हीं कारणों से एक किन्नर मनुष्य संपूर्ण समाज के सामने अपनी मानवीय संभावनाओं और पहचान से मुखातिब नहीं हो पाता। इस क्रूर मजाक के कारण ही किन्नरों का पूरा जीवन सभी पारिवारिक सुख से वंचित रह जाता है जीवन भर खुशी की तलाश में अगर कोई किन्नर जन्म मनाते हैं तो वह इस नारकीय जीवन से छुटकारा पाने के लिए ही मनाते हैं। जिस तरह स्त्री और पुरुष एक समाज में रहते हैं उसी तरह इस दुनिया में किन्नरों का अपना एक समाज है मनुष्य जाति की तरह ही किन्नरों में भी दो प्रकार होते हैं एक किन्न पुरुष और दूसरी किन्न स्त्री। किन्नर जीवन पर आधारित सभी उपन्यास स्त्री केंद्रित है लेकिन पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा उपन्यास पुरुष केंद्रित है।

चित्रा मुदगल जी द्वारा रचित “पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा” वर्ष 2018 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत एक सशक्त एवं प्रसिद्ध उपन्यास है। यह उपन्यास पत्रात्मक शैली में लिखा गया है जिसमें मां और पुत्र के बीच संवाद पत्रों के माध्यम से चलता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र विनोद है जो जननांग दोषी है। इस दोष के कारण ही वह उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक मानवीय संवेदनाओं से ग्रसित रहता है। सत्रह पत्रों के माध्यम से लगभग पाँच महीने यह कथा मानो किन्नर समुदाय की पूरी जीवन गाथा कहती है जिसमें भावुकता भी है, व्यंग्य भी है, व्यथा भी है, अनुमान भी है, प्रश्न भी है इन सभी के माध्यम से उपन्यास विस्तृत आकार लेता है। इस उपन्यास में परिवार एवं समाज द्वारा बहिष्कृत किन्नरों की जीवन की व्यथा कथा है जिन्हें मात्र एक शारीरिक कमी जिनमें उनका कोई दोष नहीं होने के कारण समाज द्वारा अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश कर दिया जाता है। संपूर्ण उपन्यास एक किन्नर बेटे और मां के आपसी पत्र व्यवहार के माध्यम से किन्नरों के दुख दर्द एवं उनके संघर्षपूर्ण जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति है। उपन्यास का शीर्षक अपने में पूरे उपन्यास की संवेदना छिपाए है। उपन्यास में मां वंदना बेन को अपने पुत्र विनोद से पत्राचार के लिए उन्हें अपने घर के पास के पोस्ट ऑफिस से अपना निजी पोस्ट बॉक्स नंबर लेना पड़ता है और उसी पोस्ट बॉक्स नंबर पर आधारित है इस उपन्यास का शीर्षक पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा। इस उपन्यास में लिंग दोषी समाज की समस्या को अत्यंत मानवीय दृष्टि से उठाया गया है।

यह उपन्यास एक मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चे विनोद के जीवन की कहानी है जो जन्म से ही जननांग की विकृति का शिकार है। इस कमी के कारण ही उसे न चाहते हुए भी किन्नर समुदाय की गुरु चंपाबाई के हाथों मासूम बकरी सा सौंप दिया जाता है। वह कहता भी है – “किन्नर जीवन एक अंधा कुआं है इसमें सिर्फ सांप बिच्छू रहते हैं

सांप बिच्छू बनकर पैदा नहीं हुए होंगे बस उन्हें आदमी नहीं रहने दिया” (1) उसके दोनों भाई सामान्य हैं विनोद के पिता की अच्छी चलती किराने की दुकान है और मां वंदना उसकी शारीरिक विकृति के कारण ही उसके प्रति कुछ अधिक मोहविष्ट हैं। कुछ बड़ा होने पर साथ के बच्चों के साथ खेलने पर उसे भी अपनी इस शारीरिक न्यूनता का बोध होता है। एक दिन ऐसे ही बच्चों के साथ खेल कर लौटने के बाद वह मां से पूछता है- “मेरे नुनू क्यों नहीं हैबा” (2) यह सवाल ही इस उपन्यास का केंद्रीय सवाल है जो विनोद के माध्यम से इस उपन्यास के साथ ही पूरी सामाजिक संरचना के आगे अपने भयावह आकार में खड़ा होकर बढ़ता जाता है। किन्नर बच्चों की नियति तो शारीरिक मानसिक रूप से विकलांग रहे जाने वाले बच्चों से भी गयी- गुजरी होती हैं। लोग किन्नरों के साथ अछूतों का सा व्यवहार करते हैं। एक किन्नर व्यक्ति को बचपन से ही प्रेम और सहानुभूति के बदले उपेक्षा, तिरस्कृत, और घृणा ही मिलती हैं- “जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम धड़ का मात्र वहीं निचला हिस्सा भर हो। मस्तिष्क नहीं हो, दिल नहीं हो, धड़कन नहीं हो, आंख नहीं हो, तुम्हारे हाथ पैर नहीं हैं। हैं, हैं, सब वैसा ही है जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने-देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं सोचो” (3)

विस्थापन हर मनुष्य के लिए दुखदाई होता है। किन्नरों के तो जीवन का सत्य ही होता है परिवार से विस्थापन और जीवन भर उनकी याद में तड़पना। व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी का नाम परिवार है। यह कड़ी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार में ही मनुष्य पैदा होता है, पलता है, और बड़ा होता है, परिवार से समाज, समाज से देश और देश से विश्व संचालित है। विनोद गुजराती परिवार से है वह मुंबई में अपने परिवार के साथ रहता है विनोद अपनी मां का दूसरा बेटा है उसके दोनों भाई सामान्य हैं बस विनोद ही है जो असामान्य है। माता-पिता तीनों बच्चों का पालन समान रूप से ही करते हैं। परिवार द्वारा अथक प्रयास करते रहने पर भी अंततः सच्चाई घर के बाहर आ ही जाती हैं। चौदह बरस तक छुपाने की बहुत कोशिशों के बाद भी चंपाबाई और उसके साथी आकर जबरन विनोद को अपने साथ ले जाते हैं। जहां उसे भीषण यंत्रणा में बिरादरी के नियम व कानून सिखाए जाते हैं। इस घटना से विनोद का जीवन बदल जाता है। व्यापक परिवर्तन का मार्ग एक छोटी शुरुआत से होकर ही निकलता है तो पहल घर से ही होनी चाहिए- “जरूरत है सोच बदलने की। संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी, तभी अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें घूरे में नहीं फेंकेंगे। ट्रांसजेंडर के खांचे में नहीं ढकेलेंगे। (4)

शिक्षा वह दीपक है रोशनी से हम अपने जीवन व समाज में उजाला कर सकते हैं। इस उपन्यास का पात्र विनोद किन्नर होते हुए भी आठवीं कक्षा का अंग्रेजी भाषा का मेधावी और कुशाग्र बुद्धि का छात्र है। किन्नर समुदाय के प्रत्येक किन्नर को भी वह शिक्षित करने का प्रयास करता है। उसे किन्नरों की तरह ताली पीटना, मेकअप करना, चटक मटक कर चलना अच्छा नहीं लगता। अपने पत्र में वह कहता भी है- “उनकेलात, घूंसे, थप्पड़ और कानों में गर्म तेल से टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अक्षील गालियों के बावजूद न मैं मटक मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ, न सलमे सितारे वाली साड़ियां लपेट लिपस्टिक लगा कानों में बूंदे लटकाने को” (5) वह पढ़ लिख कर अपनी इच्छा अनुसार सामान्य जीवन जीना चाहता है। उसकी शिक्षा और उसकी संस्कार उसे अपने पैरों

पर खड़ा हो उसे स्वाभिमान की जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करते हैं, सक्षम बनाते हैं। किन्नरों की बिरादरी में रहते हुए भी शिक्षा के प्रति उसकी उत्कट कामना उसे आगे चलकर शिक्षकों की तरह नौकरी मुहैया करती है। विनोद पूनम जोशी से कहता भी है – “पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है, कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया हमारे लिए” (6)

इस उपन्यास में किन्नरों पर होने वाले यौन अत्याचारों और बलात्कारों को भी शामिल करने का प्रयास किया गया है। किन्नरों के साथ होने वाले इस तरह की यौन हिंसा पर प्रायः पुलिस भी कोई कार्यवाही नहीं करती दिखती। वास्तव में तो किन्नर देह ही पुलिस के लिए भी मन बहलाव का खिलौना मात्र होती है। किन्नरों के साथ होने वाले बलात्कार और यौन हिंसा की घटना में पूनम जोशी के साथ स्थानीय विधायक जी का भतीजा बिल्लू और उसके दोस्त नशे में आकर चाकू-कांटे से उसके छेद का ऑपरेशन करके उसके साथ बारी-बारी से बलात्कार करते हैं। इंसानियत की सारी हदें पार करने पर उतर आते हैं। उत्तर प्रदेश के हाथरस बलात्कार कांड से कम भयावह नहीं है हिजड़ा पूनम के साथ की गई यौन हिंसा। “विधायक जी के बिल्लू भतीजे ने छेद का ऑपरेशन शुरू कर दिया।

चाकू-कांटा मुस्तैद हो आए।

दीमक का बाम्बियां बनाता – रिश्ता खून फर्श पर आड़े – तिरछे बहने लगा।” (7)

पूनम के साथ जब यह घटना घटित होती है तो उस समय विनोद चंडीगढ़ में होता है। दिल्ली आने पर विनोद को इस घटना के बारे में जब पता चलता है तो वह क्रोध व आक्रोश से भर जाता है। साथ ही वह अपनी मां के बीमारी की सूचना से दुखी हैं। वह पूनम को न्याय दिलाने के लिए अपराधियों को सजा दिलाना चाहता है परंतु पूनम उसे अपनी मां के पास जाने के लिए विवश करती हैं। विधायक जी विनोद को मुंबई जाने की सलाह देते हुए फ्लाइट की टिकट करा देते हैं पर वह मुंबई नहीं पहुंच पाता है। इसका जिक्र लेखिका ने समाचार दो में इस प्रकार स्पष्ट किया है – “मुंबई 27 दिसंबर। कुर्ला। कलीना कॉन्प्लेक्स से लगी हुई मिठी नदी में पुलिस ने एक किन्नर की फूली लाश बरामद की है” (8) समाचार एक में विनोद की मां की मृत्यु की सूचना दी जाती है जो अपनी भूल को क्षमा कर विनोद से घर आने की विनती करती हैं। (9)

किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए विनोद प्रयासरत है एक राजनीतिक पार्टी का हिस्सा बनने के बाद वह उस मंच का उपयोग किन्नरों के बेहतर भविष्य के लिए करता है। “आरक्षण निदान नहीं है आत्मचेतना बुनियादी अधिकारों की मांग का पहला पायदान है।” (10) किन्नरों को जागरूक करते हुए तथा समाज के लोगों को चेतावनी देते हुए वह कहता है – “किन्नरों की थर्ड के नीचे लिंग न सही, धड़के ऊपर मस्तिष्क भी नहीं है, यह कैसे सोच लिया आपने?” (11) यह वक्तव्य दर्शाता है कि किन्नर भी हमारी तरह इंसान हैं उनके अंदर भी भावनाएं हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने किन्नरों के साथ पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में होने वाले अन्याय का यथार्थ मार्मिकता से अंकन किया है। विधायक की किन्नरों की समस्याओं को जीत का हत्या समझ उसे राजनीतिक मुद्दा बनाकर विनोद को किन्नर समुदाय के लिए आरक्षण की मांग उठाने के लिए उकसाते हैं किंतु विनोद आरक्षण पर बात न उठाकर किन्नरों के स्वाभिमान को जगाने तथा उनके अधिकारों एवं उनकी घर वापसी की बात पर जोर डालता है। उसे

किन्नरों के लिए आरक्षण नहीं बल्कि समाज की सहानुभूति और मनुष्य होने का अधिकार चाहिए। उसका मानना है कि उन्हें वह स्थान दिया जाए “जहाँ सरकारने अनुसूचित जाति को रखा है, पिछड़ा वर्ग को रखा है, विकलांग को रखा है और बहुतों को रखा है। लिंगदोषी सभी लिंग से स्त्री- पुरुष नहीं है तो क्या मनुष्य नहीं है ? किन्नरों का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने का संघर्ष है।” (12) उन्हें अलग मानना अमानवीय है।

इस प्रकार यह उपन्यास विभिन्न आयामों को छूता है। इस उपन्यास में किन्नरों से जुड़ी तमाम समस्याएं जैसे उनकी यौन समस्या, समाज का किन्नरों के प्रति रवैया, शिक्षा की समस्या, स्वयं किन्नरों की हीन भावना आदि को लेखिका उपन्यास में दिखाती है। यह उपन्यास निश्चित तौर पर हिंदी उपन्यास जगत में अपना अलग वजूद कायम करने में सफल हुआ है। आवश्यकता है समाज में व्यापक परिवर्तन लाने की, पारंपरिक सोच से मुक्त होने की। यह उपन्यास किन्नर के जीवन को एक नई दृष्टि से समझने और जानने के साथ-साथ उनके जीवन को संवारने के लिए बेहतर विकल्प की आशा और विश्वास से भरा हुआ अनूठा उपन्यास है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा, चित्रा मुदग, पृष्ठ संख्या 11, संस्करण 2018, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. वही, पृष्ठ संख्या 13
3. वही, पृष्ठ संख्या 50
4. वही, पृष्ठ संख्या 112
5. वही, पृष्ठ संख्या 9
6. वही, पृष्ठ संख्या 110
7. वही, पृष्ठ संख्या 204
8. वही, पृष्ठ संख्या 224
9. वही, पृष्ठ संख्या 223
10. वही, पृष्ठ संख्या 187
11. वही, पृष्ठ संख्या 193
12. वही, पृष्ठ संख्या 195

अन्य सहायक ग्रंथ -

1. थर्ड जेंडर विमर्श, सम्पादक शरद सिंह, संस्करण 2019, भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली।
2. थर्ड जेंडर और साहित्य, सम्पादक एम. फीरोज खान, संस्करण 2018, विकास प्रकाशन, कानपुर।
3. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श, मधु खराटे, संस्करण 2018, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
4. हिंदी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, संपादक विजेंद्र प्रताप सिंह, संस्करण 2017, अमन प्रकाशन, कानपुर।



परिशिष्ट



Document Information

Analyzed document	Final Thesis (1).pdf (D133437015)
Submitted	2022-04-12T11:24:00.0000000
Submitted by	O. P. Saini
Submitter email	gbl.bbau@gmail.com
Similarity	1%
Analysis address	gbl.bbau.bbau@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: https://www.researchgate.net/publication/287210055_Vimarshmulak_Vaicharik_Manthan_Kee_Parinati_Surender_Verma_Ka_Mujhe_Chand_chahiya Fetched: 2020-03-08T19:36:36.7570000		3
W	URL: http://www.ijcms2015.co/file/2018-Vol-III-Issue-I/AIJRA-VOL-III-ISSUE-I-31.pdf Fetched: 2021-07-23T09:29:53.2230000		1
W	URL: https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/jspui/bitstream/123456789/9234/1/synopsis.pdf Fetched: 2021-09-30T12:34:25.1330000		2
W	URL: https://www.uok.ac.in/notifications/(8)%20Satya%20Prakash.pdf Fetched: 2019-09-27T09:22:50.6800000		4
W	URL: http://www.edudel.nic.in/welcome_folder/inclusive_education/16a.pdf Fetched: 2021-12-27T08:00:14.1870000		1
W	URL: https://www.hindijournal.com/download/111/2-6-19-233.pdf Fetched: 2022-04-12T11:24:29.2700000		1
W	URL: http://newhorizonsjournal.com/pdf/nh/NewHorizons2020.pdf Fetched: 2022-04-12T11:24:32.1600000		1



INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)

Certificate of Publication

The Editorial Board of International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies (ISSN : 2582-8568), Impact Factor : 5.71 (SJIF 2021) is hereby awarding this Certificate to

Rajni Rani

is recognition of the publication of the paper entitled

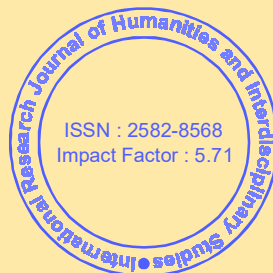
“Post Box Number 203 Nala Sopara me Kinnar Vimarsh”

Published in Volume 2, Issue 7, July - 2021 (www.irjhis.com)

DOI Link : <https://doi-ds.org/doilink/07.2021-14551199/IRJHIS2107009>

Registration ID : 20271

Published Paper ID : IRJHIS2107009



Dr. R. G. Pawar

Editor-in-Chief
IRJHIS



अन्तरराष्ट्रीय वेबिनार



साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन द्वारा

दिनांक ०९ फरवरी २०२२ को

राष्ट्र निर्माण में साहित्य की भूमिका

विषय पर आयोजित अन्तरराष्ट्रीय वेबिनार में

प्रमाण-पत्र

रजनी रानी

शोधार्थिनी, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

ने उपस्थित रहकर सहभागिता की।

हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

मनोज कुमार
संस्थापक एवं रा. अध्यक्ष
साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन

सुमन रानी
रा. सचिव
साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन

संजय कुमार
रा. उपसचिव
साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन



Reg. No. U85300DL2020NPL361006

साहित्य संचय शोध संवाद फाउंडेशन (रजि.)

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, लोनिथा विहार, दिल्ली-110090 ई-मेल : ssfoundation20@gmail.com, मो. 9871418244, 9136175560